माँ

ॐ

पूजाकर्म प्रवेशिका

।। वेद माता गायत्री ।।

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

संपादक :- पं. शिवकुमार भारद्वाज

'पूजा कर्म प्रवेशिका' का विमोचन करते हुए – श्रद्धेय कुलपति डॉ. श्री मिथिलाप्रसादजी त्रिपाठी (महर्षि पाणिनी संस्कृत वैदिक विश्वविद्यालय उज्जैन, म.प्र.)
पं. श्री कौशलकिशोरजी पाण्डेय (संयुक्त निदेशक – म.प्र. शिक्षा विभाग) एवं
शासकीय संस्कृत महाविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. श्री विनायकजी पाण्डेय आदि विद्वद्जन...

वर्णन पेज नं. 41 पर

षोडशमातृकाचक्रम्

वर्णन पेज नं. 36 पर

आत्मनः कुलदेवता 16	लोक मातरः 12	देवसेना 8	मेधा 4
तुष्टि : 15	मातरः 11	जया 7	शची 3
पुष्टिः 14	स्वाहा 10	विजया 6	पद्मा 2
धृतिः 13	स्वधा 9	सावित्री 5	गौरी गणेश 1

अंकों के अनुसार देवताओं का आह्वान करें।

चौसठ वास्तु मण्डल चक्रम्

(देव प्रतिष्ठा के लिए) पेज नं. 53 एवं 96 देखें

पूर्व

ईशानम् — अग्निम् — नैऋतिम् — वायुम्

उत्तर — दक्षिण

पश्चिम

61 62 54 55 / 50 / 46 47

1 / 32							8 / 9
	2 / 31	3	4	5	6	7 / 10	
	30	34 / 33	35		36 / 37	11	
	29	44	45		38	12	
	28					13	
	27	43 / 42	41		39 / 40	14	
	26 / 23	22	21	20	19	18 / 15	
25 / 24							16 / 17

60 53 — 51 56

49 48 / 52 / 59 58 57
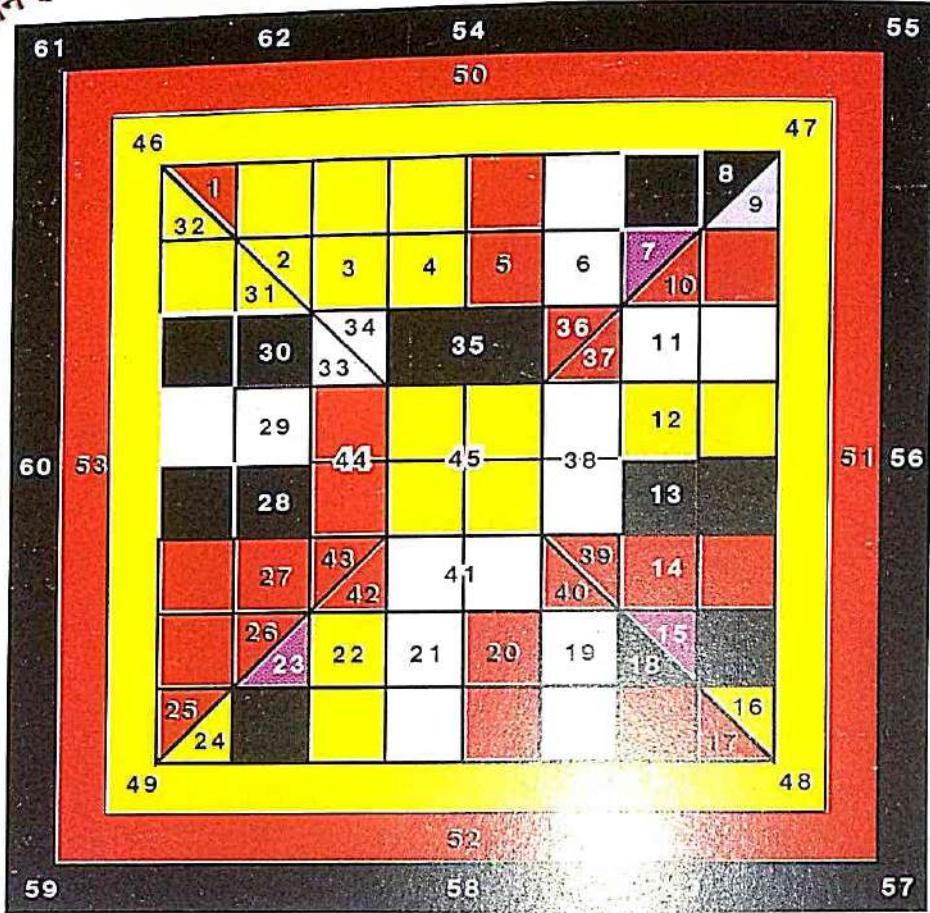
इक्यासी कोष्ठात्मक गृहवास्तु मण्डल

(गृहवास्तु के लिए) पेज नं. 58 एवं 96 देखें

75 76 68 69 / 61 62 64 54 55 / 46 50 47

1	2	3	4	5	6	7	8	9
32	33						34	10
31		44		37		38		11
30								12
29		43		45		39		13
28								14
27		42		41		40		15
26	36						35	16
25	24	23	22	21	20	19	18	17

74 67 53 / 60 — 51 65 70 / 56

49 52 48 / 59 66 58 63 57 / 73 72 77 71
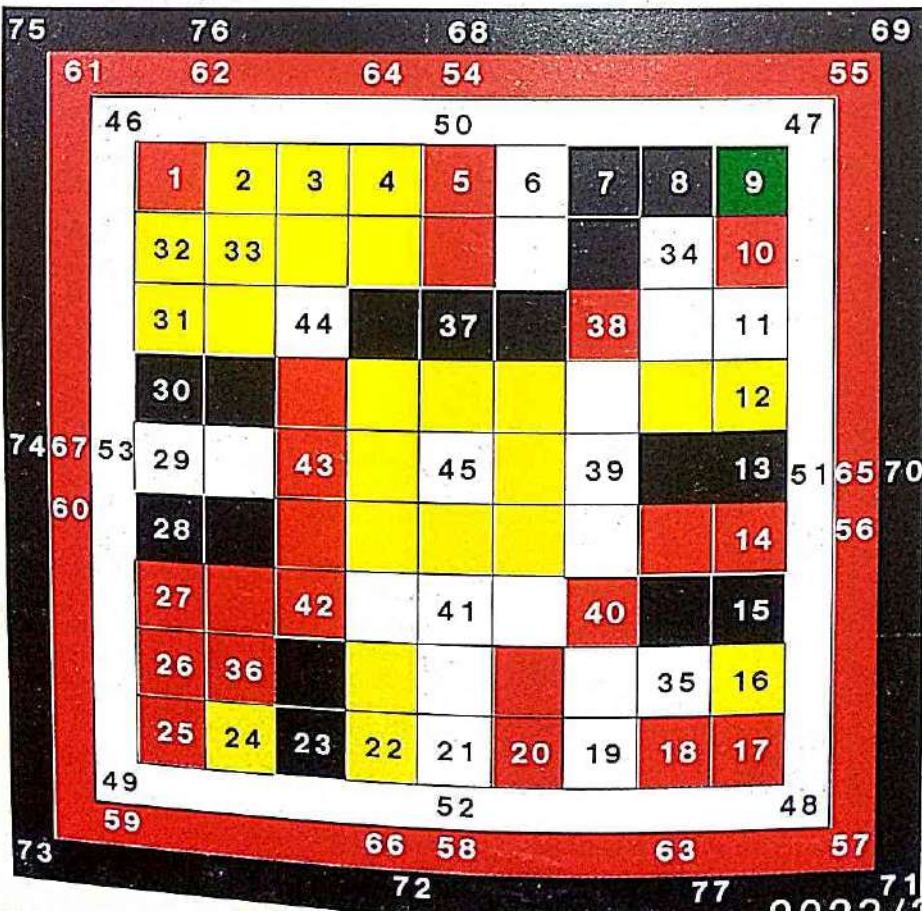
अंकों के अनुसार देवताओं का आह्वान करें।

चौसठ योगिनीमण्डल चक्रम्

वर्णन पेज नं. 74 एवं 98 पर

अंकों के अनुसार देवताओं का आह्वान करें।

क्षेत्रपाल म[illegible] चक्रम्

वर्णन पेज नं. 77 एवं पेज नं. 100 पर

सर्वतोभद्रमण्डल चक्रम्
पूर्व
वर्णन पेज नं. 79 एवं 101 पर
उत्तर
दक्षिण
नवग्रह मण्डल चक्रम्
पूर्व
वर्णन पेज नं. 85 एवं 91 पर
उत्तर
दक्षिण
पश्चिम
अंकों के अनुसार देवताओं का आह्वान करें।
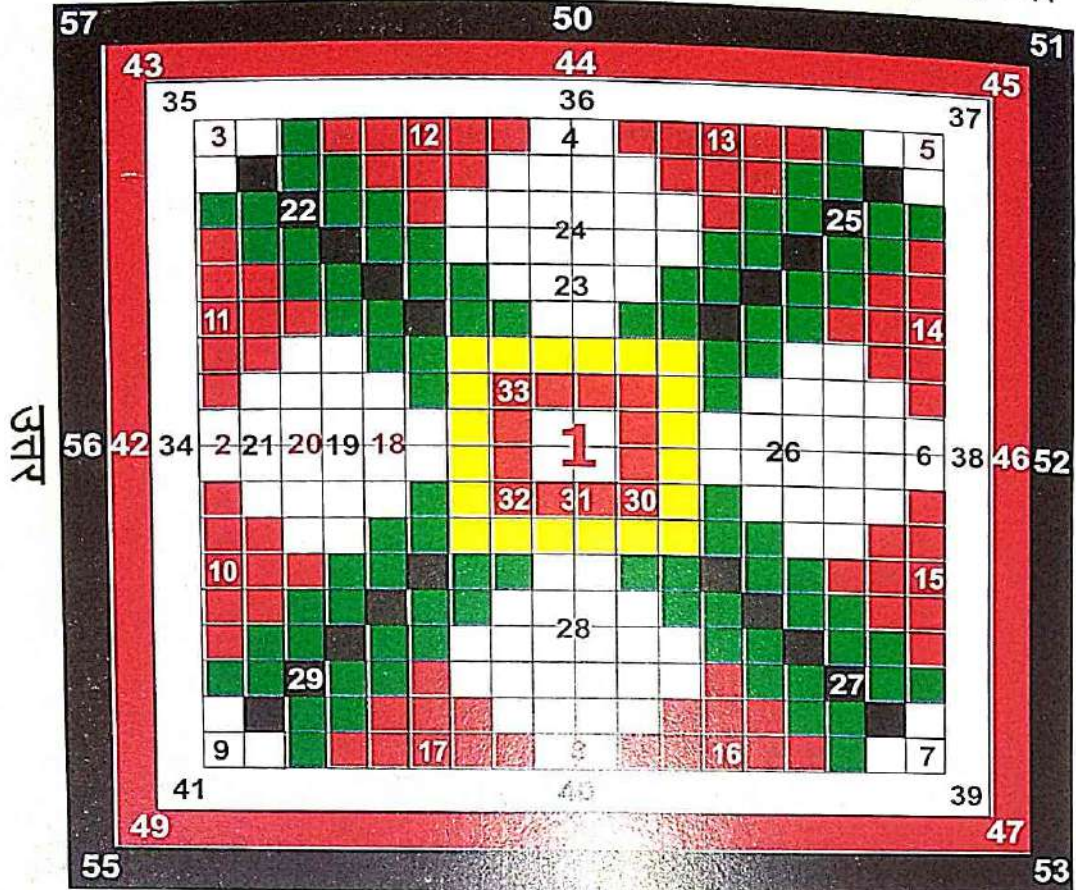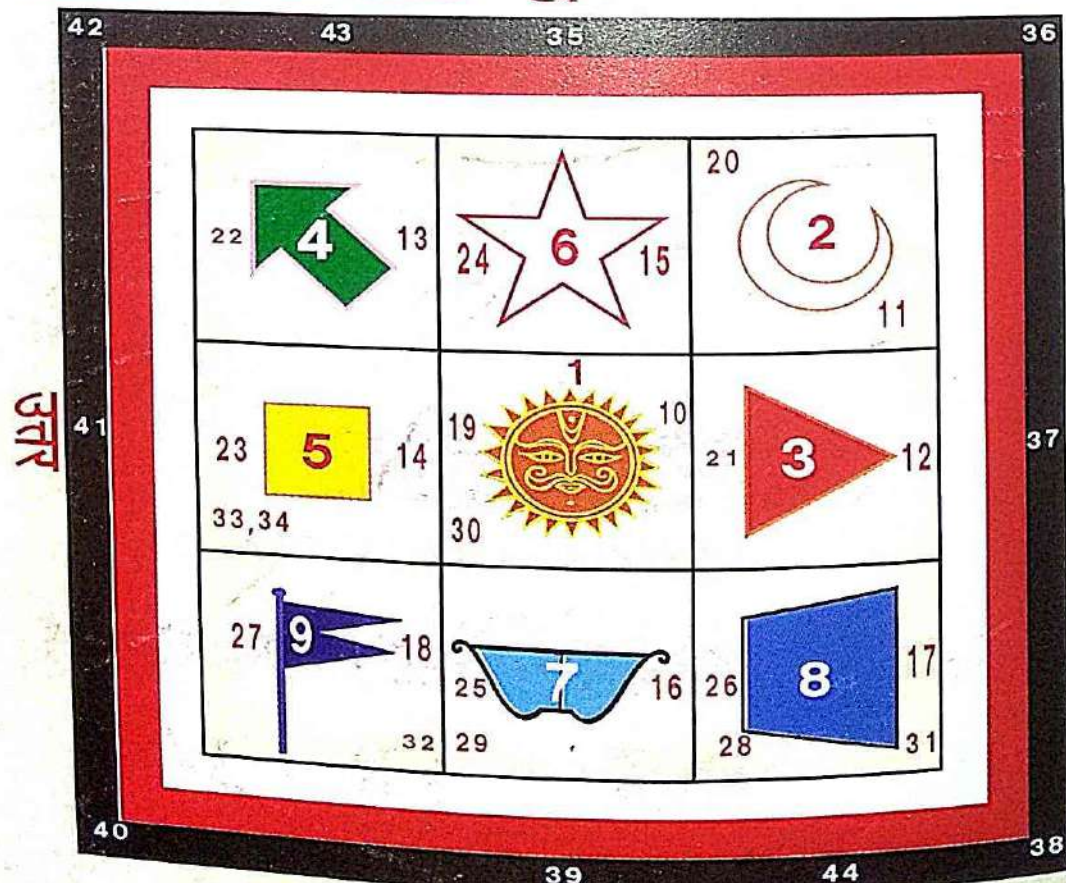
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

माँ अहिल्या की नगरी इन्दौर
से प्रकाशित

卐 पूजा कर्म प्रवेशिका 卐

सरल पूजन–हवन पद्धति का अनुपम संग्रह

पठतु
संस्कृतम्

वदतु
संस्कृतम्

– संकलनकर्ता–

पं. शिवकुमार भारद्वाज

एम. ए. संस्कृत, बी.एड.

संशोधित संस्करण

– प्राप्ति स्थल –

माँ भद्रकाली ज्योतिष संस्थान

मोबाईल: 9644 108 108

ॐ जय देवि जगन्मातर्जगदानन्दकारिणि। प्रसीद मम कल्याणि भद्रकाल्यै नमो नमः।।

प्रकाशक :

माँ भद्रकाली ज्योतिष संस्थान
1/1, आलापुरा, बागड़ी कॉम्प्लेक्स,
जूनी इन्दौर, इन्दौर-452 007 (म.प्र.)
मोबाइल : **98263 61811, 9644 108 108**

पंचम संस्करण – 2022-2

सहयोग राशि : 130/-

मुद्रक : श्री पार्श्वनाथ प्रिंटिंग प्रेस
इन्दौर (म.प्र.)

|| ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ||

"वर्णानां ब्राह्मणो गुरुः"

वैशाखस्य सिते पक्षे तृतीयायां पुनर्वसौ । निशायाः प्रथमे यामे रामाख्यः समये हरिः ॥
स्वोच्चगैः षड्ग्रहैर्युक्ते मिथुने राहुसंस्थिते । रेणुकायास्तु यो गर्भादवतीर्णो विभुः स्वयम् ॥

ॐ ब्राह्मणोऽस्ति मनुष्याणामादित्यश्चैव तेजसाम् ।
शिरोऽपि सर्वगात्राणां व्रतानां सत्यमुत्तमम् ।।

ब्राह्मण को युद्ध करने का अधिकार नहीं है। यदि उसे कभी युद्ध करना भी पड़े तो मात्र धर्म की रक्षा करने के लिए ही युद्ध करना चाहिए।

।। आज्ञा गुरूणां ह्यविचारणीया ।।
।। हिन्दुधर्म के सिद्ध गुरु - आदिशंकराचार्य है ।।
।। समस्त मानव जाति का भला करना धर्म का स्वभाव है ।।

देवाधीनं जगत्सर्वं मन्त्राधीनाश्च देवताः । ते मन्त्रा ब्राह्मणाधीनास्तस्माद् ब्राह्मण देवताः ।।

महेश्वर सूत्राणि :

(1) अइउण्
(2) ऋलृक्
(3) एओङ्
(4) ऐऔच्
(5) हयवरट्
(6) लण्
(7) ञमङणनम्
(8) झभञ्
(9) घढधष्
(10) जबगडदश्
(11) खफछठथचटतव्
(12) कपय्
(13) शषसर्
(14) हल् ।
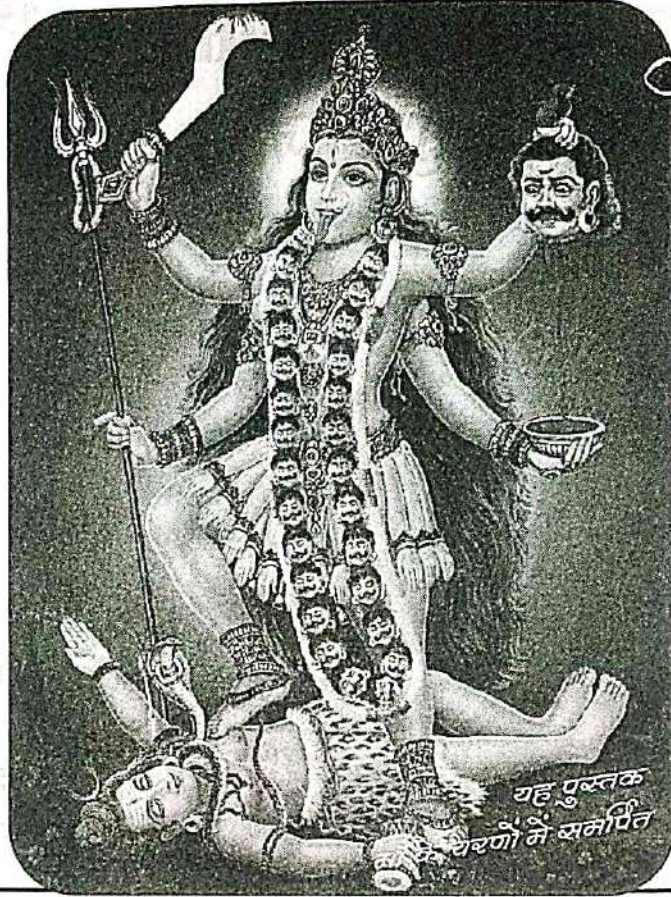
ॐ नृत्या वसाने नटराज राजो ननाद ढक्कां नवपंच वारम्।
उद्धर्तुं कामः सनकादिसिद्धानेतद् विमर्शे शिवसूत्रजालम्॥

भैरवजी का मंत्रः

॥ ॐ ह्रीं बं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरू कुरू बटुकाय ह्रीं ॐ ॥

॥ ॐ ॥

卐 # माँ नर्मदा ब्राह्मण मण्डल 卐

इन्दौर (म.प्र.)

॥ प्रशस्ति पत्रम् ॥

नर्मदोत्तुङ्ग तरङ्ग भङ्ग प्रक्षालित ''नरसिंहपुर'' मण्डलान्तर्गते ''करेली'' नगरे आविर्भावोऽभूत्।

सनेन तपसा आढ्यः पूर्णः सनाढ्यब्राह्मणकुलभूषणः, निसर्गसुन्दरसरलसदयहृदयः, वाकचातुर्यचतुरः, गोब्राह्मण सत्कुलसमुपासकः ''शिवकुमार शर्म्मा'' पूजा कर्म प्रवेशिकाऽभिधानं ग्रन्थं निर्माय महोपकारं कृतवान् जनानाम्।

एतदर्थं प्रस्तूयते प्रशस्तिपत्रमिदम्।

अनयाभिलाषया सह यत् पुनश्चाभिवृद्धिर्भवेदितिशम्।

दिवसाङ्काः
30/03/2016
ईशवीयवत्सरः

शुभेच्छुकाः
माँ नर्मदा ब्राह्मण मण्डल
हंसदास मठ, एरोडम रोड़, इन्दौर (म.प्र)

।। श्री गणेशाय नमः।।

।। प्राक्कथन ।।

।। योगः कर्मसु कौशलम्।।

भारतीय सनातन वाङ्मय के प्राचीनतम ग्रन्थ हैं – ऋक्, यजुः, साम और अथर्व वेद। इन वैदिक संहिताओं के साथ ब्राह्मण ग्रन्थ भी हैं। इनमें यज्ञों का सविस्तार वर्णन है। ब्राह्मणों के अन्तिम भाग आरण्यकों में स्वतन्त्र रूप से दार्शनिक प्रश्नों पर विचार किया गया है। उपनिषदों में ज्ञानकाण्ड का निरूपण है। वेदांगों के रूप में सूत्र- साहित्य का विस्तार हुआ,जिसके चार विभाग हैं- (1) श्रौतसूत्र में यज्ञों का विधान तथा वर्गीकरण किया गया है। (2) गृह्यसूत्र में गृहस्थ से सम्बन्ध रखने वाले सोलह संस्कारों तथा कर्मकाण्ड का वर्णन है। (3) धर्मसूत्र में सामाजिक, राजनैतिक एवं वैधानिक व्यवस्था दी गयी है। भारतीय इतिहास में कानूनी साहित्य का श्रीगणेश यहीं से होता है। धर्मसूत्र का विस्तार स्मृतियों के रूप में हुआ है। (4) शुल्बसूत्र में रेखिकीय गणित वर्णित व यज्ञवेदी के निर्माण और नाप आदि का वर्णन है। वेदांग छः हैं- शिक्षा, कल्प(कर्मकाण्ड), निरुक्त, व्याकरण, छन्द और ज्योतिष। ज्योतिष को वेदपुरुष का नेत्र माना है। इसके ज्ञान के बिना वैदिक कार्य अन्धकारमय हैं।

वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः कालानुपूर्वा विहिताश्च यज्ञाः।
तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो ज्योतिषं वेद स वेद सर्वम्।।

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात् सांगमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।।

भारतीय संस्कृति अति विलक्षण है। इसके सभी कर्मविधान पूर्णतः वैज्ञानिक हैं और इनका एक ही संकल्प मानव का उपकार करना है। मनुष्य का सरलता से व शीघ्रता से कल्याण कैसे हो – इसका जितना सुन्दर विचार भारतीय संस्कृति में किया गया है, उतना अन्यत्र नहीं मिलता। जन्म के पूर्व से लेकर मृत्यु के बाद तक ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड मानव के जीवन पर गहरा प्रभाव डालता है। मनुष्य जो जो क्रियाएँ करता है,उन सबको हमारे दूरदर्शी ऋषि-मुनियों ने प्रमाणिक ढंग से सुनियोजित एवं सुसंस्कृत किया है और उन सबका उद्देश्य परम श्रेय की प्राप्ति हैं।

शास्त्र की मर्यादा के अनुसार चलने से अन्तः करण शुद्ध होता है और अन्तःकरण में ही कल्याण की इच्छा जाग्रत होती है। इसी भावना से सरल संग्रह **"पूजा कर्म प्रवेशिका"** को विद्वद्जनों के समक्ष समर्पित करते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है।

मैं ग्रामीण परिवेश से शहर की ओर नवीन संस्कृति को तलाशने के लिए अग्रसर हुआ। मेरे माता-पिता की हार्दिक इच्छा थी, मैं संस्कृत के क्षेत्र में नवीन मापदण्ड स्थापित करूँ, और इसी आशा से उन्होंने मुझे वेद वेदांग अनुरूप गुरुकुल श्री ओंकारद्विज संस्कृत पाठशाला इन्दौर में प्रवेश दिलाया। मन की जिज्ञासा वृद्धजनों का आशीर्वाद तथा गुरुजनों की कृपा से मैनें संस्कृत महाविद्यालय से स्नातकोत्तर की यात्रा पूर्ण करके इस दुर्लभ ज्ञानकर्म को सुलभ बनाने का प्रयत्न किया है।

मेरे जीवन के पूज्य गुरुजन आचार्य श्री राजारामजी पाठक, डॉ.विनायकजी पाण्डेय एवं श्रद्धेय कुलपति डॉ.मिथिला प्रसादजी त्रिपाठी, पं.श्री उमाशंकर जी जोशी एवं पं.श्री कल्याणदत्त जी शास्त्री के द्वारा समय-समय पर मुझे अपेक्षित मार्गदर्शन देकर कार्य की निर्विघ्न समाप्ति में पूर्ण सहयोग किया हैं। इनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

इस संग्रह के प्रेरणा स्त्रोत मेरे वरिष्ठ पं. श्री ब्रह्मानन्दजी शर्मा (करेली), पं.श्री राकेशजी भटेले एवं मित्र रहे हैं। इस अवसर पर मैं अपने मित्रों तथा पंडित महासभा, इन्दौर को भी साधुवाद देना चाहूँगा, क्योंकि उन्होंने भी अनेक प्रकार से इस महान कार्य में मुझे पूर्ण सहयोग प्रदान किया हैं।

जिनके आशीर्वाद से यह स्वप्न साकार हो सका, ऐसे मेरे प्रातः स्मरणीय पूज्य पिताजी स्व. श्री शीतलप्रसादजी भारद्वाज, पूज्यनीया माताजी श्रीमती ज्ञानवती भारद्वाज के श्रीचरणों में नतमस्तक रहते हुए आभार ज्ञापन की धृष्टता नहीं कर सकता, क्योंकि प्रस्तुत ग्रन्थ कृति उनके ही आशीषों का फल है।

पूजाकर्मप्रवेशिका के संग्रह में मैंने जिन ग्रन्थों का सहयोग लिया है। मैं उन ग्रन्थों एवं विद्वानों का सदैव ऋणी रहूंगा और साथ ही इस ग्रन्थ में कोई त्रुटि हुई हो तो मुझे क्षमा करते हुए सूचित करने की कृपा करें, जिससे कि मैं आगामी संस्करण में उन त्रुटियों को नष्ट करने की चेष्टा कर सकूँ।

अन्त में इस ग्रन्थ के समस्त प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सहयोगियों का आभार व्यक्त करते हुए, प्रस्तुत कृति **"पूजा कर्म प्रवेशिका"** मेरे गुरुजनों एवं भूदेवों के करकमलों में सादर समर्पित करता हूँ।

आपरितोषाद्विदुषां न साधु मन्ये प्रयोग विज्ञानम्।
बलवदपि शिक्षितानामात्मन्य प्रत्ययं चेतः।।

विनयावनत्

S. Bhardwaj

माघ शुक्ल पक्ष पञ्चमी
सम्वत् - 2071

पण्डित शिवकुमार भारद्वाज
ज्योतिर्विद्

शुभाशंसनम्

वैदिकवाङ्मये कर्मकाण्ड-ज्ञानकाण्ड-उपासनाकाण्डेषु कर्मकाण्डं प्रथमं स्थानं लभते बृहदाकारत्वात्। कर्मणैव पुरुषार्थचतुष्टयं प्राप्नुवन्ति नरः। तत्प्राप्त्यर्थं कर्मकाण्डमेव समीचीनं सुलभं सरलञ्च साधनम्। तद्विधिसम्पादनार्थं "पूजा कर्म प्रवेशिका"ख्यः ग्रन्थः सङ्कलितः कर्मकाण्डिना ज्योतिर्विदा पं॰ शिवकुमारभारद्वाजेन।

ग्रन्थानेन कर्म्मकाण्डक्षेत्रे कर्म्मकर्तॄणां बालपुरोहितानां विदुषाञ्च महोपकारो भविष्यतीति मे मनीषा।

शिष्याय वितरामि शुभाशिषः।

पाठकोपाह्व॰ राजारामः
व्याकरणाचार्यः

महती प्रसन्नतायाः विषयोऽयं श्री शिवकुमारेण कर्मकाण्ड विदुषामुपयोगी अति सरल भाषायां "पूजाकर्मप्रवेशिका" नामा यो ग्रन्थो विरचितस्तस्यावलोकनेन मे महासन्तोषो जातः। वेद पुराणोक्त मन्त्राणां विधीनां च संकलनम् अत्युत्तम प्रकारेण अनेन कृतं कर्मकाण्ड विषये भूदेवतां मार्गे यथाऽभिरुचि भवेत्तथा ग्रन्थकारेण यः प्रयत्नः कृतोऽस्ति तेन स महतीं प्रशंसामर्हति तस्योद्देश्यः सफलोभूयात् इति कामयामहे।

सर्वेषां शुभेच्छुकः-
पं. लखन पाठकः
एम.ए संस्कृत (प्राच्य)
संस्कृताध्यापकः श्री ओंकारद्विज संस्कृत विद्यालयः इन्दौरम्

विना दीक्षां न मोक्षः स्यात् तदुक्तं शिवशासने। सा च न स्याद्विनाऽऽचार्यमित्याचार्य परम्परा।
तस्मात् सर्व प्रयत्नेन गुरुणा दीक्षितो भवेत्।

卐 अनुक्रमणिका 卐

संलग्न : पुस्तिका के आरंभ में – रंगीन मण्डल चक्रम्

राष्ट्र-कल्याण का मांगलिक संदेश

ॐ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ।।

हिन्दी अनुवाद -

भारतवर्ष हमारा प्यारा, अखिल विश्व से न्यारा;
सब साधन से रहे समुन्नत, भगवन्! देश हमारा।

हों ब्राह्मण विद्वान् राष्ट्र में ब्रह्मतेज-व्रत-धारी,
महारथी हों शूर धनुर्धर क्षत्रिय लक्ष्य-प्रहारी।
गौएँ भी अति मधुर दुग्ध की रहें बहाती धारा।।
सब साधन से रहे समुन्नत, भगवन्! देश हमारा।। 1।।

भारत में बलवान् वृषभ हों, बोझ उठायें भारी;
अश्व आशुगामी हों, दुर्गम पथ में विचरणकारी।
जिनकी गति अवलोक लजाकर हो समीर भी हारा।।
सब साधन से रहे समुन्नत, भगवन्! देश हमारा।। 2।।

महिलाएँ हों सती सुन्दरी सद्गुणवती सयानी,
रथारूढ भारत-वीरों की करें विजय-अगवानी।
जिनकी गुण-गाथा से गुंजित दिग्-दिगन्त हो सारा।।
सब साधन से रहे समुन्नत, भगवन्! देश हमारा।। 3।।

यज्ञ-निरत भारत के सुत हों, शूर सुकृत-अवतारी,
युवक यहाँ के सभ्य सुशिक्षित सौम्य सरल सुविचारी,
जो होंगे इस धन्य राष्ट्र का भावी सुदृढ़ सहारा।।
सब साधन से रहे समुन्नत, भगवन्! देश हमारा।। 4।।

समय-समय पर आवश्यकतावश रस घन बरसाये,
अन्नौषध में लगें प्रचुर फल और स्वयं पक जाये।
योग हमारा, क्षेम हमारा स्वतः सिद्ध हो सारा।।
सब साधन से रहे समुन्नत, भगवन्! देश हमारा।। 5।।

देवकर्म में विचारणीय तथ्य

- सूर्य, गणेश, दुर्गा, शिव, एवं विष्णु यह पञ्चदेव कहलाते है। इनकी पूजा घर में नित्य होना चाहिए । इससे धन, लक्ष्मी और सुख प्राप्त होता है।
- घर में दो शिवलिंग, तीन गणेश, दो शंख, दो सूर्य-प्रतिमा, तीन देवी प्रतिमा, दो गोमती चक्र और दो शालग्राम का पूजन करने से गृह स्वामी को अशान्ति प्राप्त होती है।
- पूजन हमेशा पूर्व या उत्तर मुख होकर करनी चाहिए। आचमन करके जूठे हाथ सिर के पृष्ठ भाग में कदापि न पोछें, इस भाग में अति महत्त्वपूर्ण कोशिकाए होती हैं।
- स्त्रियों के बाये हाथ में ही रक्षा सूत्र बाधने के शास्त्रीय विधान है।
- सभी पूजनकर्मों में पत्नी को पति के दक्षिण(दाहिने ओर)में बैठने का विधान है किन्तु अभिषेक और विप्र पादप्रक्षालन तथा सिन्दूरदान के समय वामभाग में अर्धांगिनी के बैठने का विधान शास्त्र सम्मत है।
- दीपक को दीपक से जलाने से मनुष्य दरिद्र और रोगी होता है। देवताओं की प्रसन्नता के लिए प्रज्वलित दीपक को बुझना नहीं चाहिए।
- आरती करने वालों को पहले चरणो की चार बार ,नाभि की दो बार एवं मुख की एक बार और समस्त अंगों की सात बार आरती करनी चाहिए।
- भगवान् शंकर को कुन्द, श्रीविष्णु को धतूरा, देवी को आक व मदार और सूर्य को तगर का पुष्प नहीं चढ़ाना चाहिए।
- श्रीविष्णुजी को चावल, गणेशजी और भैरवजी को तुलसी, दुर्गाजी को दूर्वा और सूर्यदेव को विल्वपत्र न चढ़ाये।
- तुलसीपत्र को बिना स्नान के नहीं लेना चाहिए, जो लोग बिना स्नान के तोड़ते है, उसे भगवान स्वीकार नहीं करते हैं। रविवार, एकादशी, द्वादशी, संक्रान्ति संध्याकाल एवं रात्रि में तुलसीपत्र नहीं तोड़ना चाहिए।
- घर में नित्य घी का दीपक और कपूर जलाने से धनात्मक उर्जा व सुख समृद्धि की वृद्धि होती हैं।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार सोने की दिशा पूर्व या दक्षिण श्रेष्ठ है।
- मननात् त्रासते इति मन्त्रः -108 मनका की माला की सहायता से ईश्वर नाम का जप कीजिए। माला को दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली पर रखें। अगूँठे को अनामिका और कनिष्ठा के साथ जोड़े। मध्यमा अंगुली की सहायता से मन्त्र जप करते समय माला घुमायें। तर्जनी अंगुली को माला से अलग रखना चाहिए।

गोत्र एवं प्रवर

1. कात्यायन – कात्यायन, विष्णु, आङ्गिरस।
2. पराशर – शक्ति, वशिष्ठ, पराशर।
3. काश्यप – काश्यपावत्सार, नैध्रुव।
4. वत्स – और्व, च्यवन, भार्गव, जामदग्न्य, आप्नवान।
5. सावर्ण्य – सावर्ण्य, और्वच्यवन,भार्गव,जामदग्न्य,आप्नवान।
6. भारद्वाज – भारद्वाज, आङ्गिरस, बार्हस्पत्य।
7. शाण्डिल्य – शाण्डिल्य, असित, देवल।
8. गौतम – गौतम, आङ्गिरस, औतथ्य।
9. गार्ग्य – गार्ग्य, घृतकौशिक, माण्डव्य, अथर्व, वैशम्पायन।
10. कौशिक – कौशिक, अत्रि, जमदग्नि।
11. कृष्णात्रि – कृष्णात्रेय, आप्नवान,सारस्वत।
12. वसिष्ठ – वसिष्ठ, अत्रि, सांकृति।
13. कौण्डिन्य – कौण्डिन्य, आन्तीक, कौशिक।
14. विष्णुवृद्धि – विष्णुवृद्धि, पौरुकुत्सत्र, सदस्यव।
15. मौद्गल्य – मौद्गल्य, आङ्गिरस, भार्म्यश्व।
16. भार्गव – भार्गव, च्यवन, आप्नवान, और्व, जामदग्नि।
17. कापिष्ठल – वसिष्ठ।
18. गर्ग – आङ्गिरस, भारद्वाज, बार्हस्पत्य, श्रवत, गर्ग।
19. कौण्डिन्य – कौण्डिन्य, वसिष्ठ, मित्रावरुण।
20. वैजवाप – अत्रि, गविष्ठिर, पूर्वार्ध।
21. गालव – विश्वामित्र, देवरात,औदुम्बर।
22. दालभ्य – कश्यपावत्सार, नैध्रुव।
23. सांकृत – सांकृत्यांगिरस, गौरिवीत।
24. सांख्यायन – सांख्यायन, वाचस्पति, आङ्गिरस,श्रवत,गर्ग।
25. आङ्गिरस – आङ्गिरस, गौतम, भरद्वाज।
26. उपमन्यु – उपमन्यु, औतथ्य, आङ्गिरस।
27. आष्टिषेण – भार्गव, च्यवन, आप्नवान, आष्टिषेण, अनूप।
28. आश्वलायन – भार्गव, वार्ध्यश्व, दिवोदास।
29. औशनस – औशनस, भरद्वाज, शब्देन्द्र।
30. औतथ्य – गौतम, आङ्गिरस, औतथ्य।

31. कौसल्य - अगन्त, माहेन्द्र, मयोभू।
32. मौद्गल्य - आङ्गिरस, भार्म्यश्व, मौद्गल्य।
33. देवरात - विश्वामित्र, देवरात, औदल।
34. कौत्स - आङ्गिरस, कौत्य, सांख्यायन।
35. कौशिक - कौशिक, अघर्षण विश्वामित्र।
36. जमदग्नि - जामदग्न्य, और्व, वशिष्ठ।
37. जैमिनि - जैमिनि, औतथ्य, सांकृति।
38. कौथुम - आङ्गिरस, बार्हस्पत्य, भरद्वाज, वान्दन, मातवचसा।
39. देवल - शाण्डिल्य, असित, देवल।
40. विदल - वैश्वामित्र, देवरात, औदल।
41. वासल - भार्गव, च्यवन, आप्नवान, और्व, जामदग्न्य।
42. वैशम्पायन - वैशम्पायन, विश्वामित्र, जमदग्नि।
43. विश्वामित्र - विश्वामित्र, बृहस्पति, वृषगुण।
44. याज्ञवल्क्य - याज्ञवल्क्य, आङ्गिरस, अजमी।
45- शालंकायन - शालंकायन,अप्सार,नैध्रुव आङ्गिरस, बार्हस्पत्य।
46. शौनक - शौनक, शौनहोत्र, गृत्समद।
47. गोभिल - गोभिल, असित देवल।
48. यास्क - यास्क मित्रयुव वैन्य।
49. मार्कण्डेय - मार्कण्डेय, च्यवन, और्व, जामदग्न्य आप्नवान।
50. कण्व - कण्व, आङ्गिरस, अजमीढ।
51. हारीत - आङ्गिरस, अम्बरीष यौवनाश्व।
52. भालन्दन - भालन्दन, गविष्ठिर, पूर्वातिथ्य।
53. घृतकौशिक - घृतकौशिक,कौशिक, विश्वामित्र।
54. लोगाक्षि - आङ्गिरस, सांकृत, गौरिवीत।
55. अघमर्षण - विश्वामित्र, अघमर्षण, कौशिक।

1. देवी के लिए अष्टगन्ध की विधि इस प्रकार है-

चन्दनागरुकर्पूरं कुंकुम रोचनं तथा। शिलारसो जटामांसी कर्चूरं चैकवृद्धितः।।
चन्दनागरुकर्पूरं चोरकुंकुमरोचनाः। जटामांस्यथ कस्तूरीशक्तेर्गन्धाष्टकं विदुः।।

अर्थात् - चन्दन एक अंश, अगरु दो अंश, कर्पूर तीन अंश, कुंकुम चार अंश, रोचन पाँच अंश, शिलारस छःअंश, जटामांसी सात अंश,और कर्चूर आठ अंश।

***

अथ प्रायश्चित्त संकल्पः

आचम्य। प्राणानायम्य। हस्ते जलमादाय-देशकालौ संकीर्त्य अमुक शर्मणो मम जन्म प्रभृति अद्य दिनं यावत् ज्ञाताज्ञात कामाकाम सकृद-सकृत्-कृत कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक स्पृष्ट-अस्पृष्ट भुक्त-अभुक्त पीत-अपीत सकल पातक-अतिपातक-उपपातक गुरु-लघुपातक संकरीकरण मलिनीकरण-अपात्रीकरण जातिभ्रंशकरण प्रकीर्णक पातकानां मध्ये संभावितं पापानां निरासार्थं करिष्यमाण कर्मणि अधिकारार्थं देहशुद्धि प्रायश्चित्तं यथा शक्ति करिष्ये।

नित्यक्रियया निवृत्य शरीर शुद्ध्यर्थं सर्व पापानां विनाशार्थं श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं देव-ब्राह्मण-सवितृसूर्यनारायण सन्निधौ प्रायश्चित-अंगीभूतं भस्मादिभिर्दशविधि स्नानं कुर्यात्।

अथ दशविधि स्नान

पवित्र स्थान पर सूर्य के सम्मुख बैठकर दस प्रकार के स्नान करें। सर्वप्रथम बाये हाथ में भस्म लेकर दाहिने हाथ से जल डालकर मिश्रित करे और दाहिने हाथ से ढककर निम्न मंत्र से अभिमंत्रित करके सूर्य की ओर हस्तदर्शन कराकर कमर से ऊपर दाहिना और नीचे बाया से मालिश करे।। सभी स्नान इसी प्रकार करें।

01. **भस्म-स्नानम्-** ॐ नमस्ते रुद्रमन्न्यवऽउतोतऽइषवे नमः।
बाहुब्भ्यामुतते नमः।।

02. **मृत्तिका-स्नानम्-** ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।
समूढमस्य पा गुं सुरे स्वाहा।।

03. **गोमय-स्नानम्-** ॐ मानस्तो केतनयेमानऽ आयुषि मानो गोषुमानोऽ अश्वेषुरीरिषः। मानो वीरान्नुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे।।

04. **पञ्चगव्य-स्नानम्-** ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमि गुं सर्वतस्पृत्वाऽत्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम्।।

05. गोरजःस्नानम्- ॐ आयंगौः पृश्निरक्रमी दस दन्मातरम्पुरः।
पितरञ्च प्रयन्त्स्वः।।

06. धान्य-स्नानम्- ॐ धान्न्यमसि धिनुहि देवान्प्राणायत्त्वा व्यानायत्त्वा।
दीर्घा मनुप्रसिति मायुषे धान्देवोवः सविता हिरण्यपाणिः
प्रतिगृब्भ्णात्त्वच्छिद्रेण पाणिना चक्क्षुषेत्त्वा महीनां पयोऽसि।।

07. फल-स्नानम्- ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुचन्त्व गुं हसः।।

08. सर्वौषधी-स्नानम्- ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा।
यस्मै कृणोति ब्राह्मण गुं राजन्पारयामसि।।

09. कुशोदक-स्नानम्- ॐ देवस्यत्त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुब्भ्याम्पूष्णो
हस्ताब्भ्याम्।।

10. हिरण्य-स्नानम्- ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यंच।
हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।
फिर शुद्ध जल स्नान करे।

।। इति दशविधिस्नान।।

अथ संक्षिप्त नूतन यज्ञोपवीत धारण प्रयोगः

अथ विधिः - स्नात्वा शुद्धवस्त्रं परिधाय आसने उपविश्य तिलक-भस्मधारणं शिखाबन्धनं च कृत्वा आचमनं प्राणायामं च कृत्वा संकल्पं कुर्यात्। संकल्पः - अद्य पूर्वोच्चारित0 ....मासे ....पक्षे ....तिथौ ....वासरे एवं ग्रह गणविशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ मम अमुकगोत्रोत्पन्नस्य अमुकशर्मणः (वर्मणः, गुप्तस्य वा) श्रौतस्मार्त-कर्मानुष्ठान सिद्धयर्थं अमुक कर्मांगत्वेन नवीनयज्ञोपवीत धारणं अहं करिष्ये।

यज्ञोपवीत प्रक्षालनम्- ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवस्तानऽऊर्जे दधातन।। महे रणाय चक्षसे।। योवः शिवतमो रसस्तस्यभाजयतेहनः।। उशतीरिवमातरः।। तस्माऽअरङ्गमामवोयस्य क्षयाय जिन्वथ।। आपोजनयथाचनः।। ततो यज्ञोपवीतं करसंपुटं कृत्वा दशवारं गायत्री मंत्रेण अभिमन्त्रयेत्- ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।। धियो यो नः प्रचोदयात्।। ततस्तन्तु-ग्रन्थिषु देवता-आवाहनम्- 1. प्रथमतन्तौ ॐकाराय नमः, ॐकारं आवाहयामि स्थापयामि। 2. द्वितीयतन्तौ ॐ अग्नये नमः, ॐ अग्निं आवाहयामि स्थापयामि। 3.तृतीयतन्तौ ॐ नागेभ्यो

नमः, ॐ नागान् आवाहयामि स्थापयामि।.4 चतुर्थतन्तौ ॐ सोमाय नमः, ॐ सोमम् आवाहयामि स्थापयामि। .5 पंचमतन्तौ ॐ पितृभ्यो नमः, ॐ पितॄन् आवाहयामि स्थापयामि। 6. षष्ठतन्तौ ॐ प्रजापतये नमः, ॐ प्रजापतिम् आवाहयामि स्थापयामि। 7. सप्तमतन्तौ ॐ अनिलाय नमः, ॐ अनिलम् आवाहयामि स्थापयामि। 8. अष्टमतन्तौ ॐ यमाय नमः, ॐ यमम् आवाहयामि स्थापयामि। 9. नवमतन्तौ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, ॐ विश्वान् देवान् आवाहयामि स्थापयामि।

यज्ञोपवीतग्रन्थि मध्ये ब्रह्मविष्णुरुद्रेभ्यो नमः, ब्रह्मविष्णुरुद्रान् आवाहयामि। आवाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत। पंचोपचारैः मानसोपचारैः वा पूजनम्।

ध्यानम् - प्रजापतेर्यत् सहजं पवित्रं कार्पास सूत्रोद् भवब्रह्म सूत्रम्।
ब्रह्मत्व सिद्धयै च यशः प्रकाशं जपस्य सिद्धिं कुरु ब्रह्म सूत्रम्।।

सूर्याय दर्शयेत् - ॐ तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः
शतञ्जीवेम शरदः शत गुं शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम
शरदः शतमदीनाः स्यामशरदः शतम्भूयश्च्च शरदः शतात्।।

यज्ञोपवीतधारणम् - ॐ यज्ञोपवीतमिति मंत्रस्य परमेष्ठी ऋषिः लिंगोक्ता
देवता त्रिष्टुप् छन्दः यज्ञोपवीत धारणे विनियोगः।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रयं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीते नोपनह्यामि।।
यज्ञोपवीतं धारयित्वा आचमनं कुर्यात्।

अथजीर्णयज्ञोपवीतत्यागः - ॐ एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात् त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम्।।

शुद्धभूमौ निधाय यथाशक्ति गायत्रीजपं कुर्यात्।
अर्पणम्-अनेन गायत्रीजपकर्मणा श्रीसवितादेवता प्रीयताम्।

पुनः - अनेन नूतनयज्ञोपवीत धारणाख्येन कर्मणा मम श्रौतस्मार्तकर्मानुष्ठान सिद्धिद्वारा श्रीभगवान् परमेश्वरः प्रीयतां न मम।।

।। इति संक्षिप्त नूतन यज्ञोपवीत धारणविधिः।।

मङ्गलाचरणम्

ॐ गजाननं प्रणम्यादौ विष्णुं वाणीं शिवं रविम्।
लिख्यतेऽयं मया ग्रन्थः पूजाकर्म प्रवेशिका।।
ॐ मंगलं भगवान् विष्णुर्मंगलं गरुडध्वजः।
मंगलं पुण्डरीकाक्षो मंगलायतनं हरिः।।
ॐ मंगलं भगवान् शम्भुर्मंगलं वृषभध्वजः।
मंगलं पार्वती नाथो मंगलायतनं हरः।।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।
ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

त्रिराचम्य :- ॐ केशवाय नमः स्वाहा। ॐ नारायणाय नमः स्वाहा।
ॐ माधवाय नमः स्वाहा। ॐ गोविन्दाय नमः। हस्तं प्रक्षालनम्।।

कुश पवित्रीधारणम् :- ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव
उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।।

प्राणायामः- ॐ प्रणवस्य परब्रह्मऋषिः परमात्मा देवता दैवी
गायत्री छन्दः सर्वेषां प्राणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्।
ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।
ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।।

स्वस्ति तिलकः- ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्ध श्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

यजमान पत्नी– ॐ तं पत्नीभिरनु गच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृ भिरुतवा हिरण्यैः।
नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेऽअधिरोचने दिवः।।

शिखा-बन्धन – ॐ चिद्रूपिणि ! महामाये दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि ! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे।।

ग्रंथिबन्धन :– ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्य गुं शतानीकाय सुमनस्य मानाः।
तन्नऽआबध्नामि शत शारदाया युष्मान् जर दष्टिर्यथा सम्।।

हस्ते गन्धाक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा स्वस्ति वाचनमन्त्रान् पठेत्(पठेयुः):-

हरिः ओम् आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतासऽ उद्भिदः। देवानो यथा सदमिद् वृधेऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।। देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवाना गुं रातिरभिनो निवर्तताम्। देवाना गुं सख्यमुपसेदिमा वयं देवा नऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे।। तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्रिधम्। अर्यमणं वरुण गुं सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्।। तन्नो वातो मयो भुवातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम्।। तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।। पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूर चक्षसो विश्वेनो देवा अवसागमन्निह।। भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा गुं सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।। शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।। अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्। द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष गुं शान्तिः

पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व गुं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।

यतोयतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।
शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।।

ॐ शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु, सर्वारिष्ट सकलोपद्रवः शान्तिरस्तु।
ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः।
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः।
ॐ शचिपुरन्दराभ्यां नमः। ॐ मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः।
ॐ श्रीमद्गुरुचरणकमलेभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः।
ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः।
ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।

एतद् कर्म प्रधानायै सांगायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै भगवत्यै दुर्गा देव्यै नमः। नमस्करोमि पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु इति भवन्तो ब्रवन्तु अस्तु दीर्घमायुः निर्विघ्नमस्तु।

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।

अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।

सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ।।

सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनं हरिः।।

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि।।

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।

स्मृतेः सकल कल्याणं भाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्।।

सर्वेष्वारम्भ कार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनाः।।

विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णु महेश्वरान्।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थ सिद्धये।।

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीं गुहां गंगां भवानीं मणिकर्णिकाम्।।

तीक्ष्ण दंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातु मर्हसि।।

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः संकल्प :-

यजमानस्य हस्ते जलाक्षत गन्धं पुष्पं पूगीफलं द्रव्यं चादाय संकल्पं कुर्यात् -

ॐ तिथिर्विष्णुस्तथा वारो नक्षत्रं विष्णुरेव च।
योगश्च करणश्चैव सर्वं विष्णुमयं जगत्।।

संकल्प :- ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्‌भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्त मानस्य अद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीये परार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भारतवर्षे भरतखण्डे जम्बूद्वीपे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे मध्यदेशे पुण्यप्रदेशे गंगायमुनयोः पश्चिमदिग्भागे क्षिप्रायाः दक्षिणतटे नर्मदाया उत्तरेतीरे मालवक्षेत्रे ओंकारमहाकालयोः मध्ये इन्दौर महानगरे ....क्षेत्रे देवद्विजगवां चरण सन्निधावस्मिन् वर्तमाने ....द्विसहस्र विक्रमाब्दे बौद्धावतारे प्रभवादि षष्टि संवत्सराणां मध्ये ....नाम संवत्सरे सूर्य....यायने......तौ महामांगल्यप्रदे मासानाम् उत्तमे.....मासे ...पक्षे ...... तिथौ....वासरे ......नक्षत्रे..... राशिस्थिते चन्द्रे..... राशिस्थिते श्रीसूर्ये......राशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथं राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुण विशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ.........गोत्रोत्पन्नोऽहं.....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् आत्मनः इष्टमित्र बान्धवाः सहितोऽहं सकलशास्त्र श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलप्राप्त्यर्थम् ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् अप्राप्त लक्ष्मी प्राप्त्यर्थं प्राप्त लक्ष्म्याः चिरकाल संरक्षणार्थं सकल मन ईप्सित कामना संसिद्ध्यर्थं लोके सभायां राजद्वारे व्यापारे वा सर्वत्र यशोविजयलाभादि प्राप्त्यर्थम् इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकल दुरितोपशमनार्थं मम सभार्यस्य सपुत्रस्य सबान्धवस्य अखिल कुटुम्ब सहितस्य सपशोः समस्त भयव्याधिजरा पीडा मृत्यु परिहार द्वारा आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं मम जन्मराशेरखिल कुटुम्बस्य वा जन्मराशेः सकाशाद्ये केचिद् विरुद्ध चतुर्थाष्टम द्वादश स्थानस्थित

शर्मान्तं ब्राह्मणस्योक्तं वर्मान्तं क्षत्रियस्य तु। गुप्तान्तं चैव वैश्यस्य दासान्तं शूद्रजन्मनः।।

क्रूरग्रहास्तैः सूचितं सूचयिष्यमाणं च यत्सर्वारिष्ट तद्विनाश द्वारा एकादशस्थान स्थित वच्छुभ फलप्राप्त्यर्थं पुत्रपौत्रादि सन्ततेरविच्छिन्न वृद्ध्यर्थम् आदित्यादि नवग्रहानुकूलता सिद्ध्यर्थम् इन्द्रादिदशदिक्पाल प्रसन्नता सिद्ध्यर्थम् आधिदैविक आदिभौतिक आध्यात्मिक त्रिविध तापोपशमनार्थं धर्मार्थकाममोक्ष फलावाप्त्यर्थं च दुर्गा देवी प्रीत्यर्थं यथाज्ञानेन यथामिलितोपचार द्रव्यैः ध्यानावाहनादि षोडशोपचारैः अन्योपचारैश्च श्री दुर्गा देव्याः पूजनमहं करिष्ये।

तदङ्गत्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्द्धारापूजनं आयुष्यमन्त्रजपं साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दीश्राद्धमाचार्यादि वरणं च करिष्ये।

तत्रादौ निर्विघ्नता सिद्धयर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं कर्मांग कलशादि पूजनं च करिष्ये।

कलशार्चनम् :- स्ववामभागे अक्षतपुञ्जोपरि जलपूरित कलशं
संस्थाप्य तत्र वरुणावाहनम्-

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणे हवोद्ध्युरुश गुं समानऽआयुः प्रमोषीः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः अस्मिन् कलशे वरुणं सांगं सपरिवारं सायुधं
सशक्तिम् आवाहयामि, स्थापयामि,पूजयामि।

ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु।।

कलश मध्ये अपाम्पतये वरुणाय नमः,वरुणं संम्पूज्य- गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। ॐ वं वरुणाय नमः। इत्यात्मानं पूजा सामग्रीं च सम्प्रोक्ष्य।

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।

विद्वत्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन। स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।।
स्वगृहे पूज्यते मूर्खः स्वग्रामे पूज्यते प्रभुः। स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।।

दीपकपूजनम् :- घृतदीपं प्रज्वाल्य वायुरहित स्थले निधाय -

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।।
ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।

ॐ भूर्भुवःस्वः दीपस्थदेवतायै नमः आवाहयामि,
सर्वोपचारार्थे, गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

भो दीपदेव रूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्न कृत।
यावत्पूजा समाप्तिःस्यात् तावदत्र स्थिरो भव।।

घण्टार्चनम् :- ॐ आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टानादं प्रकुर्वीत पश्चाद् घण्टां प्रपूजयेत्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः घण्टास्थाय गरुडायनमः आवाहयामि,
सर्वोपचारार्थे,गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

शंखपूजनम् :- ॐ त्रैलोक्ये यानितीर्थानि वासुदेवस्थ चाज्ञया।
शंखे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्मात् शंखं प्रपूजयेत्।।

ॐ पाञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि। तन्नः शंखः प्रचोदयात्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः शंखस्थदेवतायै नमः आवाहयामि,
सर्वोपचारार्थे, गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

ॐ त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे।
निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोऽस्तु ते।।

सूर्यार्घ्यदानम् :- ताम्रपात्रे गन्धोदक गृहीत्वा -

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यंच।
हिरण्ण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजो राशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।

ॐ भुवन भास्कराय नमः अर्घ्यंदत्तं न मम।

नमस्कारम् :- ॐ आदित्यस्य नमस्कारं ये कुर्वन्ति दिने-दिने।
जन्मान्तर सहस्रेषु दारिद्रयं नोपजायते।।

अथ दिग्रक्षणम् :-वाम हस्ते पीतसर्षपान् गृहीत्वा दक्षिण हस्तेन आच्छाद्य अभिमन्त्रयेत् **ॐ रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवी मिदमहन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे निष्टयो यममात्त्यो निचखाने दमहन्तं वलग मुत्किरामि यम्मे समानो यम समानो निचखाने दमहन्तं वलग मुत्किरामि यम्मे सबन्धुर्यम सबन्धुर्निचखाने दमहन्तं वलग मुत्किरामि यम्मे सजातो यम सजातो निचखानोत्त्कृत्त्यांकिरामि।।**

पीतसर्षपान् सर्वदिक्षु विकिरेत्- पूर्वे इन्द्राय नमः, आग्नेय्याम् अग्नये नमः, दक्षिणस्यां यमाय नमः, नैऋत्यां निर्ऋतये नमः, पश्चिमे वरूणाय नमः, वायव्यां वायवे नमः,उत्तरे कुबेराय नमः, ईशान्याम् ईश्वराय नमः, ऊर्ध्वे ब्रह्मणे नमः, अधस्तात् अनन्ताय नमः, सर्वदिक्षु अनन्ताय त्रिविक्रमाय नमः।

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामवरोधेन पूजाकर्म समारभे।।

"देवाः आयान्तु। यातुधाना अपयान्तु। विष्णोदेव यजनं रक्षस्व"
वामपादेन त्रिवारं भूमिं ताडयित्वा भूतान्युत्सार्य-

भैरवनमस्कारः- ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातु मर्हसि।।

ॐ भैरवाय नमः सर्वोपचारार्थे, गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

भूमिपूजनम् :- हस्ते गन्धाक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा-

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छानःशर्म सप्रथाः।।

ॐ भूर्भुवःस्वः पृथिव्यै नमः सर्वोपचारार्थे,
गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

आसनोपरि किञ्चित् जलं संप्रोक्षेत्।

श्री गणेशाम्बिका पूजन
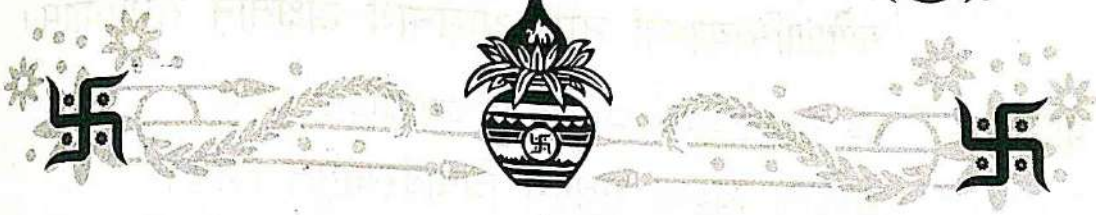
हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा गणेशाम्बिकयोः ध्यानमावाहनम्

ॐ गजाननं भूतगणादि सेवितं कपित्थ जम्बू फल चारुभक्षणम्।
उमा सुतं शोक विनाश कारकं नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम्।।

ॐ कुन्द-सुन्दर-मन्दहास - विराजिताधर-पल्लवां,
इन्दुबिम्ब-निभान नाम रबिन्द चारु विलोचनाम्।
चन्दनागरु पङ्करूषित तुङ्गपीन पयोधरां,
चन्द्रशेखर वल्लभां प्रणमामि शैलसुतामिमाम्।।

ॐ गणानां त्वा गणपति गुं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति
गुं हवामहे निधीनां त्वा निधिपति गुं हवामहे वसो मम।
आहमजानि गर्ब्भधमात्त्वमजासि गर्ब्भधम्।।

ॐ अम्बेऽम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं
यज्ञ गुं समिमं दधातु। विश्वे देवा सऽइह मादयन्तामों३ प्रतिष्ठ।।
ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि, प्रतिष्ठापयामि।
गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्।

आसनम् - ॐ पुरुषऽएवेद गुं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्त्वस्ये शानो यदन्नेनातिरोहति।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम् - ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम् - ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोस्येहा भवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम् - ॐ ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथोपुरः।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि।

स्नानम् - ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्च्चक्रेवायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः स्नानं समर्पयामि।

पयः स्नानम् - ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पयः स्नानं समर्पयामि।
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम् - ॐ दधिक्क्राव्णोऽअकारिषं जिष्णो रश्श्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्प्रणऽआयू गुं षितारिषत्।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दधि स्नानं समर्पयामि।
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्- ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम।
अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहा कृतं वृषभ वक्षि हव्यम्।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः घृतस्नानं समर्पयामि।
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।।

मधुस्नानम् – ॐ मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव गुं रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता।। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।। गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मधुस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम् – ॐ अपा गुं रसमुद्वयस गुं सूर्ये सन्त गुं समाहितम्।
अपा गुं रसस्ययो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयाम
गृहीतोसीन्द्रायत्वा जुष्टं गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

पंचामृतस्नानम्- ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि।
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

गन्धोदकस्नानम्- ॐ गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातुविश्वस्यारिष्ट्यै
यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः गन्धोदकस्नानं समर्पयामि।
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

उद्वर्तनस्नानम्- ॐ अ गुं शुनातेऽअ गुं शुः पृच्यताम्परुषा परुः।
गन्धस्ते सोम मवतु मदाय रसोऽअच्युतः।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः उद्वर्तनस्नानं समर्पयामि।
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शुध्दोकदकस्नानम्– ॐ शुध्दवालः सर्व शुध्दवालो मणिवालस्त ऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षो रुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा ऽअवलिप्तारौद्रा नभोरुपाः पार्ज्जन्याः ।। गणेशाम्बिकाभ्यां नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पंचोपचारैः सम्पूज्य – ॐ गन्धं समर्पयामि।
ॐ पुष्पं समर्पयामि। ॐ धूपमाघ्रापयामि। ॐ दीपं दर्शयामि।
ॐ नैवेद्यं निवेदयामि। ॐ गं गणपतये नमः इति मन्त्रेण सम्प्रोक्ष्य
धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य ग्रासमुद्राः प्रदर्शयेत् –

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ ब्रह्मणे नमः,मध्ये पानीयं समर्पयामि। उत्तरापोशनं समर्पयामि। हस्त प्रक्षालनं समर्पयामि। मुखं प्रक्षालनं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं अर्चयामि। मुखवासार्थे पूगीफलं ताम्बूलं च समर्पयामि। पर्णमुद्रा दक्षिणां समर्पयामि। पंचामृत पूजन पूर्वकं नमस्करोमि।

अनेन यथाशक्त्या ध्यानस्नानादि कृतेन गणेशाम्बिके प्रीयेताम् न मम। उत्तरे निर्माल्य विसृज्य हस्तं प्रक्षाल्य पुनर्गन्धादिभिः सम्पूज्य। दुग्धमिश्रित जलधारया गणेशोपरि अभिषेकमारभेत्। धारापात्रं गन्धादिभिः सम्पूज्य।

श्रीगणेशाथर्वशीर्षं श्रीसूक्तं च पाठेन अभिषेकं कुर्यात् –

ॐ लं नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्तासि। त्वमेव केवलं धर्तासि। त्वमेव केवलं हर्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि नित्यम्।। 1।। ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि।। 2।। अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचानमव शिष्यम्। अव पश्चातात्। अव पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्।। 3।। त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि।। 4।।

सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमि रापोऽनलोऽनिलो नभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि।। 5।। त्वं गुणत्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वमवस्थात्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितो नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवःस्वरोम्।6। गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्। तारेण रुद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्। बिन्दुरूत्तररूपम्। नादःसंधानम्। स गुं हितासन्धिः सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः निचृद् गायत्री छन्दः। गणपतिर्देवता। ॐ गँ गणपतये नमः।। 7।। एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।।8।। एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमं कुश धारिणम्। रदं च वरदं हस्तैर्विभ्राणं मूषकध्वजम्। रक्तं लम्बोदरं शूर्प कर्णकं रक्तवाससम्। रक्तगन्धाऽनुलिप्तांगं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्। भक्तानुकंपिनं देवं जगत्कारण मच्युतम्। आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरूषात्परम्। एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः।। 9।। नमो व्रातपतये। नमो गणपतये। नमः प्रमथपतये। नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैक दन्ताय विघ्न विनाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमो नमः।।10।।

ॐ ह्रीं हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।। 1।।

तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मी मन पगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वंपुरुषानहम्।। 2।।

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्ति नाद प्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवीजुषताम्।। 3।।

कांसोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्म वर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम्।। 4।।

चन्द्रां प्रभासां यशसाज्वलन्तीं श्रियं लोकेदेव जुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणे।। 5।।

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातोवनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्यफलानितपसा नुदन्तुमायान्तरायाश्च बाह्याऽअलक्ष्मीः।।6।।

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।। 7।।

क्षुत्पिपासा मलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।। 8।।

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम्।। 9।।

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।। 10।।

कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।। 11।।

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।। 12।।

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।। 13।।

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जात वेदो म आ वह।। 14।।

ताम आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावोदास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।। 15।

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।। 16।।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण।। ॐ सर्वेषां वाऽएष वेदाना गुं रसो यत्साम सर्वेषामेवैनमेतद्वेदाना गुं रसेनाभिषिञ्चति।।

ॐ शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु। सर्वारिष्ट शान्तिर्भवतु।
ॐ अमृताभिषेकोऽस्तु। अस्त्वमृताभिषेकः।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अभिषेकं समर्पयामि। अभिषेकोदकं नेत्रे स्पृशेत्।

शुध्दोकदकस्नानम् - ॐ शुध्दवालः सर्व शुध्दवालो मणिवालस्तऽ आश्विनाः श्येतः श्येताक्षो रुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामाऽ अवलिप्ता रौद्रा नभोरुपाः पार्ज्जन्याः।।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रम् - ॐ युवासुवासाः परिवीत आगात् स उश्रेयान् भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो३ मनसा देवयन्तः।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः वस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्रम्- ॐ सुजातो ज्योतिषा सहशर्म वरूथमाऽसदत्स्वः।
वासो अग्ने विश्वरूप गुं सं व्ययस्व विभावसो।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीत- ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रयं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।
गणेशाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

चन्दन - ॐ गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै
यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः चन्दनं समर्पयामि।

अक्षत- ॐ अक्षन्नमी मदन्त ह्यव प्रिया अधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्प – ॐ ओषधीःप्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि समर्पयामि।

दूर्वा – ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।।
गणेशाय नमः दुर्वांकुरान् समर्पयामि।

सिन्दूर– ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

अबीर-गुलाल–ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परि बाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा गुं सं परिपातु विश्वतः।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः नानापरिमल द्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्य– ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि।

धूप – ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान्धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः।
देवानामसि वह्निन तम गुं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः धूपमाघ्रापयामि।

दीप – ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।।
ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दीपं दर्शयामि।

नैवेद्य – ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष गुं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन्।।
ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा।
ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ ब्रह्मणे नमः,
मध्ये पानीयं समर्पयामि। उत्तरापोशनं समर्पयामि।
हस्त प्रक्षालनं समर्पयामि। मुख प्रक्षालनं समर्पयामि।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः नैवेद्यं समर्पयामि।

करोद्वर्तन– ॐ सिञ्चन्ति परि षिञ्चन्त्युत्सिञ्चन्ति पुनन्ति च।
सुरायै बभ्र्वै मदे किन्त्वो वदति किन्त्वः।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः करोद्वर्तनकं चन्दनं समर्पयामि।

मुखवासार्थे ताम्बूलम् – ॐ उतस्मास्यद् द्रवतस्तुरण्यतः पर्णन्नवेरनु वाति प्रगर्द्धिनः। श्येनस्ये वद्ध्रजतोऽअंकसम्परि दधिक्राव्णः सहोर्जातरित्रतः स्वाहा।। गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मुखवासार्थे ताम्बूलं समर्पयामि।

फलम् – ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुचन्त्व गुं हसः।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः फलं समर्पयामि।

दक्षिणा – ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पर्णमुद्रा दक्षिणां समर्पयामि।

कर्पूरार्तिक्यम् – निराजनीं प्रज्वाल्य ज्वालामालिन्यै नमः,
गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

आरती –ॐ इद गुं हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीर गुं सर्वगण गुं स्वस्तये।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि।
अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त।।

श्री गणेशजी की आरती

देवा लम्बोदर गिरजा नन्दना, देवा पूरण करो मनकामना। देवा...
हे मनभावन, अतिसुख पावन, गौरी के तुम नन्दना।। देवा...
रूणझुण-रूणझुण पैंजनी बाजत चलत मस्त मुचुकन्दना। देवा...
हे सुखकर्ता, हे दुःखहर्ता, विघ्न विनाशक गजानना।। देवा...
गौरी के तुम पुत्र गजानन, शिवजी के तुम नन्दना। देवा...
जो प्रभु तुमरी आरती गावे, मिटै विघ्न कटै फन्दना।। देवा....

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः आरार्तिकं समर्पयामि।
जलेन शीतलीकरणं देवाभिवंदनम्,आत्माभिवंदनम्,
आशिषो धारणं नीराञ्जलिं ग्रहणं मन्त्रपुष्पाञ्जलिम्।

पुष्पाञ्जलि – ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे।
समे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु।
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठयं राज्यं महाराज्यमाधिपत्य मयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषान्तादा परार्धात्। पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वे देवाः सभासद इति।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्।
सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावा भूमी जनयन् देव एकः।।

ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।
ॐ कात्यायन्यै च विद्महे कन्याकुमार्यै धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।
ॐ सांगाभ्यां सपरिवाराभ्यां सायुधाभ्यां सशक्तिकाभ्यां सवाहनाभ्यां गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा – ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।

विशेषार्घ्य – ॐ रक्ष रक्षगणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद।।
अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थना –
ॐ विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुति यज्ञ विभूषिताय, गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।
ॐ त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या, विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्, त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः।।
गणेश पूजने कर्म यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः प्रार्थनां समर्पयामि नमस्करोमि।
।। अनेन कृतेन पूजनेन गणेशाम्बिके प्रीयेताम्।।

अन्ते – आसनाधः जलं निक्षिप्य ललाटे मृदा तिलकं धारयेत्।
यथा– यस्मिन् स्थाने कर्मं कृत्वा शक्रो हरति तत्कर्मम्।
तन्मृदा लक्ष्म कुर्वीत ललाटे तिलकाकृति।।

***

卐 पुण्याहवाचन कलश पूजन 卐

स्वपुरतः शुद्धायां भूमौ पंचवर्णैः तन्दुलैः अष्टदलं कर्तव्यम्।।

भूमिं स्पृशेत् – ॐ मही द्यौःपृथिवी चनऽइमँयज्ञम्मिमिक्षताम्।
पिपृतान्नो भरीमभिः।।

धान्यप्रक्षेपः– ॐ ओषधयःसमवदन्त सोमेन सह राज्ञा।
यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त गुं राजन्पारयामसि।।

कलशं स्थापयेत्– ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः।
पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्रं
धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः।।

कलशे जलपूरणम् – ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी
स्थो वरुणस्य ऋतसदन्न्यसि वरुणस्य
ऋतसदनमसिवरुणस्य ऋतसदनमासीद।।

गन्धप्रक्षेपः– ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमोराजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत।।

सर्वौषधीप्रक्षेपः- ॐ याऽओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।
मनैनु बभ्रूणामह गुं शतं धामानिसप्तच।।

दूर्वाप्रक्षेपः– ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

पञ्चपल्लवप्रक्षेपः– ॐ अश्वत्थेवो निषदनं पर्णेवो वसतिष्कृता।
गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्।।

सप्तमृदांप्रक्षेपः– ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी।
यच्छा नः शर्म सप्रथाः।।

पूगीफलप्रक्षेपः– ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुचन्त्व गुं हसः।।

पञ्चरत्नप्रक्षेपः– ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्न्यक्रमीत्।
दधद्रत्नानि दाशुषे।।

हिरण्यप्रक्षेपः–ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

वस्त्रं वेष्टयेत्– ॐ सुजातो ज्योतिषा सहशर्म वरूथमाऽसदत्स्वः।
वासो अग्ने विश्वरूप गुं सं व्ययस्व विभावसो।।

पूर्णपात्रं न्यसेत्–ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरा पत।
वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्ज गुं शतक्रतो।।

श्रीफलं न्यसेत्– ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं मइषाण।।

आवाहनम्–ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणे हवोद्ध्युरुश गुं समानऽआयुः प्रमोषीः।।

अस्मिन् कलशे वरुणं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् आवाहयामि।
ॐ अपां पतये वरुणाय नमः। पञ्चोपचारैः सम्पूज्य।

ॐ कला कला हि देवानां दानवानां कला कलाः।
संगृह्य निर्मितो यस्मात् कलशस्तेन कथ्यते।।

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती।।

कावेरी कृष्णवेणा च गंगा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा।।

नदाश्च विविधा जाता नद्यःसर्वास्तथाऽपराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै।।

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरित क्षय कारकाः।।

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।।

अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु देव पूजार्थं दुरित क्षय कारकाः।।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ गुं समिमंदधातु। विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामों३ प्रतिष्ठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

कलशे वरुणाद्यावाहित देवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु। वरुणाद्यावाहित देवताभ्यो नमः। कलशस्य चतुर्दिक्षु चतुर्वेदान्पूजयेत्-

पूर्वे - ऋग्वेदाय नमः। दक्षिणे- यजुर्वेदाय नमः। पश्चिमे- सामवेदाय नमः। उत्तरे- अथर्ववेदाय नमः। कलशमध्ये अपाम्पतये वरुणाय नमः।

षोडशोपचारैः पूजनं कुर्यात्- आसनार्थेऽक्षतान् समर्पयामि। पादयोःपाद्यं समर्पयामि। हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि। पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानांगाचमनं समर्पयामि। वस्त्रं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि। यज्ञोपवीतं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि। उपवस्त्रं समर्पयामि। गन्धं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पं समर्पयामि। नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि। धूपमाघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि। हस्तप्रक्षालनम्। नैवेद्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। मध्ये पानीयम् उत्तरापोशनं च समर्पयामि। ताम्बूलं समर्पयामि। पूगीफलं समर्पयामि। कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। अनया पूजया वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्तां न मम।

प्रार्थना- देव दानव संवादे मथ्य माने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।।
त्वत्तोये सर्व तीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवा रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादि मां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव।।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।।

नमो नमस्ते स्फटिक प्रभाय सुश्वेत हाराय सुमंगलाय।
सुपाश हस्ताय झषासनाय जलाधि नाथाय नमोनमस्ते।।

पाश पाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनी जीवनायकम्।
पुण्याह वाचनं यावत्तावत्त्वं सन्निधो भव।।

अनेन कृतेन पूजनेन कलशे वरुणाद्यावाहित देवताः प्रीयन्तां न मम।

अवनि कृत जानु मण्डलः कमल मुकुल सदृशमञ्जलिं शिरस्याधायाऽनन्तरं वामान्वारब्ध दक्षिणेन पाणिना स्वर्णपूर्ण कलशं धारयित्वा आशिषः प्रार्थयेत्।

यजमान – ॐ दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णु पदानि च।
तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।।

विप्रा – अस्तु दीर्घमायुः। (तीन बार ऐसा कहे।)
ॐ त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः।
अतो धर्माणि धारयन्।।

तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्त्वति भवन्तो ब्रुवन्तु।।
पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।। (एवं द्विरपरं शिरसि भूमौ निधाय)

यजमानः- ॐ अपां मध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम्।
ब्राह्मणानां करे न्यस्ताः शिवा आपो भवन्तु नः।।

ततो ब्राह्मणानो हस्ते - ॐ शिवा आपः सन्तु। इति जलम्।

ब्राह्मणा :- सन्तु शिवा आपः। एवं सर्वत्र वचनोत्तरं दद्युः,

यजमान :-ॐ लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे।
सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं सदास्तु मे।।
सौमनस्यमस्तु। इति पुष्पम् -

ब्राह्मणा :- अस्तु सौमनस्यम्।

यजमान :- अक्षतं चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम्।
यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम। अक्षतं चारिष्टं चास्तु इति अक्षतान्

ब्राह्मणा :- अस्तु अक्षतं अरिष्टं च। **यजमान :-** गन्धाः पान्तु। इति गन्धम्
ब्राह्मणा :- सौमंगल्यं चास्तु। **यजमान :-** अक्षताः पान्तु। **ब्राह्मण :-** आयुष्यमस्तु। **यजमान :-** पुष्पाणि पान्तु। **ब्राह्मणा :-** सौश्रियमस्तु। **यजमान :-** सफलताम्बूलानि पान्तु। **ब्राह्मणा :-** ऐश्वर्यमस्तु। **यजमान :-** दक्षिणाः पान्तु। **ब्राह्मणा :-** बहुदेयं चास्तु। **यजमान :-** आपः पान्तु। **ब्राह्मणा :-** स्वर्चितमस्तु। **यजमान :-** दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं बहुधनं चायुष्यं चास्तु।

ब्राह्मणा :- तथाऽस्तु।

यजमानः- यं कृत्वा सर्व वेद यज्ञ क्रिया करण कर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते, तमहमोंकारमादिं कृत्वा यजुराशीर्वचनं बहुऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनु ज्ञातं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।

ब्राह्मणाः - वाच्यताम् -

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा गुं सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।

ॐ द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्र च तिष्ठत। नेष्ट्रा दृतु भिरिष्यत।। 1।। सविता त्वा सवानो गुं सुवतामग्निर्गृह पतीना गुं सोमो वनस्पतीनाम्। बृहस्पतिर्वाच इन्द्रो ज्यैष्ठयाय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो धर्मपतीनाम्।। 2।।

न तद्रक्षा गुं सि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमज गुं ह्येतत्। यो बिभर्ति दाक्षायण गुं हिरण्य गुं स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः।।3।। उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्या ददे। उग्र गुं शर्म महिश्श्रवः।।4।। उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ२ इयक्षते।।5।।

यजमानः – व्रत जप नियम तपः स्वाध्याय क्रतु शम दम दया दान विशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्।

ब्राह्मणाः – समाहितमनसः स्मः। **यजमानः**– प्रसीदन्तु भवन्तः।

ब्राह्मणाः – प्रसन्नाः स्मः।

यजमानः–(बाये हाथ में चांवल लेकर दाये हाथ से कलश पर छोड़े) – ॐ शान्तिरस्तु। ॐ पुष्टिरस्तु। ॐ तुष्टिरस्तु। ॐ वृद्धिरस्तु। ॐ अविघ्नमस्तु। ॐ आयुष्यमस्तु। ॐ आरोग्यमस्तु। ॐ शिवमस्तु। ॐ शिवं कर्मास्तु। ॐ कर्म समृद्धिरस्तु। ॐ धर्म समृद्धिरस्तु। ॐ वेद समृद्धिरस्तु। ॐ शास्त्र समृद्धिरस्तु। ॐ धनधान्य समृद्धिरस्तु। ॐ पुत्रपौत्र समृद्धिरस्तु। ॐ इष्टसम्पदस्तु।

दूसरे पात्र में – ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु।

ॐ यत्पापं रोगमशुभमकल्याणं तद् दूरे प्रतिहतमस्तु।

पुनः पहले पात्र में – ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु। ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु। ॐ उत्तरोत्तर महर हरभि वृद्धिरस्तु। ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। ॐ तिथि करण मुहूर्त नक्षत्र ग्रह लग्न सम्पदस्तु।। **पात्रे उदकसेकः।।** ॐ तिथि करण मुहूर्त नक्षत्र ग्रह लग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ तिथिकरणे समुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदैवते प्रीयेताम्। ॐ दुर्गापाञ्चाल्यौ प्रीयेताम्। ॐ अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐ इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। ॐ वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। ॐ माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम्। ॐ अरुन्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च

प्रीयन्ताम्। ॐ श्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्। ॐ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा इष्टदेवताः प्रीयन्ताम्।

दूसरे पात्र में – ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः। ॐ हताश्च परिपन्थिनः। ॐ हताश्च विघ्नकर्तारः। ॐ शत्रवः पराभवं यान्तु। ॐ शाम्यन्तु घोराणि। ॐ शाम्यन्तु पापानि। ॐ शाम्यन्त्वीतयः। ॐ शाम्यन्तूपद्रवाः।।

पुनः पहले पात्र में – ॐ शुभानि वर्धन्ताम्। ॐ शिवा आपः सन्तु। ॐ शिवा ऋतवः सन्तु। ॐ शिवा ओषधयः सन्तु। ॐ शिवा वनस्पतयः सन्तु। ॐ शिवा अतिथयः सन्तु। ॐ शिवा अग्नयः सन्तु। ॐ शिवा आहुतयः सन्तु। ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम्। ॐ निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।

यजमान :–ॐ शुक्राङ्गारक-बुध-बृहस्पति-शनैश्चर- राहु-केतु-सोमसहितादित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्।

ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम्। ॐ भगवान् पर्जन्यः प्रीयताम्। ॐ भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम्। ॐ पुरोऽनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु। ॐ याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। ॐ वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। ॐ प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।

एतत् कल्याण युक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये। वाच्यताम्।

यजमान :–1 ॐ ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादन कारकम्।
वेद वृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः! मह्यं सकुटुम्बिने महाजनान् नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणाय मया क्रियमाणस्य अमुक कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रवन्तु।।

ब्राह्मणाः- ॐ अस्तु पुण्याहम्। ॐ अस्तु पुण्याहम्। ॐ अस्तु पुण्याहम्।
ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।

यजमानः-2 ॐ पृथिव्यामुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुरा कृतम्।
ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः! मह्यं सकुटुम्बिने महाजनान् नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचन मपेक्षमाणाय मया क्रियमाणस्य अमुक कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रवन्तु।।

ब्राह्मणा :- ॐ अस्तु कल्याणम्। ॐ अस्तु कल्याणम्। ॐ अस्तु कल्याणम्।
ॐ यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः। ब्रह्म राजन्याभ्या गुं शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूया समयं मे कामः समृद्ध्यतामुप मादो नमतु।।

यजमानः- 3 ॐ सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां च ऋद्धिं ब्रवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः! मह्यं सकुटुम्बिने महाजनान् नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचन मपेक्षमाणाय मया क्रियमाणस्य अमुक कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रवन्तु।।

ब्राह्मणा :-ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्। ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्। ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्।
ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्य गन्म ज्योति रमृता अभूम।
दिवं पृथिव्या अध्याऽरुहामा विदाम देवान्त्स्वर्ज्योतिः।।

यजमान :-।4। ॐ स्वस्तिस्तु याऽविनाशाख्या पुण्य कल्याण वृद्धिदा।
विनायक प्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः! मह्यं सकुटुम्बिने महाजनान् नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचन मपेक्षमाणाय मया क्रियमाणस्य अमुक कर्मणः स्वस्तिं भवन्तो ब्रवन्तु।।

ब्राह्मणा :- ॐ आयुष्मते स्वस्ति। ॐ आयुष्मते स्वस्ति। ॐ आयुष्मते स्वस्ति।
ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्ध श्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिःस्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

यजमान :- ।5। ॐ समुद्र मथनाज्जाता जगदानन्द कारिका।
हरिप्रिया च मांगल्या तां श्रियं च ब्रवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः! मह्यं सकुटुम्बिने महाजनान् नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणाय मया क्रियमाणस्य अमुक कर्मणः श्रीरस्तु इति भवन्तो ब्रवन्तु।।

ब्राह्मणा :- ॐ अस्तु श्रीः। ॐ अस्तु श्रीः। ॐ अस्तु श्रीः।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।
इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण।।

यजमान :- ।6। ॐ मृकण्ड सूनोरायुर्यद् ध्रुवलोमशयोस्तथा।
आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम्।।

ब्राह्मणा :- ॐ शतं जीवन्तु भवन्तः।
ॐ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।।

यजमान :- ।7। ॐ शिवगौरी विवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे।
धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं सास्तु सद्मनि।।

ब्राह्मणा :- ॐ अस्तु श्रीः।
ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय।
पशूना गुं रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा।।

यजमान :- ।8। ॐ प्रजा पतिर्लोक पालो धाता ब्रह्मा च देवराट्।
भगवाञ्छाश्वतो नित्यं नो वै रक्षन्तु सर्वतः।।

ब्राह्मणा :- ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्।
ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय गुं स्याम पतयो रयीणाम्।।

यजमान :- ।9। आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे।
श्रिये दत्ताशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः।।

ब्राह्मणा :- ॐ आयुष्मते स्वस्ति।

ॐ प्रति पन्थामपद्‌महि स्वस्ति गामनेहसम्।
येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु।।

ॐ पुण्याह वाचन समृद्धिरस्तु।। ॐ अस्तु पुण्याह वाचन समृद्धिः।।
-अस्मिन् पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तो यो विधिरुपविष्ट ब्राह्मणानां वचनात् श्रीमहागणपति प्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु। संकल्प-कृतस्य पुण्याहवाचन कर्मणः समृद्ध्यर्थं पुण्याह वाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो इमां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे। ॐ स्वस्ति।

अथाऽभिषेकः- अभिषेके पत्नी वामतः। एकस्मिन् पात्रे कलशोदकं गृहीत्वा-अविधुराश्चत्वारो ब्राह्मणाः दूर्वा-आम्र पल्लवैः सकुटुम्बं यजमानमभिषिञ्चेयुः।

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।। पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।। वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसिवरुणस्य ऋतसदनमासीद।। पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।। द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष गुं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व गुं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।। ॐ सर्वेषां वाऽएष वेदाना गुं रसो यत्साम सर्वेषामेवैनमेतद्वेदाना गुं रसेनाभिषिञ्चति।। ॐ शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु। सर्वारिष्ट शान्तिर्भवतु।

ॐ अमृताभिषेकोऽस्तु। अस्तु अमृताभिषेकः।

स्वस्थाने उपविश्य हस्ते जलं गृहीत्वा - अभिषेक कर्तृकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथोत्साहं दक्षिणां दास्ये तेन श्रीकर्माधीशः प्रीयताम्।

।। अनेन पुण्याहवाचनेन कर्मणः कर्मांग देवताः प्रीयन्ताम्।।

षोडशमातृका आवाहन-स्थापन

ॐ आयंगौः पृश्निरक्रमी दस दन्मातरम्पुरः। पितरञ्च प्रयन्त्स्वः।।

0. ॐ गणपतये नमः,गणपतिमावाहयामि,स्थापयामि।
1. ॐ गौर्यै नमः,गौरीमावाहयामि,स्थापयामि।
2. ॐ पद्मायै नमः,पद्मामावाहयामि,स्थापयामि।
3. ॐ शच्यै नमः, शचीमावाहयामि,स्थापयामि।
4. ॐ मेधायै नमः, मेधामावाहयामि,स्थापयामि।
5. ॐ सावित्र्यै नमः, सावित्रीमावाहयामि,स्थापयामि।
6. ॐ विजयायै नमः, विजयामावाहयामि,स्थापयामि।
7. ॐ जयायै नमः, जयामावाहयामि,स्थापयामि।
8. ॐ देवसेनायै नमः, देवसेनामावाहयामि,स्थापयामि।
9. ॐ स्वधायै नमः, स्वधामावाहयामि,स्थापयामि।
10. ॐ स्वाहायै नमः, स्वाहामावाहयामि,स्थापयामि।
11. ॐ मातृभ्यो नमः, मातृः आवाहयामि,स्थापयामि।
12. ॐ लोकमातृभ्यो नमः,लोकमातृः आवाहयामि,स्थापयामि।
13. ॐ धृत्यै नमः, धृतिमावाहयामि,स्थापयामि।
14. ॐ पुष्टयै नमः, पुष्टिमावाहयामि,स्थापयामि।
15. ॐ तुष्टयै नमः, तुष्टिमावाहयामि,स्थापयामि।
16. ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः, आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ गुं समिमं दधातु। विश्वे देवा सऽइह मादयन्तामों३ प्रतिष्ठ।।

ॐ गणेशसहित गौर्यादि षोडशमातृकाभ्यो नमः।
एतानि पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानीयपुनराचमनीयानि समर्पयामि।।

दुग्धस्नान- ॐ कामधेनु समुद् भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।।
पयः स्नानं समर्पयामि।

दधिस्नान - ॐ पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नान- ॐ नवनीत समुत्पन्नं सर्व संतोष कारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नान- ॐ पुष्परेणु समुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजःपुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नान- ॐ इक्षुरस समुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नान- ॐ पञ्चामृतं मयानीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नान - ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदा सिन्धु कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्र - ॐ शीतवातोष्ण संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालंकरणं वस्त्र मतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।
वस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्र - ॐ यस्याभावेन शास्त्रोक्तं कर्म किञ्चिन्न सिध्यति।।
उपवस्त्रं प्रयच्छामि सर्वकर्मोप कारकम्।।
उपवस्त्रं समर्पयामि।

चन्दन - ॐ श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढयं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।
चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।।

अक्षत- ॐ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर।।
अक्षतान् समर्पयामि।।

पुष्प - ॐ माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मया हृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
पुष्पं समर्पयामि।

दूर्वा - ॐ दूर्वाङ्कुरान् सुहरितान् अमृतान् मंगलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक।।
दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

सिन्दूर- ॐ सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।
सिन्दूरं समर्पयामि।

अबीर-गुलाल- ॐ अबीरं च गुलालं च हरिद्रादि समन्वितम्।
नाना परिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वरी।।
नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्य - ॐ दिव्यगन्ध समायुक्तं महापरिमलाद्भुतम्।
गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं वै परिगृह्यताम्।।
सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि।

किं वास सैवं न विचारणीयं, वासः प्रधानं खलु योग्यतायाः।
पीताम्बरं वीक्ष्य ददौ स्वकन्यां, दिगम्बरं वीक्ष्य विषं समुद्रः।।

धूप - ॐ वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेय सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।
धूपमाघ्रापयामि।

दीप - ॐ साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापहम्।।
दीपं दर्शयामि।

नैवेद्य - ॐ शर्कराखण्ड खाद्यानि दधिक्षीर घृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।
नैवेद्यं समर्पयामि।

आचमन- ॐ शीतलं निर्मलं तोयं कर्पूरेण सुवासितम्।
आचम्यतां जलं ह्येतत् प्रसीद परमेश्वरि।।
आचमनीयं जलं समर्पयामि।

करोद्वर्तन- ॐ चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादि समन्वितम्।
करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर।।
करोद्वर्तनकं चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल-पूगीफल- ॐ पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्।
एलाचूर्णादि संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।
ताम्बूलं समर्पयामि।

ऋतुफल- ॐ इदं फलं मया देवी स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।
अखण्डऋतुफलं समर्पयामि।

दक्षिणा - ॐ हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेमबीज विभावसोः।
अनन्त पुण्य फलद मतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।
द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

**षड्विनायकाः - ॐ मोदश्चैव प्रमोदश्च सुमुखो दुर्मुखस्तथा।
अविघ्नो विघ्नकर्ता च षडेते विघ्ननायकाः।।**

आरती - ॐ कदली गर्भ सम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।।
आरार्तिकं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलि- ॐ नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर।।
पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा- ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे।।
प्रदक्षिणां समर्पयामि।

इति षोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत्-

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः।।
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडश।।

***

अनया पूजया सगणेशगौर्यादि कुलदेवतान्त षोडशमातरः प्रीयन्तां न मम।

ॐ जयति वरद मूर्तिर्मङ्गलं मंगलानां जयति सकलवन्द्या भारती ब्रह्मरूपा।
जयति भुवन माता चिन्मयी मोक्षरूपा तानुभय महेशो वाङ्मयः शब्दरूपः।।

अनामिका शान्तिदोक्ता मध्यमायुकरी भवेत्। अंगुष्ठः पुष्टि वः प्रोक्तस्तर्जनी मोक्ष दायिनी।।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः। तिलकं ते प्रयच्छन्तु इष्टकामार्थ सिद्धये।।
चन्दनस्य महत् पुण्यं पवित्रं पाप नाशनम्। आपदां हरते नित्यं लक्ष्मी तिष्ठति सर्वदा।।
तिलकं विप्रहस्तेन मातृहस्तेन भोजनम्। दानं तु स्वात्म हस्तेन देहि मे मधुसूदनम्।।

बंशी विभूषित करान्नवनीरदाभात् पीताम्वरादरुणबिम्बफलाधरोष्ठात्।
पूर्णेन्दु सुन्दरमुखादरविन्द नेत्रात् कृष्णात् परं किमपि तत्वमहं न जाने।।

सप्तघृतमातृका-पूजन

श्रीः लक्ष्मीश्च धृति मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती।
मांगल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः।।

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः।।

गुडेनैकीकरणम् – श्री पूर्व सप्त मातृश्च घृत मातृस्तथैव च।
गुडेन मेलयिष्यामि ताः सर्वार्थ प्रसाधिकाः।।

आवाहन -स्थापन –

1. ॐ भूर्भुवःस्वः श्रियै नमः, श्रियमावाहयामि, स्थापयामि।
2. ॐ भूर्भुवःस्वः लक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मीमावाहयामि, स्थापयामि।
3. ॐ भूर्भुवःस्वः धृत्यै नमः, धृतिमावाहयामि, स्थापयामि।
4. ॐ भूर्भुवःस्वः मेधायै नमः, मेधामावाहयामि, स्थापयामि।
5. ॐ भूर्भुवःस्वः स्वाहायै नमः, स्वाहामावाहयामि, स्थापयामि।
6. ॐ भूर्भुवःस्वः प्रज्ञायै नमः, प्रज्ञामावाहयामि, स्थापयामि।
7. ॐ भूर्भुवःस्वः सरस्वत्यै नमः, सरस्वतीमावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ गुं समिमं दधातु। विश्वे देवा सऽइह मादयन्तामोंऽ३ प्रतिष्ठ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्र्यादिसप्त वसोर्द्धारा देवताभ्यो नमः।
इति षोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् – नमस्करोमि

ॐ यदंगत्वेन भो देव्यः पूजिता विधिमार्गतः।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम्।।

।। अनया पूजया श्र्यादिवसोर्धारादेवताः प्रीयन्तां न मम।।

दक्षिणा विप्रमुद्दिश्य तत्काले तु न दीयते। एकरात्रे व्यतीते तु तद्दानं द्विगुणं भवेत्।।
मासे शतगुणं प्रोक्तं द्विमासे तु सहस्रकम्। संवत्सरे व्यतीते तु सो दाता नरकं व्रजेत्।।

आयुष्यमन्त्रजपः- ॐ आयुष्यं वर्चस्य गुं रायस्पोषमौद्भिदम्।
इद गुं हिरण्यं वर्चस्यज्जैत्राया विशतादु माम्।।

ॐ न तद्रक्षा गुं सि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमज गुं ह्येतत्। यो बिभर्ति दाक्षायण गुं हिरण्य गुं स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दार्घमायुः।।

ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्य गुं शतानीकाय सुमनस्य मानाः।
तन्मऽआबध्नामि शत शारदाया युष्मान् जर दष्टिर्यथा सम्।।
ॐ आयुष्यं आयुष्यं आयुष्यम्।

।। इति मन्त्रान् जपत्वा रक्षासूत्रं सप्तघृतमातृकार्पणमस्तु।।

अथ सांकलिपक विधिना नान्दीश्राद्ध प्रयोगः

प्रश्न- नान्दी श्राद्ध क्यों करते है?

उत्तर- नान्दी श्राद्ध पितरों की प्रसन्नता और कुल की वृद्धि के लिए किया जाता हैं एवं पूजन, यज्ञ व विवाहादि में नान्दी श्राद्ध करने के बाद कर्मकर्ता को जनन-मरण का सूतक मान्य नहीं होता हैं। विष्णुपुराण का वचन है- ॐ व्रत-यज्ञ-विवाहेषु श्राद्धे होमेऽर्चने जपे।
प्रारब्धे सूतके न स्यादनारब्धे तु सूतकम्।।

श्रद्धया दीयते यत् तत् श्राद्धम्

पूर्व

(1)
विश्वदेवा

उत्तर				दक्षिण
	3. वृद्धप्रमातामह 2. प्रमातामह 1. सपत्नीमातामह (4)	3. प्रपितामह 2. पितामह 1. पितृ (3)	3. प्रपितामही 2. पितामही 1. मातृ (2)	

पश्चिम

संकल्पः -अद्य पूर्वोच्चारित.... शुभपुण्यतिथौ यजमानस्य गोत्रः नाम्नः सांकल्पिक विधिना नान्दीश्राद्धं करिष्ये।

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्।।
ॐ पितृभ्यो नमः, आवाहयामि पूजयामि।

पाद प्रक्षालनम् –

1. ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः
   भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृद्धिः।।
2. ॐ मातृपितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः
   भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृद्धिः।।
3. ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः
   भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृद्धिः।।
4. ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृद्धिः।

आसनदानम्–

1. ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।।
2. ॐ मातृपितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्न्युवन्त्यो भवन्त्यः तथा प्राप्नुवामः।।
3. ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।।
4. ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।।

गन्धादिदानम् –

1. ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः
भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।।

2. ॐ मातृपितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः
भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।।

3. ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः
भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।।

4. ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाःनान्दीमुखाः
भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।।

भोजन निष्क्रयद्रव्य दानम् –

1. ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः
भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मण भोजनपर्याप्ताऽऽमान्न
निष्क्रय भूतं द्रव्यम् अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।।

2. ॐ मातृपितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदं
युग्मब्राह्मण भोजनपर्याप्ताऽऽमान्न निष्क्रय भूतं द्रव्यम्
अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।।

3. ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं
युग्मब्राह्मण भोजनपर्याप्ताऽऽमान्न निष्क्रय भूतं द्रव्यम्
अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।।

4. ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः
भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मण भोजनपर्याप्ताऽऽमान्न निष्क्रय भूतं
द्रव्यम् अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।।

सक्षीर यवमुदकदानम् – दूध, जव एवं जल मिलाकर अर्पण करें।

1. ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् ।।
2. ॐ मातृपितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम् ।।
3. ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् ।।
4. ॐ मातामहप्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् ।

जलाऽक्षतपुष्पप्रदानम्–चतुर्थस्थानेषु – ॐ शिवा आपः सन्तु इति जलम्। सौमनस्यमस्तु इति पुष्पम्। अक्षतं चाऽरिष्टं चास्तु इत्यक्षतान्।

जलधारादानम् –पितरों के लिए अंगूठे की ओर से या पूर्वाग्र जलधारा अर्पण करें।

अघोराः पितरः सन्तु। सन्त्वघोरा पितरः। इति पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात्।

आशीर्ग्रहणम्– ॐ गोत्रं नो वर्धताम्। वर्धतां वो गोत्रम्। दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम्। अभिवर्द्धन्तां वो दातारः। वेदाश्च नोऽभिवर्द्धन्ताम्। अभिवर्द्धन्तां वो वेदाः। सन्ततिर्नोऽभिवर्द्धताम्। अभिवर्द्धन्तां वः सन्ततिः। श्रद्धा च मा व्यगमत्। माव्यगमद्वःश्रद्धा। बहुदेयं च नोऽस्तु। अस्तु वो बहुदेयम्। अन्न च नो बहु भवेत्। भवतु वो बह्वन्नम्। अतिथींश्च लभेमहि। अतिथींश्च लभध्वम्। याचितारश्च नः सन्तु। सन्तु वो याचितारः मा च याचिष्म कश्चन। एषा सत्याः आशिषः सन्तु। सन्त्वेताः सत्याः आशिषः।

दक्षिणादानम् –

1. ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक-यवमूल निष्क्रयणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।
2. ॐ मातृपितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक- यवमूल निष्क्रयणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।

3. ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक- यवमूल निष्क्रयणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।

4. ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाःनान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक-यवमूल निष्क्रयणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।

ॐ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ२ऽइयक्षते। ॐ इडामग्ने पुरुद गुं स गुं सनि गोः शश्वत्तम गुं हव मानाय साध। स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्त्वस्मे।। नान्दीश्राद्धं सम्पन्नम्। सुसम्पन्नम्।

श्रीकर्मांगदेवताः प्रीयन्तां वृद्धिः। ॐ विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्।

विसर्जनम् – ॐ वाजेवाजे वत वाजिनो नो धनेषु विप्रा ऽअमृता ऽऋतज्ञाः। अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः।। ॐ आ मा वाजस्य प्रसवो जगम्यादेमे द्यावा पृथिवी विश्वरूपे। आ मा गन्तां पितरा मातरा चा मा सोमोऽअमृतत्त्वेन गम्यात्।।

हस्ते जलमादाय – मयाऽऽचरितेऽऽस्मिन्सांकल्पिक विधिना नान्दीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टब्राह्मणानां वचनाच्छ्रीनान्दीमुख प्रसादाच्च सर्वः परिपूर्णोऽस्तु। अस्तु परिपूर्णः।

। अनेन सांकल्पिक विधिना नान्दीश्राद्धेन नान्दीमुखाः पितरः प्रीयन्ताम्।

देव ब्राह्मण वन्दनाद् गुरुवचः संपादनात् प्रत्यहं
साधूनामभिभाषणात् श्रुतिशिरः श्रेयः कथाकर्णनात्।
होमादध्वर दर्शनात् शुचिमनो भावात् जपात् दानतो
नो कुर्वन्ति कदाचिदेव पुरुषस्यैव ग्रहाः पीड़नम्।।

आचार्यादिवरणम्

उदङ्मुखमाचार्यमुपवेश्य श्रद्धापूर्वकं गन्धादिभिः सम्पूज्य **वरणसामग्रीमादाय-** ॐ तत्सद् अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकप्रवरान्वितः अमुकशर्मा ऽहम् अमुकगोत्रोत्पन्नममुक- प्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत-वाजसनेय माध्यन्दिनीय शाखाध्यायिनम् अमुकशर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् कर्त्तव्ये अमुकयागाख्ये कर्मणि दास्यमानैः एभिर्वरणद्रव्यैः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे। वृतो ऽस्मीत्याचार्यः।

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः।
तथात्वं मम यज्ञे ऽस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत।।

ब्रह्मवरणम् - अद्य पूर्वोच्चारित... अस्मिन् कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुक गोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे।

ततो ब्रह्मावृतो ऽस्मीति प्रतिवचनं ब्रूयात्।
यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्वलोक पितामहः।
तथा त्वं मम यज्ञे ऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम।।

ऋत्विक्वरणम् - अस्मिन् कर्त्तव्ये अमुकयागाख्ये कर्मणि दास्यमानैः एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं ऋत्विक्त्वेन त्वामहं वृणे।

वृतोऽस्मि इति विप्रः प्रतिवचनम्।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्य माप्यते।।

ततो यजमानः करसम्पुटं कृत्वा सर्वान् प्रार्थयेत् -
प्रार्थना - अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः।
देवध्यानरताः नित्यं प्रसन्न मनसः सदा।।

अदुष्ट भाषणाः सन्तु मा सन्तु परनिन्दकाः।
ममापि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि।।

ऋत्विजश्च यथा पूर्वं शक्रादीनां मखेऽभवन्।
यूयं तथा मे भवत ऋत्विजो द्विजसत्तमाः।।

अस्मिन्कर्मणि ये विप्राः वृता गुरुमुखादयः।
सावधानाः प्रकुर्वन्तु स्वं स्वं कर्म यथोदितम्।।

अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया।
सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं कर्मेदं विधि पूर्वकम्।।

यजमानः - यथा विहितं कर्म कुरु।

विप्रः - यथा ज्ञानं करवाणि (करवामः)।।

आचार्यद्वारा यजमानहस्ते रक्षाबन्धनम् -

ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्य गुं शतानीकाय सुमनस्य मानाः।
तन्नऽआबध्नामि शत शारदाया युष्मान् जर दष्टिर्यथा सम्।।

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वामनुबध्नामि रक्षे मा चल मा चल।।

यजमानपत्न्याः वामहस्ते कङ्कणबन्धनम् -

ॐ तं पत्नी भिरनु गच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृ भिरुतवा हिरण्यैः।
नाकं गृभ्ण्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेऽअधिरोचने दिवः।।

गृहयज्ञ फलावाप्त्यै कङ्कणं सूत्रनिर्मितम्।
हस्ते बध्नामि सुभगे त्वं जीव शरदां शतम्।।

दिग्रक्षणम् - पूर्वोक्त रीत्या कार्यम् (पृष्ठ क्र. 14)।

पञ्चगव्यकरणम् - ॐ यत्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके।
प्राशनात् पंचगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम्।।

अथ जलयात्रा विधिः

कर्मारम्भदिने यजमानः पूजासामग्रीं गृहीत्वा आचार्यादि वेदमन्त्रोच्चारण, भगवन्नामकीर्तन, वाद्यघोषपूरस्सरमाचार्यादिऋत्विग्भिः नगरवासिभिः सुवासनीभिश्च सह नदी जलाशयं वा गच्छेत्।
नदी या जलाशय जाकर पूर्व या उत्तरमुख बैठकर यजमान संकल्प करें।

संकल्पः – अद्य पूर्वोच्चारित... शुभपुण्यतिथौ यजमानस्य गोत्रः नाम्नः अमुकयाग कर्मणः निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थ वरुणदेवताप्रीत्यर्थं वरुणदेवस्य जल – जीव – स्थल मातृणां च आवाहनं स्थापनं पूजनं च अहं करिष्ये।

जल के पास में चांवल के द्वारा नौ कोष्ट बनाकर सभी दिशाओं व मध्य में नौ कलश और तीन पंक्ति में सात-सात अक्षतपुञ्ज पर मातृकाओं को स्थापित करें। फिर जल से सभी कलश भरके गन्धाक्षतपुष्पादि से पूजा करें।

(1) जलमातृकावाहनपूजनम् –

1. ॐ मत्स्यै नमः मत्सीमावाहयामि स्थापयामि।
2. ॐ कूर्म्यै नमः कूर्मीमावाहयामि स्थापयामि।
3. ॐ वाराह्यै नमः वाराहीमावाहयामि स्थापयामि।
4. ॐ दर्दुर्यै नमः दर्दुरीमावाहयामि स्थापयामि।
5. ॐ मकर्यै नमः मकरीमावाहयामि स्थापयामि।
6. ॐ जलूक्यै नमः जलूकीमावाहयामि स्थापयामि।
7. ॐ तन्तुक्यै नमः तन्तुकीमावाहयामि स्थापयामि।

"ॐ मत्स्यादिजलमातृभ्यो नमः।"

(2) जीवमातृकावाहनपूजनम् -

1. ॐ कुमार्यै नमः कुमारीमावाहयामि स्थापयामि।
2. ॐ धनदायै नमः धनदामावाहयामि स्थापयामि।
3. ॐ नन्दायै नमः नन्दामावाहयामि स्थापयामि।
4. ॐ विमलायै नमः विमलामावाहयामि स्थापयामि।
5. ॐ मंगलायै नमः मंगलामावाहयामि स्थापयामि।
6. ॐ अचलायै नमः अचलामावाहयामि स्थापयामि।
7. ॐ पद्मायै नमः पद्मामावाहयामि स्थापयामि।

"ॐ कुमार्यादिजमीवमातृभ्यो नमः।"

(3) स्थलमातृकावाहनपूजनम् -

1. ॐ ऊर्म्यै नमः ऊर्मीमावाहयामि स्थापयामि।
2. ॐ लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि।
3. ॐ महामायायै नमः महामायामावाहयामि स्थापयामि।
4. ॐ पानदेव्यै नमः पानदेवीमावाहयामि स्थापयामि।
5. ॐ वारुण्यै नमः वारुणीमावाहयामि स्थापयामि।
6. ॐ निर्मलायै नमः निर्मलामावाहयामि स्थापयामि।
7. ॐ गोधायै नमः गोधामावाहयामि स्थापयामि।

"ॐ ऊर्म्यादिस्थलमातृभ्यो नमः।"

सर्वोपचारैः पूजयेत्। पश्चात् दशसु दिक्षु दशदिक्पालानां पूजनम्।

ततः नद्यां जलाशये वा नदीस्तीर्थानि चावाहयेत्।

ॐ काशी कुशस्थली मायाऽवन्त्ययोध्या मधोः पुरी।
शालिग्रामः सगोकर्णो नर्मदा च सरस्वती ।। 1।।
आगच्छन्तु सरिज्ज्येष्ठा गंगा पापप्रणाशिनी।
नीलोत्पल दलश्यामा पद्महस्ताम्बुजेक्षणा।। 2।।

आयातु यमुना देवी कूर्मयानस्थिता सदा।
प्राची सरस्वती पुण्या पयोष्णी गौतमी तथा।। 3।।
ऊर्मिला चन्द्रभागा च सरयू गण्डकी तथा।
वितस्ताच विपाशा च नर्मदा च पुनः पुनः।। 4।।
काबेरी कौशिकी चैव गोदावरी महानदी।
मन्दाकिनी वसिष्ठा च तुंगभद्रा शशिप्रभा।। 5।।
अमरेशः प्रभासञ्च नैमिषं पुष्करं तथा।
कुरुक्षेत्रं प्रयागं च गंगासागर संगमम्।। 6।।
एता नद्यञ्च तीर्थानि यानि सन्ति महीतले।
तानि सर्वाणि आयान्तु पावनार्थ द्विजन्मनाम्।। 7।।

ॐ गंगादिनदीभ्यो नमः,पुष्करादितीर्थभ्यो नमः,
इति पञ्चोपचारैः पूजनं कुयात्।

फिर जल के मध्य में वरुणदेव का पूजन करके जल में बारह घी की आहुति प्रदान करें।

1. ॐ अद्भ्यः स्वाहा।
2. ॐ वार्भ्यः स्वाहा।
3. ॐ उदकाय स्वाहा।
4. ॐ तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा।
5. ॐ स्रवन्तीभ्यः स्वाहा।
6. ॐ स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा।
7. ॐ कूप्याभ्यः स्वाहा।
8. ॐ सूद्याभ्यः स्वाहा।
9. ॐ धार्याभ्यः स्वाहा।
10. ॐ अर्णवाय स्वाहा।
11. ॐ समुद्राय स्वाहा।
12. ॐ सरिराय स्वाहा।

पश्चात् नद्यां श्रीफलं प्रक्षिपेत्। ततो देवानां विसर्जनं कृत्वा आचार्यादिऋत्विजां सुवासिनीनाञ्च पूजनं विधाय दक्षिणां च दद्यात्। पश्चात् पूजितान् नवकलशान् उत्थाप्य नवसंख्यानां सुवासिनीनां मस्तकोपरि धारयेत्। ततो यजमानः वेदमन्त्रः भगवन्नामकीर्तनं कुर्वन् आचार्यादिऋत्विग्भिः सह यज्ञस्थलं प्रति गच्छेत्।

मार्ग पर जाते हुए आधे मार्ग में क्षेत्रपाल भैरवादि का पूजन कर बलिदान करें।

***

।। अथ वर्धिनीकलश स्थापनम् ।।

अद्य पूर्वोच्चारित एवं गुणगणविशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुक नाम्नः अमुक यागस्यांगत्त्वेन वर्धिनीकलशदेवतास्थापनं पूजनं च करिष्ये।
हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा आवाहयेत् -

(1) ॐ वर्धिन्यै नमः, वर्धिनीम् आवाहयामि स्थापयामि।

(2) ॐ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणम् 0।
(3) ॐ रुद्राय नमः, रुद्रम् 0।
(4) ॐ विष्णवे नमः, विष्णुम् 0।
(5) ॐ मातृभ्यो नमः, मातृः 0।
(6) ॐ सागरेभ्यो नमः, सागरान् 0।
(7) ॐ मह्यै नमः, महीम् 0।
(8) ॐ नदीभ्यो नमः, नदीः 0।
(9) ॐ तीर्थेभ्यो नमः, तीर्थानि 0।
(10) ॐ गायत्र्यै नमः, गायत्रीम् 0।
(11) ॐ ऋग्वेदाय नमः, ऋग्वेदम् 0।
(12) ॐ यजुर्वेदाय नमः, यजुर्वेदम् 0।
(13) ॐ सामवेदाय नमः, सामवेदम् 0।
(14) ॐ अथर्ववेदाय नमः, अथर्ववेदम् 0।
(15) ॐ अग्नये नमः, अग्निम् 0।
(16) ॐ आदित्येभ्यो नमः, आदित्यान् 0।
(17) ॐ एकादशरुद्रेभ्यो नमः, एकादशरुद्रान् 0।
(18) ॐ मरुद्भ्यो नमः, मरुतः 0।
(19) ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः, गन्धर्वान् 0।
(20) ॐ ऋषये नमः, ऋषिम् 0।
(21) ॐ वरुणाय नमः, वरुणम् 0।
(22) ॐ वायवे नमः, वायुम् 0।
(23) ॐ धनदाय नमः, धनदम् 0।
(24) ॐ यमाय नमः, यमम् 0।
(25) ॐ धर्माय नमः, धर्मम् 0।
(26) ॐ शिवाय नमः, शिवम् 0।
(27) ॐ यज्ञपुरुषाय नमः, यज्ञपुरुषम् 0।
(28) ॐ विश्वेभ्यो-देवेभ्यो नमः, विश्वान् देवान् 0।
(29) ॐ स्कन्धाय नमः, स्कन्धम् 0।
(30) ॐ गणेशाय नमः, गणेशम् 0।
(31) ॐ यक्षाय नमः, यक्षम् 0।
(32) ॐ अरुन्धत्यै नमः, अरुन्धतीम् 0।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ गुं समिमं दधातु।
विश्वे देवा सऽइह मादयन्तामों ३ प्रतिष्ठ।।

भो वर्धिनीकलशाधिष्ठित ब्रह्मादिदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदो भवत। यथाशक्ति संपूज्य प्रार्थयेत्।

ॐ पुनस्त्वादित्या रुद्द्रा व्वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो व्वसुनीथ यज्ञैः।
घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।।

ॐ वर्धिनी त्वं महाभागा सर्वतीर्थोदकान्विता। अतस्त्वां प्रार्थये देवि भव त्वं कुलवर्धिनी।।
ॐ वर्धिनी त्वं महापता महातीर्थोदकान्विता। वर्धिनी त्वं जगन्माता भव त्वं कुलवर्धिनी।।

हस्ते जलमादाय - अनया पूजया वर्धिनीकलशाधिष्ठितब्रह्मादिदेवताः प्रीयन्ताम्।

गंगा सिन्धु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा कावेरी सरयूमहेन्द्रतनयाश्चर्मण्वती वेदिका। क्षिप्रा वेत्रवती महासुरनदी ख्याता गया गण्डकी पुण्याः पुण्यजलैः समुद्रसहिताः कुर्वन्तु वो मंगलम्।।

वास्तु प्रयोगः

कर्ता पूर्वदिने देहशुद्ध्यर्थं प्रायश्चितं कृत्वा संकल्पं कुर्यात् - अद्य मम सर्वापच्छान्ति पूर्वकं दीर्घायुर्विपुल धनधान्य पुत्रपौत्राद्यनवच्छिन्न सन्तति वृद्धि स्थिरलक्ष्मी-कीर्ति-लाभ- शत्रुपराजय सदभीष्ट सिद्ध्यर्थं सुवर्ण रजत ताम्र त्रपुसीसक कांस्य लोह पाषाण आदि अष्टशल्य मेदिनी दोषायव्ययाद्यन्यथा भवन दोष परिहारार्थं नानाविध जीव हिंसादिजन्य सकल दोष परिहार पूर्वक सर्वारिष्टोपशान्त्यर्थम् अस्मिन्गृहे चिरकाल निवासार्थं श्रीपरमेश्वर प्रीतये सग्रहमखां शालाकर्म पूर्विकां वास्तुशान्तिं करिष्ये ।।

।। शालाकर्मप्रयोगः ।।

शालाभ्यन्तरे प्रादेश मात्रे स्थण्डिलं कृत्वा तदुपरि अग्निस्थापनं कुर्यात्। आज्यसंस्कारान् कृत्वा आग्नेयादि क्रमेणावटमभिजुहुयात् ।।

ॐ अच्युताय भौमाय स्वाहा इदमच्युताय भौमाय न मम ।। एवं चतुर्षु अवटेषु होमः ।।

(इस प्रकार भवन के अग्निकोण से आरम्भ करके चारों कोणों में घृतधारा प्रदान करके पञ्चोपचार पूजन करें।)

चौंसठ कोष्ठात्मक नाम मन्त्रेण वास्तु पूजनम् -(1)

अद्य पूर्वोच्चारित एवं गुणविशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुक नाम्नः अमुकयागस्यांगत्त्वेन अस्मिञ्चतुःषष्टि कोष्टात्मके वास्तुपीठे शिख्यादिवास्तुमण्डलदेवतानाम् आवाहनंपूजनं च करिष्ये।

वास्तुपीठस्याग्नेयादि क्रमेण शंकुरोपणम् -

आग्नेय्याम् - विशन्तु भूतले नागा लोक पालाश्च सर्वतः।
मण्डपेऽत्राव तिष्ठन्तु ह्यायुर्बल कराः सदा ।। 1 ।।

नैर्ऋत्याम् - विशन्तु भूतले नागा लोक पालाश्च सर्वतः।
मण्डपेऽत्राव तिष्ठन्तु ह्यायुर्बल कराः सदा ।। 2 ।।

वायव्याम् - विशन्तु भूतले नागा लोक पालाश्च सर्वतः।
मण्डपेऽत्राव तिष्ठन्तु ह्यायुर्बल कराः सदा ।। 3 ।।

ईशान्याम् - विशन्तु भूतले नागा लोक पालाश्च सर्वतः।
मण्डपेऽत्राव तिष्ठन्तु ह्यायुर्बल कराः सदा।।4।।

अनेनैव मन्त्रेण त्रिगुणीकृत सूत्रेण सर्वेषां वेष्टनं कुर्यात्। अग्नेयादिकोणेषु क्रमेण शंकुपार्श्वे माषभक्तदध्योदनबलिं दद्यात् -

आग्नेय्यां शंकु समीपे बलिं निधाय हस्ते जलं गृहीत्वा-

ॐ अग्निभ्योऽप्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रिताः।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्य मोदनमुत्तमम्।। इति जलमुत्सृजेत्।

नैर्ऋत्यां शंकु समीपे बलिं निधाय हस्ते जलं गृहीत्वा-

ॐ नैर्ऋत्याधिपतिश्चैव नैर्ऋत्यां ये च राक्षसाः।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्य मोदनमुत्तमम्।। इति जलमुत्सृजेत्।

वायव्यां शंकु समीपे बलिं निधाय हस्ते जलं गृहीत्वा-

ॐ नमो वै वायुरक्षेभ्यो ये चान्ये तान्समाश्रिताः।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्य मोदनमुत्तमम्।। इति जलमुत्सृजेत्।

ईशान्यां शंकु समीपे बलिं निधाय हस्ते जलं गृहीत्वा-

ॐ रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रिताः।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्य मोदनमुत्तमम्।। इति जलमुत्सृजेत्।

आग्नेयादिक्रमेण शंकुदेवताभ्यो नमः पञ्चोपचारैः सम्पूज्य नमस्करोमि। अनेन शंकुरोपणपूर्वकबलिदानेन आग्नेयादिविदिदेवताः प्रीयन्तां न मम।

रेखाकरणं पूजनञ्च - वास्तुपीठे सुवर्णशलाकया कुशशलाकया वा पश्चिमत आरभ्य प्रागायता उदक् संस्थाः, दक्षिणत आरभ्य उदगायताः प्राक्संस्थाः समचतुरस्रा नव नव रेखा विदध्यात। प्रथमं पश्चिमत आरभ्य प्रागायता उदक्संस्था नव रेखाः कार्याः।

1. ॐ लक्ष्म्यै नमः। 4. ॐ सुप्रियायै नमः। 7. ॐ सुभगायै नमः।
2. ॐ यशोवत्यै नमः। 5. ॐ विमलायै नमः। 8. ॐ सुमत्यै नमः।
3. ॐ कान्तायै नमः। 6. ॐ शिवायै नमः। 9. ॐ इडायै नमः।।

ततः दक्षिणत आरम्भ उदगायताः पूर्वादिक्संस्था नव रेखाः कार्याः।

1. ॐ धन्यायै नमः। 4. ॐ स्थिरायै नमः। 7. ॐ निशायै नमः।
2. ॐ प्राणायै नमः। 5. ॐ भद्रायै नमः। 8. ॐ विरजायै नमः।
3. ॐ विशालायै नमः। 6. ॐ जयायै नमः। 9. ॐ विभवायै नमः।।

"रेखादेवताभ्यो नमः" इति नाममन्त्रेण पञ्चोपचारैः पूजयेत्।

वास्तुमण्डल देवता आवाहन स्थापन –

1 ॐ शिखिने नमः शिखिनम् आवाहयामि स्थापयामि।
2 ॐ पर्जन्याय नमः पर्जन्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
3 ॐ जयन्ताय नमः जयन्तम् आवाहयामि स्थापयामि।
4 ॐ कुलिशायुधाय नमः कुलिशायुधम् आवाहयामि स्थापयामि।
5 ॐ सूर्याय नमः सूर्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
6 ॐ सत्याय नमः सत्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
7 ॐ भृशाय नमः भृशम् आवाहयामि स्थापयामि।
8 ॐ आकाशाय नमः आकाशम् आवाहयामि स्थापयामि।
9 ॐ वायवे नमः वायुम् आवाहयामि स्थापयामि।
10 ॐ पूष्णे नमः पूषाणम् आवाहयामि स्थापयामि।
11 ॐ वितथाय नमः वितथम् आवाहयामि स्थापयामि।
12 ॐ गृहक्षताय नमः गृहक्षतम् आवाहयामि स्थापयामि।
13 ॐ यमाय नमः यमम् आवाहयामि स्थापयामि।
14 ॐ गन्धर्वाय नमः गन्धर्वम् आवाहयामि स्थापयामि।
15 ॐ भृंगराजाय नमः भृंगराजम् आवाहयामि स्थापयामि।
16 ॐ मृगाय नमः मृगम् आवाहयामि स्थापयामि।
17 ॐ पितृभ्यो नमः पितृन् आवाहयामि स्थापयामि।
18 ॐ दौवारिकाय नमः दौवारिकम् आवाहयामि स्थापयामि।
19 ॐ सुग्रीवाय नमः सुग्रीवम् आवाहयामि स्थापयामि।
20 ॐ पुष्पदन्ताय नमः पुष्पदन्तम् आवाहयामि स्थापयामि।

21	ॐ	वरुणाय	नमः	वरुणम्	आवाहयामि	स्थापयामि।
22	ॐ	असुराय	नमः	असुरम्	आवाहयामि	स्थापयामि।
23	ॐ	शोषाय	नमः	शोषम्	आवाहयामि	स्थापयामि।
24	ॐ	पापाय	नमः	पापम्	आवाहयामि	स्थापयामि।
25	ॐ	रोगाय	नमः	रोगम्	आवाहयामि	स्थापयामि।
26	ॐ	अहये	नमः	अहिम्	आवाहयामि	स्थापयामि।
27	ॐ	मुख्याय	नमः	मुख्यम्	आवाहयामि	स्थापयामि।
28	ॐ	भल्लाटाय	नमः	भल्लाटम्	आवाहयामि	स्थापयामि।
29	ॐ	सोमाय	नमः	सोमम्	आवाहयामि	स्थापयामि।
30	ॐ	सर्पाय	नमः	सर्पम्	आवाहयामि	स्थापयामि।
31	ॐ	अदित्यै	नमः	अदितिम्	आवाहयामि	स्थापयामि।
32	ॐ	दित्यै	नमः	दितिम्	आवाहयामि	स्थापयामि।
33	ॐ	अद्भ्यो	नमः	अपः	आवाहयामि	स्थापयामि।
34	ॐ	सावित्राय	नमः	सावित्रम्	आवाहयामि	स्थापयामि।
35	ॐ	जयाय	नमः	जयम्	आवाहयामि	स्थापयामि।
36	ॐ	रुद्राय	नमः	रुद्रम्	आवाहयामि	स्थापयामि।
37	ॐ	अर्यम्णे	नमः	अर्यमाणम्	आवाहयामि	स्थापयामि।
38	ॐ	सवित्रे	नमः	सवितारम्	आवाहयामि	स्थापयामि।
39	ॐ	विवस्वते	नमः	विवस्वन्तम्	आवाहयामि	स्थापयामि।
40	ॐ	विबुधाधिपाय	नमः	विबुधाधिनम्	आवाहयामि	स्थापयामि।
41	ॐ	मित्राय	नमः	मित्रम्	आवाहयामि	स्थापयामि।
42	ॐ	राजयक्ष्मणे	नमः	राजयक्ष्मणम्	आवाहयामि	स्थापयामि।
43	ॐ	पृथ्वीधराय	नमः	पृथ्वीधरम्	आवाहयामि	स्थापयामि।
44	ॐ	आपवत्साय	नमः	आपवत्सम्	आवाहयामि	स्थापयामि।
45	ॐ	ब्रह्मणे	नमः	ब्रह्माणम्	आवाहयामि	स्थापयामि।
46	ॐ	चरक्यै	नमः	चरकीम्	आवाहयामि	स्थापयामि।
47	ॐ	विदार्यै	नमः	विदारीम्	आवाहयामि	स्थापयामि।

48 ॐ पूतनायै नमः पूतनाम् आवाहयामि स्थापयामि।
49 ॐ पापराक्षस्यै नमः पापराक्षसीम् आवाहयामि स्थापयामि।
50 ॐ स्कन्दाय नमः स्कन्दम् आवाहयामि स्थापयामि।
51 ॐ अर्यम्णे नमः अर्यमाणम् आवाहयामि स्थापयामि।
52 ॐ जृम्भकाय नमः जृम्भकम् आवाहयामि स्थापयामि।
53 ॐ पिलिपिच्छाय नमः पिलिपिच्छम् आवाहयामि स्थापयामि।
54 ॐ इन्द्राय नमः इन्द्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
55 ॐ अग्नये नमः अग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।
56 ॐ यमाय नमः यमम् आवाहयामि स्थापयामि।
57 ॐ निर्ऋतये नमः निर्ऋतिम् आवाहयामि स्थापयामि।
58 ॐ वरुणाय नमः वरुणम् आवाहयामि स्थापयामि।
59 ॐ वायवे नमः वायुम् आवाहयामि स्थापयामि।
60 ॐ कुबेराय नमः कुबेरम् आवाहयामि स्थापयामि।
61 ॐ ईश्वराय नमः ईश्वरम् आवाहयामि स्थापयामि।
62 ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणम् आवाहयामि स्थापयामि।
63 ॐ अनन्ताय नमः अनन्तम् आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ गुं समिमं दधातु।
विश्वे देवा सऽइह मादयन्तामोंꣳ प्रतिष्ठ।।
"शिख्यादिवास्तुमण्डलदेवताभ्यो नमः"।

इति षोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् -

वास्तुदेव नमस्तेऽस्तु भूशय्याभिरत प्रभो।
मद्गृहे धनधान्यादि समृद्धिं कुरु सर्वदा।।

ॐ नागपृष्ठ समारूढं, शूलहस्तं महाबलम्।
पाताल नायकं देवं, वास्तुदेवं नमाम्यहम्।।

ॐ अनेन कृतेन पूजनेन शिख्यादिवास्तुमण्डलदेवताः प्रीयन्तां न मम।

***

इक्यासी कोष्ठात्मक नाम मन्त्रेण वास्तु पूजनम् - (2)

अद्य पूर्वोच्चारित एवं गुणविशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुक नाम्नः अमुकयागस्यांगत्त्वेन अस्मिन् एकाशीति कोष्टात्मके वास्तुपीठे शिख्यादिवास्तुमण्डल देवतानाम् आवाहनंपूजनं च करिष्ये।

वास्तुपीठस्याग्नेयादि क्रमेण शंकुरोपणम् -

आग्नेय्याम् - विशन्तु भूतले नागा लोक पालाश्च सर्वतः।
मण्डपेऽत्राव तिष्ठन्तु ह्यायुर्बल कराः सदा।। 1।।

नैर्ऋत्याम् - विशन्तु भूतले नागा लोक पालाश्च सर्वतः।
मण्डपेऽत्राव तिष्ठन्तु ह्यायुर्बल कराः सदा।। 2।।

वायव्याम् - विशन्तु भूतले नागा लोक पालाश्च सर्वतः।
मण्डपेऽत्राव तिष्ठन्तु ह्यायुर्बल कराः सदा।। 3।।

ईशान्याम् - विशन्तु भूतले नागा लोक पालाश्च सर्वतः।
मण्डपेऽत्राव तिष्ठन्तु ह्यायुर्बल कराः सदा।। 4।।

अनेनैव मन्त्रेण त्रिगुणीकृत सूत्रेण सर्वेषां वेष्टनं कुर्यात्।

आग्नेयादिकोणेषु क्रमेण शंकुपार्श्वे माषभक्तदध्योदनबलिं दद्यात् -

आग्नेय्यां शंकु समीपे बलिं निधाय हस्ते जलं गृहीत्वा-

ॐ अग्निभ्योऽप्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रिताः।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्य मोदनमुत्तमम्।। इति जलमुत्सृजेत्।

नैर्ऋत्यां शंकु समीपे बलिं निधाय हस्ते जलं गृहीत्वा-

ॐ नैर्ऋत्याधिपतिश्चैव नैर्ऋत्यां ये च राक्षसाः।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्य मोदनमुत्तमम्।। इति जलमुत्सृजेत्।

वायव्यां शंकु समीपे बलिं निधाय हस्ते जलं गृहीत्वा-

ॐ नमो वै वायुरक्षेभ्यो ये चान्ये तानूसमाश्रिताः।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्य मोदनमुत्तमम्।। इति जलमुत्सृजेत्।

ईशान्यां शंकु समीपे बलिं निधाय हस्ते जलं गृहीत्वा-

ॐ रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रिताः।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्य मोदनमुत्तमम्।। इति जलमुत्सृजेत्।

आग्नेयादिक्रमेण शंकुदेवताभ्यो नमः पञ्चोपचारैः सम्पूज्य नमस्करोमि। अनेन शंकुरोपणपूर्वकबलिदानेन आग्नेयादिविदिदेवताः प्रीयन्तां न मम।

रेखाकरणं पूजनञ्च – वास्तुपीठे सुवर्णशलाकया कुशशलाकया वा पश्चिमत आरभ्य प्रागायता उदक् संस्थाः,दक्षिणत आरभ्य उदगायताः प्राक्संस्थाः समचतुरस्रा दश दश रेखा विदध्यात। प्रथमं पश्चिमत आरभ्य प्रागायता उदक्संस्था दश रेखाः कार्याः।

1. ॐ शान्तायै नमः।
2. ॐ यशोवत्यै नमः।
3. ॐ कान्तायै नमः।
4. ॐ विशालायै नमः।
5. ॐ प्राणवाहिन्यै नमः।
6. ॐ सत्यै नमः।
7. ॐ सुमत्यै नमः।
8. ॐ नन्दायै नमः।
9. ॐ सुभद्रायै नमः।
10. ॐ सुस्थिरायै नमः।

ततः दक्षिणत आरम्भ उदगायताः पूर्वादिक्संस्था दश रेखाः कार्याः।

1. ॐ हिरण्यायै नमः।
2. ॐ सुव्रतायै नमः।
3. ॐ लक्ष्म्यै नमः।
4. ॐ विभूत्यै नमः।
5. ॐ विमलायै नमः।
6. ॐ प्रियायै नमः।
7. ॐ जयायै नमः।
8. ॐ ज्वालायै नमः।
9. ॐ विशोकायै नमः।
10. ॐ इडायै नमः।

"रेखादेवताभ्यो नमः" इति नाममन्त्रेण पञ्चोपचारैः पूजयेत्।

वास्तुमण्डल देवता आवाहन स्थापन –

1 ॐ शिखिने नमः शिखिनम् आवाहयामि स्थापयामि।
2 ॐ पर्जन्याय नमः पर्जन्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
3 ॐ जयन्ताय नमः जयन्तम् आवाहयामि स्थापयामि।
4 ॐ कुलिशायुधाय नमः कुलिशायुधम् आवाहयामि स्थापयामि।
5 ॐ सूर्याय नमः सूर्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
6 ॐ सत्याय नमः सत्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
7 ॐ भृशाय नमः भृशम् आवाहयामि स्थापयामि।
8 ॐ आकाशाय नमः आकाशम् आवाहयामि स्थापयामि।
9 ॐ वायवे नमः वायुम् आवाहयामि स्थापयामि।
10 ॐ पूष्णे नमः पूषाणम् आवाहयामि स्थापयामि।

11 ॐ वितथाय नमः वितथम् आवाहयामि स्थापयामि।
12 ॐ गृहक्षताय नमः गृहक्षतम् आवाहयामि स्थापयामि।
13 ॐ यमाय नमः यमम् आवाहयामि स्थापयामि।
14 ॐ गन्धर्वाय नमः गन्धर्वम् आवाहयामि स्थापयामि।
15 ॐ भृंगराजाय नमः भृंगराजम् आवाहयामि स्थापयामि।
16 ॐ मृगाय नमः मृगम् आवाहयामि स्थापयामि।
17 ॐ पितृभ्यो नमः पितॄन् आवाहयामि स्थापयामि।
18 ॐ दौवारिकाय नमः दौवारिकम् आवाहयामि स्थापयामि।
19 ॐ सुग्रीवाय नमः सुग्रीवम् आवाहयामि स्थापयामि।
20 ॐ पुष्पदन्ताय नमः पुष्पदन्तम् आवाहयामि स्थापयामि।
21 ॐ वरुणाय नमः वरुणम् आवाहयामि स्थापयामि।
22 ॐ असुराय नमः असुरम् आवाहयामि स्थापयामि।
23 ॐ शोषाय नमः शोषम् आवाहयामि स्थापयामि।
24 ॐ पापाय नमः पापम् आवाहयामि स्थापयामि।
25 ॐ रोगाय नमः रोगम् आवाहयामि स्थापयामि।
26 ॐ अहये नमः अहिम् आवाहयामि स्थापयामि।
27 ॐ मुख्याय नमः मुख्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
28 ॐ भल्लाटाय नमः भल्लाटम् आवाहयामि स्थापयामि।
29 ॐ सोमाय नमः सोमम् आवाहयामि स्थापयामि।
30 ॐ सर्पाय नमः सर्पम् आवाहयामि स्थापयामि।
31 ॐ अदित्यै नमः अदितिम् आवाहयामि स्थापयामि।
32 ॐ दित्यै नमः दितिम् आवाहयामि स्थापयामि।
33 ॐ अद्भ्यो नमः अपः आवाहयामि स्थापयामि।
34 ॐ सावित्राय नमः सावित्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
35 ॐ जयाय नमः जयम् आवाहयामि स्थापयामि।
36 ॐ रुद्राय नमः रुद्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
37 ॐ अर्यम्णे नमः अर्यमाणम् आवाहयामि स्थापयामि।

युक्तं युक्तं त्येजद् वायुं युक्तं युक्तं च

38 ॐ सवित्रे नमः सवितारम् आवाहयामि स्थापयामि।
39 ॐ विवस्वते नमः विवस्वन्तम् आवाहयामि स्थापयामि।
40 ॐ विबुधाधिपाय नमः विबुधाधिनम् आवाहयामि स्थापयामि।
41 ॐ मित्राय नमः मित्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
42 ॐ राजयक्ष्मणे नमः राजयक्ष्मणम् आवाहयामि स्थापयामि।
43 ॐ पृथ्वीधराय नमः पृथ्वीधरम् आवाहयामि स्थापयामि।
44 ॐ आपवत्साय नमः आपवत्सम् आवाहयामि स्थापयामि।
45 ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणम् आवाहयामि स्थापयामि।
46 ॐ चरक्यै नमः चरकीम् आवाहयामि स्थापयामि।
47 ॐ विदार्यै नमः विदारीम् आवाहयामि स्थापयामि।
48 ॐ पूतनायै नमः पूतनाम् आवाहयामि स्थापयामि।
49 ॐ पापराक्षस्यै नमः पापराक्षसीम् आवाहयामि स्थापयामि।
50 ॐ स्कन्दाय नमः स्कन्दम् आवाहयामि स्थापयामि।
51 ॐ अर्यम्णे नमः अर्यमाणम् आवाहयामि स्थापयामि।
52 ॐ जृम्भकाय नमः जृम्भकम् आवाहयामि स्थापयामि।
53 ॐ पिलिपिच्छाय नमः पिलिपिच्छम् आवाहयामि स्थापयामि।
54 ॐ इन्द्राय नमः इन्द्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
55 ॐ अग्नये नमः अग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।
56 ॐ यमाय नमः यमम् आवाहयामि स्थापयामि।
57 ॐ निर्ऋतये नमः निर्ऋतिम् आवाहयामि स्थापयामि।
58 ॐ वरुणाय नमः वरुणम् आवाहयामि स्थापयामि।
59 ॐ वायवे नमः वायुम् आवाहयामि स्थापयामि।
60 ॐ कुबेराय नमः कुबेरम् आवाहयामि स्थापयामि।
61 ॐ ईश्वराय नमः ईश्वरम् आवाहयामि स्थापयामि।
62 ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणम् आवाहयामि स्थापयामि्।
63 ॐ अनन्ताय नमः अनन्तम् आवाहयामि स्थापयामि्।
64 ॐ उग्रसेनाय नमः उग्रसेनम् आवाहयामि स्थापयामि्।

65 ॐ डामराय नमः डामरम् आवाहयामि स्थापयामि।
66 ॐ महाकालाय नमः महाकालम् आवाहयामि स्थापयामि।
67 ॐ पिलिपिच्छाय नमः पिलिपिच्छम् आवाहयामि स्थापयामि।
68 ॐ हेतुकाय नमः हेतुकम् आवाहयामि स्थापयामि।
69 ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः त्रिपुरान्तकम् आवाहयामि स्थापयामि।
70 ॐ अग्निवैतालाय नमः अग्निवैतालम् आवाहयामि स्थापयामि।
71 ॐ असिवैतालाय नमः असिवैतालम् आवाहयामि स्थापयामि।
72 ॐ कालाय नमः कालम् आवाहयामि स्थापयामि।
73 ॐ करालाय नमः करालम् आवाहयामि स्थापयामि।
74 ॐ एकपादाय नमः एकपादम् आवाहयामि स्थापयामि।
75 ॐ भीमरूपाय नमः भीमरूपम् आवाहयामि स्थापयामि।
76 ॐ खेचराय नमः खेचरम् आवाहयामि स्थापयामि।
77 ॐ तलवासिने नमः तलवासिनम् आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्ठं यज्ञं गुं समिमं दधातु। विश्वे देवा सऽइह मादयन्तामोंः३ प्रतिष्ठ।।

"शिख्यादिवास्तुमण्डलदेवताभ्यो नमः" इति षोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् -

वास्तुदेव नमस्तेऽस्तु भूशय्याभिरत प्रभो।
मद्गृहे धनधान्यादि समृद्धिं कुरु सर्वदा।।

मण्डलोपरि ताम्रादिपूर्णपात्रं सहितं कलशं संस्थाप्य वास्त्वादिमूर्तीनामग्न्युत्तारणपूर्वक प्राणप्रतिष्ठा कुर्यात्।

अद्य पूर्वोच्चारित एवं गुणविशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ.... गोत्रः.... नाम्नः मया अस्या वास्तुमूर्तेः निर्माण विधौ अग्नि प्रतपन ताडनावघातादि दोष परिहारार्थम् अग्न्युत्तारणपूर्वकं तत्तद्देवतानां सान्निद्धयार्थं तत्तद्देवतानां प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये।

पात्रे वास्तुमूर्तिं निधाय ता घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धमिश्रित जलधारां पातयेत्। तत्र मन्त्राः -

ॐ समुद्रस्यत्त्वावकयाग्ने परिव्ययामसि। पावकोऽअस्म्मभ्य गुं शिवोभव। हिमस्यत्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि। पावकोऽअस्म्मभ्य गुं शिवोभव।। उपज्ज्मन्नुपवेतसेवतरनदीष्ष्वा। अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकिताभिरागहिसे मन्नो यज्ञम्पावकवर्ण्णं गुं शिवंकृधि। अपामिदन्न्ययन गुं समुद्रस्य निवेशनम्। अन्न्याँस्तेऽअस्मत्त पन्तुहेतयः पावकोऽअस्म्मभ्य गुं शिवोभव।। इत्युग्न्युत्तारणम्।

अथ प्राणप्रतिष्ठाप्रयोगः – अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि परा प्राणशक्तिर्देवता आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रों कीलकम् आसु वास्त्वादिसर्वासु मूर्तिषु प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हों ॐ क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ आं ह्रीं क्रों आसां मूर्तीनां प्राणा इह प्राणाः।।
ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हों ॐ क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ आं ह्रीं क्रों आसां मूर्तीनां जीव इह स्थितः।।
ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हों ॐ क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ आं ह्रीं क्रों आसां मूर्तीनां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायुपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।।

अनया प्रणवावृत्या आसां मूर्तीनां पञ्चदश संस्कारः सम्पद्यन्ताम्।।
हस्तेऽक्षतान्गृहीत्वा– ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं
यज्ञ गुं समिमं दधातु। विश्वे देवा सऽइह मादयन्तामोंऽ३ प्रतिष्ठ।।
ॐ एष वै प्रतिष्ठा नाम यज्ञोयत्रै तेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितम्भवति।
अमुकामुकदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत।।

ततो वास्तु मूर्तिम् एकस्मिन्पात्रे स्थापयित्वा हस्तेऽक्षतान् गृहीत्वा ध्यानं कुर्यात् –

वास्तु का मन्त्र – ॐ वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमी वो भवानः।
यत्त्वे महे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।

ध्रुव का मन्त्र – ॐ ध्रुवाऽसि ध्रुवोऽयं यजमानोऽस्मिन्नायतने प्रजया पशुभिर्भूयात्।
घृतेन द्यावा पृथिवी पूर्येथामिन्द्रस्य छदिरसि विश्व जनस्य छाया।।

सर्प का मन्त्र– ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः शिख्यादिवास्तुमण्डलदेवतासहिताय वास्तुध्रुवसर्पेभ्यो नमः इति आवाहनादिषोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत्।

वास्तुदेव नमस्तेऽस्तु भूशय्याभिरत प्रभो।
मद्गृहे धनधान्यादि समृद्धिं कुरु सर्वदा।।

***

वास्तु पायसबलिम्

(1) चौंसठ/इक्यासी कोष्ठात्मक नाम मन्त्रेण

01. ॐ शिखिने नमः एष पायस बलिर्न मम।
02. ॐ पर्जन्याय नमः0
03. ॐ जयन्ताय नमः0
04. ॐ कुलिशायुधाय नमः0
05. ॐ सूर्याय नमः0
06. ॐ सत्याय नमः0
07. ॐ भृशाय नमः0
08. ॐ आकाशाय नमः0
09. ॐ वायवे नमः0
10. ॐ पूष्णे नमः0
11. ॐ वितथाय नमः0
12. ॐ गृहक्षताय नमः0
13. ॐ यमाय नमः0
14. ॐ गन्धर्वाय नमः0
15. ॐ भृंगराजाय नमः0
16. ॐ मृगाय नमः0
17. ॐ पितृभ्यो नमः0
18. ॐ दौवारिकाय नमः0
19. ॐ सुग्रीवाय नमः0
20. ॐ पुष्पदन्ताय नमः0
21. ॐ वरुणाय नमः0
22. ॐ असुराय नमः0
23. ॐ शोषाय नमः0
24. ॐ पापाय नमः0
25. ॐ रोगाय नमः0
26. ॐ अहये नमः0
27. ॐ मुख्याय नमः0
28. ॐ भल्लाटाय नमः0
29. ॐ सोमाय नमः0
30. ॐ सर्पाय नमः0
31. ॐ अदित्यै नमः0
32. ॐ दित्यै नमः0
33. ॐ अद्भ्यो नमः0
34. ॐ सावित्राय नमः0
35. ॐ जयाय नमः0
36. ॐ रुद्राय नमः0
37. ॐ अर्यम्णे नमः0
38. ॐ सवित्रे नमः0
39. ॐ विवस्वते नमः0
40. ॐ विबुधाधिपाय नमः0
41. ॐ मित्राय नमः0
42. ॐ राजयक्ष्मणे नमः0
43. ॐ पृथ्वीधराय नमः0
44. ॐ आपवत्साय नमः0
45. ॐ ब्रह्मणे नमः0
46. ॐ चरक्यै नमः0
47. ॐ विदार्यै नमः0

48. ॐ पूतनायै नमः0
49. ॐ पापराक्षस्यै नमः0
50. ॐ स्कन्दाय नमः0
51. ॐ अर्यम्णे नमः0
52. ॐ जृम्भकाय नमः0
53. ॐ पिलिपिच्छाय नमः0
54. ॐ इन्द्राय नमः0
55. ॐ अग्नये नमः0
56. ॐ यमाय नमः0
57. ॐ निर्ऋतये नमः0
58. ॐ वरुणाय नमः0
59. ॐ वायवे नमः0
60. ॐ कुबेराय नमः0
61. ॐ ईश्वराय नमः0
62. ॐ ब्रह्मणे नमः0
63. ॐ अनन्ताय नमः

एष पायस बलिर्न मम ।

(2) शेष इक्यासी कोष्टक नाम मन्त्रेण पायसबलिदानम्

64 ॐ उग्रसेनाय नमः0
65 ॐ डामराय नमः0
66 ॐ महाकालाय नमः0
67 ॐ पिलिपिच्छाय नमः0
68 ॐ हेतुकाय नमः0
69 ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः0
70 ॐ अग्निवैतालाय नमः0
71 ॐ असिवैतालाय नमः0
72 ॐ कालाय नमः0
73 ॐ करालाय नमः0
74 ॐ एकपादाय नमः0
75 ॐ भीमरूपाय नमः0
76 ॐ खेचराय नमः0
77 ॐ तलवासिने नमः

एष पायस बलिर्न मम।।

ततः प्रधानवास्तुपुरुषाय बलिं दद्यात्।

नानापक्वान्न संयुक्त नाना गन्ध समन्वितम्।
बलिं गृहाण देवेश वास्तु दोष प्रणाशक।।

वास्तु पुरुषाय एष पायस बलिर्न मम।

प्रार्थना - "शिख्यादिवास्तुमण्डलदेवताभ्यो नमः"।

।। अनेन कृतेन बलिदानेन शिख्यादिवास्तुमण्डलदेवाः प्रीयन्तां न मम।।

आसनाधः जलं निक्षिपेत् ललाटे मृदा तिलक धारयेत्।

***

ॐ सन्ध्यायै नमः। ॐ आञ्जन्यै नमः। ॐ क्रूरायै नमः। ॐ नियन्त्र्यै नमः। इति सम्पूज्य। स्तम्भमालभेत् - ॐ उद्धर्वऽऊषुणः० स्तम्भशिरसि - नागमात्रे नमः। ॐ आयं गौः०। शाखाबन्धनानि - ॐ यतोयतः०। ।।

अनेन कृतार्चनेन पूर्वाग्नेययोर्मध्ये स्थितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताः प्रीयन्तां न मम।।

08. आग्नेयकोणे कृष्णवर्ण स्तम्भे नागराजं पूजयेत् -

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

ॐ नागराजाय नमः, नागराजम् आवाहयामि। गन्धादिभिः सम्पूज्य नमस्कारः। ॐ नमः खेटकहस्तेभ्यः त्रिभोगेभ्यो नमो नमः। ॐ नमो भीषण देवेभ्यः खंगधृग्भ्यो नमो नमः। ॐ मध्यसन्ध्यायै नमः। ॐ धरायै नमः। ॐ पद्मायै नमः। इति सम्पूज्य। स्तम्भमालभेत् - ॐ उद्धर्वऽऊषुणः० स्तम्भशिरसि - नागमात्रे नमः। ॐ आयं गौः०। शाखाबन्धनानि - ॐ यतोयतः०।

।। अनेन कृतार्चनेन आग्नेयकोण स्थितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताः प्रीयन्तां न मम।।

09. अग्निदक्षिणयोर्मध्ये श्वेतवर्णस्तम्भे स्कन्दं पूजयेत् -

ॐ यदक्रन्द्रः प्रथमं जायमानऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्यं महि जातन्तेऽअर्वन्।।

ॐ स्कन्दाय नमः, स्कन्दम् आवाहयामि। गन्धादिभिः सम्पूज्य नमस्कारः। ॐ पश्चिम सन्ध्यायै नमः। सम्पूज्य। स्तम्भमालभेत् - ॐ उद्धर्वऽऊषुणः० स्तम्भशिरसि - नागमात्रे नमः। ॐ आयं गौः०। शाखाबन्धनानि - ॐ यतोयतः०।

।अनेन कृतार्चनेन अग्निदक्षिणयोर्मध्य स्थितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताः प्रीयन्तां न मम।।

10. दक्षिणनैर्ऋत्ययोमध्ये धूम्रवर्ण स्तम्भे वायुं पूजयेत् -

ॐ वायो येते सहस्रिणो रथा सस्तेभिरागहि। नियुत्वान्त्सोमपीतये।।

ॐ वायवे नमः, वायुम् आवाहयामि। गन्धादिभिः सम्पूज्य नमस्कारः। ॐ वायव्यै नमः। ॐ गायत्र्यै नमः। ॐ मध्यमसन्ध्यायै नमः। सम्पूज्य। स्तम्भमालभेत् - ॐ उद्धर्वऽऊषुणः० स्तम्भशिरसि - नागमात्रे नमः। ॐ आयं गौः०। शाखाबन्धनानि - ॐ यतोयतः०।।

।अनेन कृतार्चनेन दक्षिनैर्ऋत्ययोर्मध्ये स्थितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताः प्रीयन्तां न मम।।

11. नैर्ऋत्ये पीतवर्णस्तम्भे सोमं पूजयेत् -

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम व्वृष्ण्यम्। भवा व्वाजस्य संगथे।।

ॐ सोमाय नमः, सोमम् आवाहयामि। ॐ सवित्र्यै नमः। ॐ अमृतकलायै नमः। ॐ पश्चिमसन्ध्यायै नमः। सम्पूज्य। स्तम्भमालभेत् - ॐ उद्धर्वऽऊषुणः० स्तम्भशिरसि - नागमात्रे नमः। ॐ आयं गौः०। शाखाबन्धनानि - ॐ यतोयतः०।

।।अनेन कृतार्चनेन नैर्ऋतिस्तम्भाधिष्ठातृ देवताः प्रीयन्तां न मम।।

12. नैर्ऋत्यपश्चिमयोर्मध्ये श्वेतवर्ण स्तम्भे वरुणं पूजयेत् -

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्याचमृडय। त्वामवस्युराचके।।

ॐ वारुणाय नमः, वरुणम् आवाहयामि। गन्धादिभिः सम्पूज्य नमस्कारः। ॐ वारुण्यै नमः। ॐ पाशधारिण्यै नमः। ॐ बृहत्यै नमः। सम्पूज्य स्तम्भमालभेत् - ॐ उद्धर्वऽऊषुणः० स्तम्भशिरसि - नागमात्रे नमः। ॐ आयं गौः०। शाखाबन्धनानि - ॐ यतोयतः०।

अनेन कृतार्चनेन नैर्ऋतिवरुणयोर्मध्येस्तम्भाधिष्ठातृ देवताः प्रीयन्तां न मम।।

13. पश्चिमवायव्यान्तराले श्वेतवर्णस्तम्भे अष्टवसून् पूजयेत् -

ॐ व्वसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वादित्येभ्यस्त्वा सञ्जानाथां द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ त्वा वृष्ट्यावताम्। व्यन्तु व्वयोक्त गुं रिहाणा मरुतां पृषतीर्ग्गच्छ वशा पृश्निर्भूत्वा दिवं गच्छ ततो नो व्वृष्टिमावह।। चक्षुष्पाऽअग्नेऽसि चक्षुर्म्मे पाहि।।

ॐ वसुभ्यो नमः, वसुन् आवाहयामि। गन्धादिभिः सम्पूज्य नमस्कारः। ॐ विनतायै नमः। ॐ अणिमायै नमः। ॐ भूत्यै नमः। ॐ गरिमायै नमः। सम्पूज्य स्तम्भमालभेत् - ॐ उद्धर्वऽऊषुणः० स्तम्भशिरसि - नागमात्रे नमः। ॐ आयं गौः०। शाखाबन्धनानि - ॐ यतोयतः०। ।।

अनेन कृतार्चनेन वरुणवायु मध्यस्थ स्तम्भाधिष्ठातृ देवताः प्रीयन्तां न मम।।

14. वायव्ये पीतस्तम्भे धनदं पूजयेत् -

ॐ सोमो धेनु गुं सोमोऽअर्व्वन्तमाशु गुं सोमो वीरं कर्म्मण्यं ददाति।

सादन्यं व्विदत्थ्य गुं सभेयं पितृश्रवणं य्यो ददाशदस्मै।।

ॐ धनदाय नमः, धनदम् आवाहयामि। गन्धादिभिः सम्पूज्य नमस्कारः। ॐ आदित्यायै नमः। ॐ लघिमायै नमः। ॐ सिनीवाल्यै नमः। सम्पूज्य स्तम्भमालभेत् - ॐ उद्धर्वऽऊषुणः० स्तम्भशिरसि - नागमात्रे नमः। ॐ आयं गौः०। शाखाबन्धनानि - ॐ यतोयतः०। ।।

अनेन कृतार्चनेन वायव्य स्तम्भाधिष्ठातृ देवताः प्रीयन्तां न मम।।

15. उत्तर-वायव्ययोरन्तराले पीतस्तम्भे गुरुं पूजयेत् -

ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्यो ऽअर्हाद्यु मद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्रजा ततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।

ॐ बृहस्पतये नमः,बृहस्पतिम् आवाहयामि। गन्धादिभिः सम्पूज्य नमस्कारः। ॐ पूर्णमास्यै नमः। ॐ सावित्र्यै नमः। सम्पूज्य स्तम्भमालभेत् - ॐ उद्धर्व ऽऊषुणः० स्तम्भशिरसि - नागमात्रे नमः। ॐ आयं गौः०। शाखाबन्धनानि - ॐ यतोयतः०।

।। अनेन कृतार्चनेन वायव्योत्तरान्तराल स्तम्भाधिष्ठातृ देवताः प्रीयन्तां न मम।।

16. उत्तरीशानयोर्मध्ये रक्तस्तम्भे विश्वकर्माणं पूजयेत् -

ॐ विश्वकर्म्मन् हविषाव्वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्र कृण्णो रवद्ध्यत्।
तस्म्मै व्विशः समनमन्त पूर्व्वीरयमुग्ग्रो व्विहव्यो यथासत्।।

ॐ विश्वकर्मणे नमः, विश्वकर्माणम् आवाहयामि। गन्धादिभिः सम्पूज्य नमस्कारः। ॐ सिनीवाल्यै नमः। ॐ सावित्र्यै नमः। ॐ वास्तुदेवतायै नमः। सम्पूज्य स्तम्भमालभेत् - ॐ उद्धर्व ऽऊषुणः० स्तम्भशिरसि - नागमात्रे नमः। ॐ आयं गौः०। शाखाबन्धनानि - ॐ यतोयतः०।

।। अनेन कृतार्चनेन उत्तरीशानयोर्मध्ये स्तम्भाधिष्ठातृ देवताः प्रीयन्तां न मम।।

।। सतोरणद्वारपालदिक्पालपूजनम्।।

सतोरणद्वालपाल पूजनम् -

01. पूर्वे ऋग्वेदज्ञस्य - ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।।

02. दक्षिणे यजुर्वेदज्ञस्य - ॐ इषेत्वोर्जेत्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावती रनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघश गुं सो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि।।

03. पश्चिमे सामवेदज्ञस्य - ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सु बर्हिषि।।

04. उत्तरे अथर्ववेदज्ञस्य - ॐ शंनो देवी रभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु नः।।

दिक्पाल पूजनम्

01. इन्द्रम् – ॐ त्रातारमिन्द्र मवितारमिन्द्र गुं हवे हवे सुहव गुं शूरमिन्द्रम्।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र गुं स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।।

02. अग्निम् – ॐ अग्निन्दूतम्पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँ२आसादयादिह।।

03. यमम् – ॐ यमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा।
स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे।।

04. निर्ऋतिम् – ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य।
अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।।

05. वरुणम् – ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणे हवोद्ध्युरुश गुं समानऽआयुः प्रमोषीः।।

06. वायुम् – ॐ आनो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर गुं सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्।
वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।

07. सोमम् – ॐ वय गुं सोमव्व्रते तवमनस्तनूषुबिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।।

08. ईशानम् – ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।

09. ब्रह्माणम् – ॐ अस्म्मेरुद्द्रा मेहना पर्व्वतासो व्वृत्रहत्त्ये भरहूतौ सजोषाः।
यः श गुं सतेस्तुवते धायि पज्ज्र ऽइन्द्रज्येष्ठाऽअस्म्माँ२ऽअवन्तु देवाः।।

10. अनन्तम् – ॐ स्योना पृथिविनो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्म सप्रथाः।।

।।अनेन कृतेनार्चनेन मण्डप सहित सतोरणद्वारपालदिक्पालाः प्रीयन्तां न मम।।

***

।। भागवत सप्ताह पाठक्रमः।।

आद्ये हिरण्याक्षवधो द्वितीये भरतावधिः। तृतीये गजमोक्षश्च चतुर्थे कृष्णजन्म च।।
पञ्चमे रुक्मिण्युद्वाहः षष्ठे तु योगिनां कथा। सप्तमे परिपूर्णश्च सप्ताहक्रम इरितः।।

एकोन पंचाशत् मरूद्गणानां आवाहनम्

01 ॐ एकज्योतये नमः।
02 ॐ द्विज्योतये नमः।
03 ॐ त्रिज्योतये नमः।
04 ॐ चतुर्ज्योतये नमः।
05 ॐ एकशुक्राय नमः।
06 ॐ द्विशुक्राय नमः।
07 ॐ त्रिशुक्राय नमः।
08 ॐ इन्द्राय नमः।
09 ॐ गव्याय नमः।
10 ॐ दृश्याय नमः।
11 ॐ प्रति शिरसे नमः।
12 ॐ मित्ताय नमः।
13 ॐ संमिताय नमः।
14 ॐ अभिताय नमः।
15 ॐ ऋतजिते नमः।
16 ॐ सत्यजिते नमः।
17 ॐ सुषेणाय नमः।
18 ॐ सेनजिते नमः।
19 ॐ अतिमित्राय नमः।
20 ॐ नाभित्राय नमः।
21 ॐ पुरूमित्राय नमः।
22 ॐ ऋतये नमः।
23 ॐ ऋतवते नमः।
24 ॐ धात्रे नमः।
25 ॐ विधात्रे नमः।
26 ॐ धरणाय नमः।
27 ॐ धुवाय नमः।
28 ॐ विधारणाय नमः।
29 ॐ इदृक्षाय नमः।
30 ॐ सदृक्षाय नमः।
31 ॐ एनादृशे नमः।
32 ॐ अमृताय नमः।
33 ॐ क्रीतनाय नमः।
34 ॐ प्रसदृक्षाय नमः।
35 ॐ सरभाय नमः।
36 ॐ धर्त्रे नमः।
37 ॐ दुर्गाय नमः।
38 ॐ ध्वनये नमः।
39 ॐ भीमाय नमः।
40 ॐ अभियुक्तये नमः।
41 ॐ कृपाय नमः।
42 ॐ सहाय नमः।
43 ॐ द्युतये नमः।
44 ॐ वपुषे नमः।
45 ॐ अनादृश्याय नमः।
46 ॐ वसाय नमः।
47 ॐ कमाय नमः।
48 ॐ जयाय नमः।
49 ॐ विराजे नमः।

इति 49 मरूद्गणाः प्रीयन्ताम् अग्रे नमः॥

यथा बाण प्रहाराणां कवचं वारणं भवेत्। तद्वद् दैवोप घातानां शान्तिर्भवतु वारणम्॥
॥ इति जलमुत्सृजेत्॥

रोहिण्युत्तर रेवत्यो मूलं स्वाती मृगो मघा। अनुराधा च हस्तश्च विवाहे मंगलप्रदाः॥

द्वार पूजन - ध्वजारोपण

ततः सपत्नीको यजमानो वर्धिनीकलशं गृहीत्वा ग्रहाद् बहिर्निष्क्रम्य द्वार देवतानां पूजनं कुर्यात्। यथा-अक्षतान् गृहीत्वा। पूर्वद्वारे-ग्रामणीपीठे पक्षीन्द्राय नमः। दक्षिणे-चण्डाय नमः। वामे-प्रचण्डाय नमः। ऊर्ध्वं -द्वारश्रियै नमः। देहल्यां द्वारपीठस्य मध्ये - वास्तुपुरुषाय नमः। दक्षिणशाखायां - गंगायै नमः। वामशाखायां - यमुनायै नमः। दक्षिणे-शंखनिधये नमः। वामे-पद्मनिधये नमः। द्वारस्य ऊर्ध्वम् आग्नेय्यां - गणपतये नमः। अधः नैर्ऋत्यां - दुर्गायै नमः। अधः वायव्यां सरस्वत्यै नमः। ऊर्ध्वम् ईशान्यां क्षेत्रपालाय नमः। "द्वारश्रियाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः" इति गंधादिभिः संपूज्य तोरणपूजां कुर्यात्। ततो यजमान आचार्य पृच्छेत्। ब्रह्मन् प्रविशामि। आचार्येण 'प्रविशस्व' इत्युक्ते ॐ "ऋचं प्रपद्ये शिवं प्रपद्ये" इत्युत्क्वा शान्तिसूक्तं पठित्वा दक्षिणपादपुरः सरं स्वदक्षिणस्कन्धेन द्वारवामशाखां च देहलिं स्पृशन् गृहान्तः प्रविश्य वर्द्धनीकलशमैशान्यां स्थापयेत्।। ग्रहाद् बहिर्निष्क्रम्य दिशमुपतिष्ठते प्रागादिक्रमेण। ततः पूर्वादिक्रमेण ध्वजापताकां रोपयेत्। त्रिरावृत्तेन सूत्रेण रक्षोघ्न मन्त्रेण गृहं वेष्टयेत्।। दुग्ध जलेन गृहस्य परितः पवमान रक्षोघ्न सूक्तं पठन् अविच्छिन्नधारां पातयेत्। प्रागकृते गृहप्रवेशं कुर्यात्। तथा आग्नेयकोणे जानुपरिमित गर्तं खनयित्वा मृत्पेटिकायां शैवालादिकं क्षिप्त्वा तत्र वास्तुमूर्तिं संस्थाप्य गन्धादिभिश्च सम्पूज्य ततः पेटिकां गर्ते शनैर्निक्षिपेत्। तस्मिन् गर्तेशनैर्जलं मृदं च निक्षिपेत्। ततो गोमयेनोपलिप्य गन्धादिभिः सन्पूज्य पञ्चगव्येन गृहं प्रोक्षयेत्।।

।। ध्वजा चक्रम् ।।

दिशा	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	ईशान -पूर्व	पश्चिम-नर्ऋत्य	ईशान कोण
ध्वजा का वर्ण	पीला	लाल	काला	नीला	सफेद	धूम	हरा	सफेद	पद्म	मेघ	पंच रंग
देवता के नाम	ॐ इन्द्राय नमः।	ॐ अग्नेय नमः।	ॐ यमाय नमः।	ॐ निर्ऋत्ये नमः।	ॐ वरुणाय नमः।	ॐ वायवे नमः।	ॐ कुबेराय नमः।	ॐ ईशानाय नमः।	ॐ ब्रह्मणे नमः।	ॐ अनन्ताय नमः।	ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।

ध्वजा रोपण करें

पीले रंग की पताका पूर्व दिशा में, आग्नेय कोण में कपिल वर्ण की, दक्षिण में काले वर्ण की, नैऋत्य कोण में श्याम वर्ण की, पश्चिम में शुक्ल वर्ण की वायव्य में हरे वर्ण की, उत्तर में सफेद वर्ण की, और ईशान कोण में धवल वर्ण की पताका होती है।

ईशान-पूर्व के मध्य मेंश्वेत पताका और पश्चिम-नर्ऋत्य के मध्य में लाल रंग की पताका होती है। ईशान कोण में पंचरंगा ध्वजा स्थापित करना चाहिए।

***

चतुःषष्टियोगिनी पूजनावाहनम्

अद्य पूर्वोच्चारित० शुभपुण्यतिथौ मया प्रारब्धस्य अमुककर्मांगत्वेन अस्मिन्योगिनी पीठे श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीपूर्वकं गजाननादि-मृगलोचनान्तानां चतुःषष्टियोगिनीनां स्थापनप्रतिष्ठा पूजनानि करिष्ये।

01. प्रथमकलशपूर्णपात्रे - ॐ अम्बेऽम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ् काम्पीलवासिनीम्।।

ॐ महाकाल्यै नमः,ॐ महाकालीम् आवाहयामि स्थापयामि।

02. प्रथमकलशोत्तरे द्वितीयकलशपूर्णपात्रे – ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं मइषाण।। ॐ महालक्ष्म्यै नमः, ॐ महालक्ष्मीम् आवाहयामि स्थापयामि।

03. द्वितीयकलशोत्तरे तृतीयकलशपूर्णपात्रे - ॐ पावकानः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनी वती। यज्ञं वष्टुधियावसुः।।

ॐ महासरस्वत्यै नमः, ॐ महासरस्वतीम् आवाहयामि स्थापयामि

01. ॐ गजाननायै नमः, ॐ गजाननाम् आवाहयामि स्थापयामि।
02. ॐ सिंहमुख्यै नमः, ॐ सिंहमुखीम् आवाहयामि स्थापयामि।
03. ॐ गृध्रास्यायै नमः, ॐ गृधास्याम् आवाहयामि स्थापयामि।
04. ॐ काकतुण्डिकायै नमः, ॐ काकतुण्डिकाम् आवाहयामि स्थापयामि।
05. ॐ उष्ट्रग्रीवायै नमः, ॐ उष्ट्रग्रीवाम् आवाहयामि स्थापयामि।
06. ॐ हयग्रीवायै नमः, ॐ हयग्रीवाम् आवाहयामि स्थापयामि।
07. ॐ वाराह्यै नमः, ॐ वाराहीम् आवाहयामि स्थापयामि।
08. ॐ शरभाननायै नमः, ॐ शरभाननाम् आवाहयामि स्थापयामि।
09. ॐ उलूकिकायै नमः, ॐ उलूकिकाम् आवाहयामि स्थापयामि।
10. ॐ शिवारावायै नमः, ॐ शिवारावाम् आवाहयामि स्थापयामि।
11. ॐ मयूर्यै नमः, ॐ मयूरीम् आवाहयामि स्थापयामि।
12. ॐ विकटाननायै नमः, ॐ विकटाननाम् आवाहयामि स्थापयामि।
13. ॐ अष्टवक्रायै नमः, ॐ अष्टवक्राम् अष्टवक्राम् आवाहयामि स्थापयामि।
14. ॐ कोटराक्ष्यै नमः, ॐ कोटराक्षीम् आवाहयामि स्थापयामि।
15. ॐ कुब्जायै नमः, ॐ कुब्जाम् आवाहयामि स्थापयामि।

16. ॐ विकटलोचनायै नमः, ॐ विकटलोचनाम् आवाहयामि स्थापयामि।
17. ॐ शुष्कोदर्यै नमः, ॐ शुष्कोदरीम् आवाहयामि स्थापयामि।
18. ॐ ललजिह्वायै नमः, ॐ ललजिह्वाम् आवाहयामि स्थापयामि।
19. ॐ श्वदंष्ट्रायै नमः, ॐ श्वदंष्ट्राम् आवाहयामि स्थापयामि।
20. ॐ वानराननायै नमः, ॐ वानराननाम् आवाहयामि स्थापयामि।
21. ॐ रुक्षाक्ष्यै नमः, ॐ रुक्षाक्षीम् आवाहयामि स्थापयामि।
22. ॐ केकराक्ष्यै नमः, ॐ केकराक्षीम् आवाहयामि स्थापयामि।
23. ॐ बृहत्तुण्डायै नमः, ॐ बृहत्तुण्डाम् आवाहयामि स्थापयामि।
24. ॐ सुराप्रियायै नमः, ॐ सुराप्रियाम् आवाहयामि स्थापयामि।
25. ॐ कपालहस्तायै नमः, ॐ कपालहस्ताम् आवाहयामि स्थापयामि।
26. ॐ रक्ताक्ष्यै नमः, ॐ रक्ताक्षीम् आवाहयामि स्थापयामि।
27. ॐ शुक्यै नमः, ॐ शुकीम् आवाहयामि स्थापयामि।
28. ॐ श्वेन्यै नमः, ॐ श्वेनीम् आवाहयामि स्थापयामि।
29. ॐ कपोतिकायै नमः, ॐ कपोतिकाम् आवाहयामि स्थापयामि।
30. ॐ पाशहस्तायै नमः, ॐ पाशहस्ताम् आवाहयामि स्थापयामि।
31. ॐ दण्डहस्तायै नमः, ॐ दण्डहस्ताम् आवाहयामि स्थापयामि।
32. ॐ प्रचण्डायै नमः, ॐ प्रचण्डाम् आवाहयामि स्थापयामि।
33. ॐ चण्डविक्रमायै नमः, ॐ चण्डविक्रमाम् आवाहयामि स्थापयामि।
34. ॐ शिशुघ्न्यै नमः, ॐ शिशुघ्नीम् आवाहयामि स्थापयामि।
35. ॐ पापहन्त्र्यै नमः, ॐ पापहन्त्रीम् आवाहयामि स्थापयामि।
36. ॐ काल्यै नमः, ॐ कालीम् आवाहयामि स्थापयामि।
37. ॐ रुधिरपायिन्यै नमः, ॐ रुधिरपायिनीम् आवाहयामि स्थापयामि।
38. ॐ वसाधयायै नमः, ॐ वसाधयाम् आवाहयामि स्थापयामि।
39. ॐ गर्भभक्षायै नमः, ॐ गर्भभक्षाम् आवाहयामि स्थापयामि।
40. ॐ शवहस्तायै नमः, ॐ शवहस्ताम् आवाहयामि स्थापयामि।
41. ॐ आन्त्रमालिन्यै नमः, ॐ आन्त्रमालिनीम् आवाहयामि स्थापयामि।
42. ॐ स्थूलकेश्यै नमः, ॐ स्थूलकेशीम् आवाहयामि स्थापयामि।
43. ॐ बृहत्कुक्ष्यै नमः, ॐ बृहत्कुक्षीम् आवाहयामि स्थापयामि।
44. ॐ सर्पास्यायै नमः, ॐ सर्पास्याम् आवाहयामि स्थापयामि।
45. ॐ प्रेतवाहनायै नमः, ॐ प्रेतवाहनाम् आवाहयामि स्थापयामि।

46. ॐ दन्दशूककरायै नमः, ॐ दन्दशूककराम् आवाहयामि स्थापयामि।
47. ॐ क्रौञ्च्यै नमः, ॐ क्रौञ्चीम् आवाहयामि स्थापयामि।
48. ॐ मृगशीर्षायै नमः, ॐ मृगशीर्षाम् आवाहयामि स्थापयामि।
49. ॐ वृषाननायै नमः, ॐ वृषाननाम् आवाहयामि स्थापयामि।
50. ॐ व्यात्तास्यायै नमः, ॐ व्यात्तास्याम् आवाहयामि स्थापयामि।
51. ॐ धूमनिःश्वासायै नमः, ॐ धूमनिःश्वासाम् आवाहयामि स्थापयामि।
52. ॐ व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे नमः, ॐ व्योमैकचरणोर्ध्वदृशेम् आवाहयामि स्थापयामि।
53. ॐ तापिन्यै नमः, ॐ तापिनीम् आवाहयामि स्थापयामि।
54. ॐ शोषणीदृष्टयै नमः, ॐ शोषणीदृष्टिम् आवाहयामि स्थापयामि।
55. ॐ कौटर्यै नमः, ॐ कौटरीम् आवाहयामि स्थापयामि।
56. ॐ स्थूलनासिकायै नमः, ॐ स्थूलनासिकाम् आवाहयामि स्थापयामि।
57. ॐ विद्युत्प्रभायै नमः, ॐ विद्युत्प्रभाम् आवाहयामि स्थापयामि।
58. ॐ बलाकास्यायै नमः, ॐ बलाकास्याम् आवाहयामि स्थापयामि।
59. ॐ मार्जार्यै नमः, ॐ मार्जारीम् आवाहयामि स्थापयामि।
60. ॐ कटपूतनायै नमः, ॐ आवाहयामि स्थापयामि।
61. ॐ अट्टाट्टहासायै नमः, ॐ अट्टाट्टहासाम् आवाहयामि स्थापयामि।
62. ॐ कामाक्ष्यै नमः, ॐ कामाक्षीम् आवाहयामि स्थापयामि।
63. ॐ मृगाक्ष्यै नमः, ॐ मृगाक्षीम् आवाहयामि स्थापयामि।
64. ॐ मृगलोचनायै नमः, ॐ मृगलोचनाम् आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ योगे योगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे। सखायऽइन्द्रमूतये।।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ गुं समिमं दधातु। विश्वे देवा सऽइह मादयन्तामों३ प्रतिष्ठ।।

"श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती सहित गजाननादि चतुः षष्टियोगिनीभ्यो नमः"।

इति षोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् -

मुखे ते ताम्बूलं नयनयुगले कज्जलकला,
ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिकलता।
स्फुरत्काञ्ची शाटी पृथुकटितटि हाटकमयी,
भजामि त्वां गौरीं नगपति किशोरीमविरतम्।।

।। श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीपूर्वक गजाननादि चतुःषष्टियोगिन्यः मातरः प्रीयन्तां न मम।।

***

क्षेत्रपालमण्डल देवतानां पूजनावाहनम्

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्य मस्माद्वैश्वानरात्पुर एतारमग्नेः।
एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः।।

01. ॐ क्षेत्रपालाय नमः, ॐ क्षेत्रपालम् आवाहयामि स्थापयामि।
02. ॐ अजराय नमः, ॐ अजरम् आवाहयामि स्थापयामि।
03. ॐ व्यापकाय नमः, ॐ व्यापकम् आवाहयामि स्थापयामि।
04. ॐ इन्द्रचौराय नमः, ॐ इन्द्रचौरम् आवाहयामि स्थापयामि।
05. ॐ इन्द्रमूर्तये नमः, ॐ इन्द्रमूर्तम् आवाहयामि स्थापयामि।
06. ॐ उक्षाय नमः, ॐ उक्षम् आवाहयामि स्थापयामि।
07. ॐ कूष्माण्डाय नमः, ॐ कूष्माण्डम् आवाहयामि स्थापयामि।
08. ॐ वरुणाय नमः, ॐ वरुणम् आवाहयामि स्थापयामि।
09. ॐ बटुकाय नमः, ॐ बटुकाम् आवाहयामि स्थापयामि।
10. ॐ विमुक्ताय नमः, ॐ विमुक्तम् आवाहयामि स्थापयामि।
11. ॐ लिप्तकायाय नमः, ॐ लिप्तकायम् आवाहयामि स्थापयामि।
12. ॐ लीलाकाय नमः, ॐ लीलाकम् आवाहयामि स्थापयामि।
13. ॐ एकदंष्ट्राय नमः, ॐ एकदंष्ट्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
14. ॐ ऐरावताय नमः, ॐ ऐरावतम् आवाहयामि स्थापयामि।
15. ॐ ओषधिघ्नाय नमः, ॐ ओषधिघ्नम् आवाहयामि स्थापयामि।
16. ॐ बन्धनाय नमः, ॐ बन्धनम् आवाहयामि स्थापयामि।
17. ॐ दिव्यकाय नमः, ॐ दिव्यकम् आवाहयामि स्थापयामि।
18. ॐ कम्बलाय नमः, ॐ कम्बलम् आवाहयामि स्थापयामि।
19. ॐ भीषणाय नमः, ॐ भीषणम् आवाहयामि स्थापयामि।
20. ॐ गवयाय नमः, ॐ गवयम् आवाहयामि स्थापयामि।
21. ॐ घण्टाय नमः, ॐ घण्टम् आवाहयामि स्थापयामि।
22. ॐ व्यालाय नमः, ॐ व्यालम् आवाहयामि स्थापयामि।
23. ॐ अणवे नमः, ॐ अणुम् आवाहयामि स्थापयामि।
24. ॐ चन्द्रवारुणाय नमः, ॐ चन्द्रवारुणम् आवाहयामि स्थापयामि।
25. ॐ पटाटोपाय नमः, ॐ पटाटोपम् आवाहयामि स्थापयामि।
26. ॐ जटालाय नमः, ॐ जटालम् आवाहयामि स्थापयामि।
27. ॐ क्रतवे नमः, ॐ क्रतुम् आवाहयामि स्थापयामि।

28. ॐ घण्टेश्वराय नमः, ॐ घण्टेश्वरम् आवाहयामि स्थापयामि।
29. ॐ विटंकाय नमः, ॐ विटंकम् आवाहयामि स्थापयामि।
30. ॐ मणिमानाय नमः, ॐ मणिमानम् आवाहयामि स्थापयामि।
31. ॐ गणबन्धवे नमः, ॐ गणबन्धुम् आवाहयामि स्थापयामि।
32. ॐ डामराय नमः, ॐ डामरम् आवाहयामि स्थापयामि।
33. ॐ ढुण्ढिकर्णाय नमः, ॐ ढुण्ढिकर्णम् आवाहयामि स्थापयामि।
34. ॐ स्थविराय नमः, ॐ स्थविरम् आवाहयामि स्थापयामि।
35. ॐ दन्तुराय नमः, ॐ दन्तुरम् आवाहयामि स्थापयामि।
36. ॐ धनदाय नमः, ॐ धनदम् आवाहयामि स्थापयामि।
37. ॐ नागकर्णाय नमः, ॐ नागकर्णम् आवाहयामि स्थापयामि।
38. ॐ महाबलाय नमः, ॐ महाबलम् आवाहयामि स्थापयामि।
39. ॐ फेत्काराय नमः, ॐ फेत्कारम् आवाहयामि स्थापयामि।
40. ॐ चीकराय नमः, ॐ चीकरम् आवाहयामि स्थापयामि।
41. ॐ सिंहाय नमः, ॐ सिंहम् आवाहयामि स्थापयामि।
42. ॐ मृगाय नमः, ॐ मृगम् आवाहयामि स्थापयामि।
43. ॐ यक्षाय नमः, ॐ यक्षम् आवाहयामि स्थापयामि।
44. ॐ मेघवाहनाय नमः, ॐ मेघवाहनम् आवाहयामि स्थापयामि।
45. ॐ तीक्ष्णोष्ठाय नमः, ॐ तीक्ष्णोष्ठम् आवाहयामि स्थापयामि।
46. ॐ अनलाय नमः, ॐ अनलम् आवाहयामि स्थापयामि।
47. ॐ शुक्लतुण्डाय नमः, ॐ शुक्लतुण्डम् आवाहयामि स्थापयामि।
48. ॐ सुधालापाय नमः, ॐ सुधालापम् आवाहयामि स्थापयामि।
49. ॐ बर्बरकाय नमः, ॐ बर्बरकम् आवाहयामि स्थापयामि।
50. ॐ पवनाय नमः, ॐ पवनम् आवाहयामि स्थापयामि।
51. ॐ पावनाय नमः, ॐ पावनम् आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ गुं समिमं दधातु। विश्वे देवा सऽइह मादयन्तामों३ प्रतिष्ठ।

"ॐ क्षेत्रपालदेवताभ्यो नमः" इति षोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् -

ॐ करकलित कपालः कुण्डलीदण्ड पाणिस्तरूणतिमिरनीलो व्यालयज्ञोपवीती। क्रतु समय सपर्या विघ्न विच्छेदहेतुर्जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्।।

।। अनेन कृतेन पूजनेन अजरादि-क्षेत्रपालमण्डलदेवताः प्रीयन्ताम्।।

***

सर्वतो भद्रमण्डल देवतां पूजनावाहनम्

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिसतश्चविवः।।

01. ॐ ब्रह्मणे नमः, ॐ ब्रह्माणम् आवाहयामि स्थापयामि।
02. ॐ सोमाय नमः, ॐ सोमम् आवाहयामि स्थापयामि।
03. ॐ ईशानाय नमः, ॐ ईशानम् आवाहयामि स्थापयामि।
04. ॐ इन्द्राय नमः, ॐ इन्द्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
05. ॐ अग्नये नमः, ॐ अग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।
06. ॐ यमाय नमः, ॐ यमम् आवाहयामि स्थापयामि।
07. ॐ निर्ऋतये नमः, ॐ निर्ऋतिम् आवाहयामि स्थापयामि।
08. ॐ वरुणाय नमः, ॐ वरुणम् आवाहयामि स्थापयामि।
09. ॐ वायवे नमः, ॐ वायुम् आवाहयामि स्थापयामि।
10. ॐ अष्टवसुभ्यो नमः, ॐ अष्टवसून् आवाहयामि स्थापयामि।
11. ॐ एकादशरुद्रेभ्यो नमः, ॐ एकादशरुद्रान् आवाहयामि स्थापयामि।
12. ॐ द्वादशादित्येभ्यो नमः, ॐ द्वादशादित्यान् आवाहयामि स्थापयामि।
13. ॐ अश्विनीभ्यां नमः, ॐ अश्विनी आवाहयामि स्थापयामि।
14. ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, ॐ विश्वान् देवान् आवाहयामि स्थापयामि।
15. ॐ सप्तयक्षेभ्यो नमः, ॐ सप्तयक्षान् आवाहयामि स्थापयामि।
16. ॐ भूतनागेभ्यो नमः, ॐ भूतनागान् आवाहयामि स्थापयामि।
17. ॐ गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः, ॐ गन्धर्वाप्सरसः आवाहयामि स्थापयामि।
18. ॐ स्कन्दाय नमः, ॐ स्कन्दम् आवाहयामि स्थापयामि।
19. ॐ नन्दिने नमः, ॐ नन्दिनम् आवाहयामि स्थापयामि।
20. ॐ शूलाय नमः, ॐ शूलम् आवाहयामि स्थापयामि।

21. ॐ महाकालाय नमः, ॐ महाकालम् आवाहयामि स्थापयामि।
22. ॐ दक्षादिसप्तगणेभ्यो नमः, ॐ दक्षादिसप्तगणान् आवाहयामि स्थापयामि।
23. ॐ दुर्गायै नमः, ॐ दुर्गाम् आवाहयामि स्थापयामि।
24. ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णुम् आवाहयामि स्थापयामि।
25. ॐ स्वधायै नमः, ॐ स्वाधाम् आवाहयामि स्थापयामि।
26. ॐ मृत्युरोगाभ्यां नमः, ॐ मृत्युरोगान् आवाहयामि स्थापयामि।
27. ॐ गणपतये नमः, ॐ गणपतिम् आवाहयामि स्थापयामि।
28. ॐ अद्भ्यो नमः, ॐ अपः आवाहयामि स्थापयामि।
29. ॐ मरुद्भ्यो नमः, ॐ मरुतः आवाहयामि स्थापयामि।
30. ॐ पृथिव्यै नमः, ॐ पृथ्वीम् आवाहयामि स्थापयामि।
31. ॐ गंगादिनदीभ्यो नमः, ॐ गंगादिनदीः आवाहयामि स्थापयामि।
32. ॐ सप्तसागरेभ्यो नमः, ॐ सप्तसागरान् आवाहयामि स्थापयामि।
33. ॐ मेरवे नमः, ॐ मेरुम् आवाहयामि स्थापयामि।
34. ॐ गदायै नमः, ॐ गदाम् आवाहयामि स्थापयामि।
35. ॐ त्रिशूलाय नमः, ॐ त्रिशूलम् आवाहयामि स्थापयामि।
36. ॐ वज्राय नमः, ॐ वज्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
37. ॐ शक्तये नमः, ॐ शक्तिम् आवाहयामि स्थापयामि।
38. ॐ दण्डाय नमः, ॐ दण्डम् आवाहयामि स्थापयामि।
39. ॐ खड्गाय नमः, ॐ खड्गम् आवाहयामि स्थापयामि।
40. ॐ पाशाय नमः, ॐ पाशम् आवाहयामि स्थापयामि।
41. ॐ अंकुशाय नमः, ॐ अंकुशम् आवाहयामि स्थापयामि।
42. ॐ गौतमाय नमः, ॐ गौतमम् आवाहयामि स्थापयामि।
43. ॐ भरद्वाजाय नमः, ॐ भरद्वाजम् आवाहयामि स्थापयामि।

44. ॐ विश्वामित्राय नमः, ॐ विश्वामित्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
45. ॐ कश्यपाय नमः, ॐ कश्यपम् आवाहयामि स्थापयामि।
46. ॐ जमदग्नये नमः, ॐ जमदग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।
47. ॐ वसिष्ठाय नमः, ॐ वसिष्ठम् आवाहयामि स्थापयामि।
48. ॐ अत्रये नमः, ॐ अत्रिम् आवाहयामि स्थापयामि।
49. ॐ अरुन्धत्यै नमः, ॐ अरुन्धतीम् आवाहयामि स्थापयामि।
50. ॐ ऐन्द्रयै नमः, ॐ ऐन्द्रीम् आवाहयामि स्थापयामि।
51. ॐ कौमार्यै नमः, ॐ कौमारीम् आवाहयामि स्थापयामि।
52. ॐ ब्राह्मयै नमः, ॐ ब्राह्मीम् आवाहयामि स्थापयामि।
53. ॐ वाराह्यै नमः, ॐ वाराहीम् आवाहयामि स्थापयामि।
54. ॐ चामुण्डायै नमः, ॐ चामुण्डाम् आवाहयामि स्थापयामि।
55. ॐ वैष्णव्यै नमः, ॐ वैष्णवीम् आवाहयामि स्थापयामि।
56. ॐ माहेश्वयै नमः, ॐ माहेश्वरीम् आवाहयामि स्थापयामि।
57. ॐ वैनायक्यै नमः, ॐ वैनायकीम् आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ गुं समिमं दधातु। विश्वे देवा सऽइह मादयन्तामों३ प्रतिष्ठ।

"ॐ ब्रह्मादिसर्वतोभद्रमण्डलदेवताभ्यो नमः"। इति षोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् -

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र रुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै,
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो,
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः।।

।। अनेन कृतेन पूजनेन ब्रह्मादिसर्वतोभद्रमण्डलदेवताः प्रीयन्तां न मम।।

***

अथ दशांश -तर्पण–मार्जन विधिः

अनुष्ठान में पाठ अथवा जप का दशांश हवन, तत् दशांश तर्पण, तत् दशांश मार्जन और तत् दशांश ब्राह्मण भोजन का नियम हैं।

आचमनं प्राणायामः संकल्पः – अमुक कर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं जप दशांशेन कृतस्य होमकर्मणः परिपूर्णतार्थं तत् दशांशेन तर्पणं तत् दशांशेन मार्जनं करिष्ये।

तर्पणविधिः– जल में कर्पूर, केसर आदि सुगन्धित पदार्थ डालकर उसमें तीर्थों का आवाहन अथवा तीर्थजल एवं दूध डालें। गन्ध पुष्प से मूल मंत्र से या देवमंत्र से जल की पूजा करें। उसमें देवी का आवाहन करें। किसी अन्य पात्र में देवता की प्रतिमा रखें। प्रतिमा की पूजा करें। पश्चात् मूलमंत्र से या पाठमंत्र बोलते अभीष्ट देवता के नाम के साथ 'तर्पयामि' पद जोडें।

जैसे – मंत्रः .....श्री महाकालीं तर्पयामि अथवा चण्डिकां तर्पयामि बोलकर किञ्चित् जल देवतीर्थ से प्रतिमा के चरणों पर छोडें। देवी अति प्रसन्न हो रही है ऐसा ध्यान करें। तर्पण पूर्ण होने पर प्राणायाम आदि करें। प्रतिमा को शुद्ध जल से स्नान करायें और पूजा करके मूल स्थान पर रखें। जल स्थित देवता का विसर्जन करें व हृदय में स्थापित करें।

मार्जनविधिः – मार्जन में दो विधान है–

(1) देवता की प्रतिमा पर से मार्जन करते मंत्रोच्चार करें।

(2) यजमान/अपने में देवता बुद्धि कर, देवता का ध्यान कर पूजा करें। मूलमंत्र या देवमंत्र बोलते देव का ध्यान सतत रखते हुए देवता का नाम लेकर मार्जयामि अथवा अभिषिञ्चामि नमः पद जोडें। और अपने पर जल का मार्जन करें।

।। हस्ते जलमादाय अनेन तर्पणेन मार्जनेन च अमुक देवता प्रीयताम्।।

इस प्रकार बोलकर जल देवता को अर्पित करें। प्रतिमा पर मार्जन किया हो तो जल का विसर्जन करें।

।। इति दशांश-तर्पण-मार्जन विधिः।।

***

कुण्डस्थदेवतापूजन-पूर्वकाग्निस्थापनम्

सपत्नीको यजमानः कुण्डस्य समीपे कुण्डपश्चिमदिग्भागेउपविश्य आचमनं प्राणायामञ्च कृत्वा संकल्पं कुर्यात्। अद्य पूर्वोच्चारित एवं गुणविशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः नाम्नः मया सग्रहमखामुक याग कर्मणः सांगतासिद्धयर्थम् अस्मिन्कुण्डे कुण्डस्थदेवतानाम् आवाहनं स्थापनं पूजनं तथा च कुण्डे पञ्चभूसंस्कारपूर्वकम् अग्निस्थापनं करिष्ये। हस्ते कुशान् गृहीत्वा तैः कुण्डं सम्मार्ज्य। कुशोदकेन प्रोक्षयेत्।

ॐ भूर्भुवःस्वः कुण्डाय नमः कुण्डम् आवाहयामि स्थापयामि।

प्रार्थयेत् – ये च कुण्डे स्थिता देवाः कुण्डांगे याश्च देवताः।
ऋद्धिं यच्छन्तु ते सर्वे यज्ञसिद्धिं मुदान्विता।।

कुण्डमध्ये देवान् आवाहयेत् -कुण्डमध्ये -

ॐ भूर्भुवः स्वः **विश्वकर्मणे नमः** विश्वकर्माणम् आवाहयामि स्थापयामि।

तत्रादौ मेखला देवतानाम् आवाहनम् – ॐ उपरि मेखलायाम् -

ॐ भूर्भुवः स्वः **विष्णवे नमः** विष्णुम् आवाहयामि स्थापयामि।

मध्यमेखलायां रक्तवर्णालंकृतायाम् -

ॐ भूर्भुवः स्वः **ब्रह्मणे नमः** ब्रह्माणम् आवाहयामि स्थापयामि।

अधो मेखलायां कृष्णवर्णालंकृतायाम् -

ॐ भूर्भुवः स्वः **रुद्राय नमः** रुद्रम् आवाहयामि स्थापयामि।

अथ योन्यावाहनम् – ॐ भूर्भुवः स्वः **योन्यै नमः** योनिम् आवाहयामि स्थापयामि।

अथ कण्ठदेवतावाहनम् – ॐ भूर्भुवः स्वः **कण्ठे रुद्राय नमः** रुद्रम् आवाहयामि स्थापयामि।

अथ नाभ्यावाहनम् – ॐ भूर्भुवः स्वः **नाभ्यै नमः** नाभिम् आवाहयामि स्थापयामि।

अथ कुण्डमध्ये नैर्ऋत्यकोणे वास्तुपुरुषावाहनम् -

ॐ भूर्भुवः स्वः नैर्ऋत्यकोणे **वास्तुपुरुषाय नमः** वास्तुपुरुषम् आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मादि वास्तुपुरुषान्तेभ्यः कुण्डास्थदेवेभ्यो नमः
सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ब्रह्मासनमावाहनं पूजनम् सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

।। अनेन कृतेन पूजनेन विश्वकर्मादि-वास्तुपुरुषान्ताः सर्वे कुण्डस्थदेवाः प्रीयन्तां न मम।।

अथपञ्चभूसंस्काराः – आचार्यः कश्चिद्विप्रो वा दक्षिणहस्ते दर्भपुञ्जं गृहीत्वोत्थाय पश्चिमतः प्रागन्तं दक्षिणत आरभ्योदक्संस्थं त्रिवारं परिसमूहनं कुर्यात्।

1. **दर्भैः**- परिसमूह्य,परिसमूह्य,परिसमूह्य। (एवं परिसमूहनं विधाय कुण्डाद् बहिः पूर्वस्यामीशान्यां वा दर्भत्यागं कुर्यात्।) दक्षिण हस्तेन गोमयमादाय पूर्ववत् पश्चिमतः प्रागन्तं दक्षिणत आरभ्योदक्संस्थं गोमयेनोपलिपेत्।

2. **गोमयोदकेन**-उपलिप्य, उपलिप्य, उपलिप्य। (एवं उपलेपनं कृत्वा हस्तं प्रक्षाल्य दक्षिणहस्तेन स्रुवमादाय पूर्ववत् पश्चिमतः प्रागन्तं दक्षिणत आरभ्योदक्संस्थं स्रुवमूलेन त्रिरुल्लेखनं कुर्यात्।)
3. **स्रुवमूलेन**-उल्लिख्य,उल्लिख्य,उल्लिख्य। (एवमुल्लेखनं कृत्वा अनामिकाङ्गुष्ठेन पूर्ववत् कुण्डाद् बहिः पांसूनामुद्धरणम्।)
4. **अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदम्**-उद्धृत्य, उद्धृत्य, उद्धृत्य। (एवं त्रिवारं पांसूनामुद्धरणं कृत्वा तान् प्राच्यां क्षिप्त्वा पूर्ववत् न्युब्जपाणिना जलेन त्रिवारम् अभ्युक्षणं कुर्यात्।)
5. **उदकेन**-अभ्युक्ष्य, अभ्युक्ष्य, अभ्युक्ष्य। इति पंचभूसंस्काराः।।

कुण्डेऽग्निस्थापनम्- स्वकीयगृहादरणीय सम्वाद्वा आनीतम् अन्यताम्रादिपात्रेणाच्छादित निर्धूमम् अग्नि कुण्डस्य आग्नेय्यां दिशि निधाय आच्छादितं पात्रम् उद्घाटय "हुं फट्"इति क्रव्यादांशम् अग्नि नैर्ऋत्यां दिशि परित्यज्य अग्नि कुण्डस्य उपरि त्रिवारं भ्रामयित्वा। ॐ अग्निन्दूतम्पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँ२आसादयादिह।।

इति मन्त्रं पठन् कुण्डे स्वात्माभिमुखं अग्नि स्थापयेत्।।

अग्निं ध्यायेत् - ॐ चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ२आविवेश।।

गोत्रमग्नेस्तु शाण्डिल्यं शाण्डिल्यासितदेवलाः।
त्रयोऽमी प्रवरा माता त्वरणी वरुणः पिता।।

रक्तमाल्याम्बरधरं रक्तपद्मासनस्थितम्। स्वाहास्वधावषट्कारैरंकितं मेषवाहनम्।।
शतमंगलनामानं वह्निमावाहयाम्यहम्। त्वं मुखं सर्वदेवानां सप्तार्चिरमितद्युते।
आगच्छ भगवन्नग्ने कुण्डेऽस्मिन्सन्निधौ भव।

भो वैश्वानर शाण्डिल्यगोत्र शाण्डिल्यासितदेवलेति त्रिप्रवरान्वित भूमिमातःवरुणपितः मेषध्वज प्राङ्मुख मम सम्मुखो भव। इति ध्यात्वावाहयेत् -

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ गुं समिमं दधातु। विश्वे देवा सऽइह मादयन्तामोंऽ३ प्रतिष्ठ। ॐ शतमंगलनामाग्ने सुप्रतिष्ठितो वरदो भव। इति प्रतिष्ठाप्य पूजनं कुर्यात्। ॐ भूर्भवः स्वः शतमंगलनामाग्ने वैश्वानराय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। इति कुण्डस्य नैर्ऋत्यकोणे मध्ये वा अग्निं सम्पूज्य नैवेद्यार्थे पञ्चाहुतयः

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ ब्रह्मणे नमः,मध्ये पानीयं समर्पयामि। उत्तरापोशनं समर्पयामि। हस्त प्रक्षालनं समर्पयामि। मुखं प्रक्षालनं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं अर्चयामि। मुखवासार्थे पूगीफलं ताम्बूलं च समर्पयामि। पर्णमुद्रा दक्षिणां समर्पयामि नमस्करोमि।

प्रार्थयेत् - अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्।
हिरण्यवर्णममलं समृद्धं विश्वतो मुखम्।।

***

नवग्रहादिदेवानां पूजनावाहनं स्थापनम्

ईशान्यां चतुस्त्रिंशदंगगुलोच्च समचतरस्रस्य ग्रहपीठस्य समीपे सपत्नीको यजमानः उपविश्य आचमनं प्राणायामञ्च कुर्यात्। ततो हस्ते जलं गृहीत्वा मया प्रारब्धस्य अमुककर्मणः सांगता सिद्धयर्थम् अस्मिन् नवग्रहपीठे आधिदेवता प्रत्यधिदेवता पञ्चलोकपाल वास्तु क्षेत्रपाल दशदिक्पालदेवता सहितानाम् आदित्यादिनवग्रहाणां तत्तन्मण्डले स्थापनप्रतिष्ठा पूजनानि करिष्ये। वामहस्ते अक्षतान् गृहीत्वा दक्षिणहस्तेन तत्तत्स्थाने आदित्यादिदेवतानाम् आवाहनं कुर्यात्।

01. **सूर्यम् (मण्डल के मध्य में)** – ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यंच। हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।। **ॐ सूर्याय नमः**, सूर्यमावाहयामि स्थापयामि।

02. **चन्द्रम् (अग्नि कोण में)** – ॐ इमं देवाऽअसपत्न गुं सुवद्ध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोमी राजा सोमोस्माकं ब्राह्मणाना गुं राजा। **ॐ सोमाय नमः**, सोममावाहयामि स्थापयामि।

03. **भौमम् (दक्षिण में)** – ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्। अपा गुं रेता गुं सि जिन्वति।। **ॐ भौमाय नमः**, भौममावाहयामि स्थापयामि।

04. **बुधम् (ईशान कोण में)** –ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहित्व मिष्टापूर्ते स गुं सृजेथा मयञ्च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।। **ॐ बुधाय नमः**, बुधमावाहयामि स्थापयामि।

05. **बृहस्पतिम् (उत्तर में)** – ॐ बृहस्पतेऽअति यदर्योऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजा ततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्। **ॐ बृहस्पतये नमः**, बृहस्पतिमावाहयामि स्थापयामि।

06. **शुक्रम्(पूर्व में)** – ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान गुं शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।। **ॐ शुक्राय नमः**, शुक्रमावाहयामि स्थापयामि।

07. **शनिम् (पश्चिम में)** – ॐ शंनो देवी रभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु नः।। **ॐ शनैश्चराय नमः**, शनैश्चरमावाहयामि स्थापयामि।

08. **राहुम् (नैर्ऋत्य कोण में)**- ॐ कया नश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कयाशचिष्ठया वृता।। **ॐ राहवे नमः**, राहुमावाहयामि स्थापयामि।

09. **केतुम् (वायव्य कोण में)** - ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्य्याऽअपेशसे। समुषद्भि रजा यथाः।। **ॐ केतवे नमः**,केतुमावाहयामि स्थापयामि।

10. **ईश्वरम्** - ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। **ॐ ईश्वराय नमः**,ईश्वरमावाहयामि स्थापयामि।

11. **उमाम्** - ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं मइषाण।।
ॐ उमायै नमः, उमामावाहयामि स्थापयामि।

12. **स्कन्दम्** - ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमानऽउद्यन्त्समुद्राद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्यं महि जातन्तेऽअर्वन्।।
ॐ स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि।

13. **विष्णुम्** - ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।। **ॐ विष्णवे नमः**, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

14. **ब्रह्माणम्** - ॐ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।। **ॐ ब्रह्मणे नमः** ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

15. **इन्द्रम्** -ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिव वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रूँरप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः।।
ॐ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

16. **यमम्** -ॐ यमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे।। **ॐ यमाय नमः**, यममावाहयामि स्थापयामि।

17. **कालम्**- ॐ कार्षिरसि समुद्रस्यत्वा क्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः।। **ॐ कालाय नमः**,कालमावाहयामि स्थापयामि।

18. **चित्रगुप्तम्** -ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय।।
ॐ चित्रगुप्ताय नमः, चित्रगुप्तमावाहयामि स्थापयामि।

ईश्वरोमा कुमारश्च विष्णुर्ब्रह्मा च वासवः। यमः कालश्चित्रगुप्तो ग्रहाणामधिदेवताः।।

19. **अग्निम्** – ॐ अग्निन्दूतम्पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँ२ आसादयादिह।।
ॐ अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

20. **अप्(जलम्)** –ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवस्तानऽऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे।। **ॐ अद्भ्यो नमः**, अपः आवाहयामि स्थापयामि।

21. **पृथ्वीम्** – ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः।। **ॐ पृथिव्यै नमः**, पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि।

22. **विष्णुम्** – ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पा गुं सुरे स्वाहा।। **ॐ विष्णवे नमः**, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

23. **इन्द्रम्** – ॐ इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्।।
ॐ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

24. **इन्द्राणीम्** – ॐ अदित्यै रास्नाऽसीन्द्राण्या उष्णीषः। पूषाऽसि घर्माय दीष्व।
ॐ इन्द्राण्यै नमः, इन्द्राणीमावाहयामि स्थापयामि।

25. **प्रजापतिम्** –ॐ प्रजापते नत्त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय गुं स्याम पतयो रयीणाम्।।
ॐ प्रजापतये नमः, प्रजापतिमावाहयामि स्थापयामि।

26. **सर्पान्** – ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।। **ॐ सर्पेभ्यो नमः**, सर्पानावाहयामि स्थापयामि।

27. **ब्रह्माणम्** – ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चविवः।।
ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

28. **गणपतिम्** – ॐ गणानां त्वा गणपति गुं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति गुं हवामहे निधीनां त्वा निधिपति गुं हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमात्त्वमजासि गर्भधम्। **ॐ गणपतये नमः** गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

29. **दुर्गाम्** – ॐ अम्बेऽम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।। **ॐ दुर्गायै नमः** दुर्गामावाहयामि स्थापयामि।

30. **वायुम्** – ॐ आनो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर गुं सहस्रिणीभिरुप याहि यज्ञम्।

वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।
ॐ **वायवे नमः** वायुमावाहयामि स्थापयामि।

31. **आकाशम्**–ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।।
ॐ **आकाशाय नमः** आकाशमावाहयामि स्थापयामि।

32. **अश्विनू** – ॐ या वां कशा मधु मत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्। ॐ **अश्विभ्यां नमः** अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि।

33. **वास्तोष्पतिम्** –ॐ वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमी वो भवानः।
यत्त्वे महे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।
ॐ **वास्तोष्पतये** नमः वास्तोष्पतिमावाहयामि स्थापयामि।

34. **क्षेत्राधिपतिम्**– ॐ नहि स्पशमविदन्नन्य मस्माद्वैश्वानरात्पुर एतारमग्नेः।
एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः।।
ॐ **क्षेत्राधिपतये** नमः क्षेत्राधिपतिमावाहयामि स्थापयामि।

35. **इन्द्रम्** – ॐ त्रातारमिन्द्र मवितारमिन्द्र गुं हवे हवे सुहव गुं शूरमिन्द्रम्।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र गुं स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।।
ॐ **इन्द्राय नमः**, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

36. **अग्निम्**– ॐ अग्निन्दूतम्पुरोदधे हव्यवाहमुपब्ब्रुवे। देवाँ२आसादयादिह।।
ॐ **अग्नये नमः**, अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

37. **यमम्** – ॐ यमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे।। ॐ **यमाय नमः**, यममावाहयामि स्थापयामि।

38. **निर्ऋतिम्** – ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य।
अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।।
ॐ **निर्ऋतये नमः**, निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि।

39. **वरुणम्** – ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणे हवोद्ध्युरुश गुं समानऽआयुः प्रमोषीः।।
ॐ **वरुणाय नमः**, वरुणमावाहयामि स्थापयामि।

40. **वायुम्** – ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर गुं सहस्रिणीभिरुप याहि यज्ञम्।

वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।।
ॐ वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि ।

41. **सोमम्** -ॐ वय गुं सोमव्व्रते तवमनस्त्तनूषुबिब्भ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ।।
ॐ सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि ।

42. **ईशानम्** - ॐ तमीशानं जगतस्त्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ।।
ॐ ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि ।

43. **ब्रह्माणम्** - ॐ अस्म्मेरुद्द्रा मेहना पर्व्वतासो व्वृत्रहत्त्ये भरहूतौ सजोषाः ।
यः श गुं सते स्तुवते धायि पज्ज्र ऽइन्द्रज्येष्ठा ऽअस्म्माँ२ ऽअवन्तु देवाः ।।
ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि ।

44. **अनन्तम्**- ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छानःशर्म सप्रथाः ।।
ॐ अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि स्थापयामि ।

प्रतिष्ठापनम् - ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ गुं समिमं दधातु । विश्वे देवा सऽइह मादयन्तामोंऽ३ प्रतिष्ठ । इति षोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् -

ध्यानम् - ॐ ग्रहाऽऊर्ज्जाहुतयो व्यन्तो व्विप्राय मतिम् । तेषां व्विशिप्रियाणां वो हमिषमूर्ज गुं समग्ग्रभमुपयाम गृहीतो सीन्द्राय त्वा जुष्टङ्गृह्ण्णाम्येषते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ।।

ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ।।
अनेन कृतेन पूजनेन सूर्यादिग्रहदेवताः प्रीयन्तां न मम ।

ईशान्यां रुद्रकलशं स्थापनं पूजनम् -

ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्राऽ अधि भूम्याम् । तेषा गुं सहस्रयोजने वधन्वानि तन्मसि ।।
ॐ असंख्याकरुद्रेभ्यो नमः असंख्याकरुद्रानावाहयामि ।।

इति षोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् -

वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं-
वन्दे पन्नग भूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम् ।
वन्दे सूर्य शशांक वह्नि नयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं-
वन्दे भक्त जनाश्रयञ्च वरदं वन्दे शिवं शंकरम् ।।

अनेन कृतेन पूजनेन असंख्याकरुद्राः प्रीयन्तां न मम ।

***

अथ कुशकण्डिका

अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनास्तरणम्। अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम्। ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम्। 'यावत्कर्म समाप्यते तावत् त्वं ब्रह्मा भव' इति यजमानः। 'भवामि' इति ब्रह्मा वदेत्। ततो ब्रह्मणाऽनुज्ञातः प्रणीताप्रणयनम्। तद्यथा- प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा, वारिणा परिपूर्य, कुशैराच्छाद्य, प्रथमासने निधाय, ब्रह्मणो मुखमवलोक्य द्वितीयासने निदध्यात्। ईशानादि पूर्वाग्रैः कुशैः परिस्तरणम्। तद्यथा-ततो बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय। आग्नेयादीशानान्तम्। उदगग्रैर्वा। अग्नितः प्रणीता पर्यन्तं प्रागग्रैः, इतरथावृत्तिः।

ततः पात्रासादनं कुर्यात्। तद्यथा- त्रीणि पवित्रे द्वे। प्रोक्षणीपात्रम्। आज्यस्थाली। चरुस्थाली। सम्मार्जनकुशाः पञ्च। उपयमनकुशाः सप्त। समिधस्तिस्रः। स्रुवः। आज्यम्। तण्डुलाः। पूर्णपात्रम्। वृषनिष्क्रयदक्षिणा। उपकल्पनीयानि द्रव्याणि निधाय।

ततो द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय। द्वौ मूलेन प्रदक्षिणीकृत्य, सर्वान् युगपदनामिकांगुष्ठाभ्यां धृत्वा। त्रिभिश्छिद्य। द्वौ ग्राह्यौ, त्रिस्त्याज्यः, प्रोक्षणीपात्रे प्रणीतोदकमासिच्य, त्रिः पूर्णं,पवित्राभ्यामुत्पवनम्। प्रोक्षण्याः सव्यहस्तकरणम्। दक्षिणेनोद्दिंगनम्। प्रणीतोदकेन प्रोक्षणी-प्रोक्षणम्। प्रोक्षण्युदकेन आज्यस्थाल्याः प्रोक्षणम्। चरुस्थाल्याः प्रोक्षणम्। सम्मार्जनकुशानां प्रोक्षणम्। उपयमनकुशानां प्रोक्षणम्। समिधां प्रोक्षणम्। स्रुवस्य प्रोक्षणम्। आज्यस्य प्रोक्षणम्। तण्डुलानां प्रोक्षणम्। पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणम्। उपकल्पनीयानां पदार्थानां प्रोक्षणम्। असञ्चरे प्रोक्षणीर्निधाय।

आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः। चरुस्थाल्यां प्रणीतोदकासेक पूर्वकं तण्डुलप्रक्षेपः। ब्रह्मणे दक्षिणत आज्याधिश्रयणम्। चरोरधिश्रयणं स्वयमाज्यस्योत्तरतः। ज्वलदुल्मुकेनोभयोः पर्यग्निकरणम्। इतरथावृत्तिः। उदकोपस्पर्शः। अर्धश्रिते चरौ अधोमुखस्य स्रुवस्य प्रतपनम्। सम्मार्जनकुशैः स्रुवस्योर्ध्वमुखस्य सम्मार्जनम्। अग्नैरन्तरतोमूलैर्बाह्यतः स्रुवं सम्मृज्य। प्रणीतोदकेनाभ्युक्षणम्। सम्मार्जनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः। पुनः प्रतपनं, दक्षिणदेशे निधानम्। आज्योद्वनम्। चरुं पूर्वेणानीयाऽग्नरुत्तरतः स्थापयेत्। चरोरुद्वासनम्। अग्नेरुत्तरत एवाज्यस्य प्रदक्षिणीकृत्य आज्यस्योत्तरतश्चरुं स्थापयेत्। आज्योत्पवनम्। आज्यावेक्षणम्। अपद्रव्यनिरसनम्। पुनः प्रोक्षण्युत्पवनम्। वामेहस्ते उपयमनकुशानादाय। उत्तिष्ठन् समिधोभ्यादाय, घृताक्ताः समिधस्तिस्रः अग्नौ क्षिपेत्। प्रोक्षण्युदकेन सपवित्रहस्तेन ईशानादि अग्नेः प्रदक्षिणं पर्युक्षणम्। इतरथावृत्तिः। अग्नेः प्रदीप्तिकरणम्।।

पवित्रयोः प्रणीतासुनिधानम्। दक्षिणं जान्वाच्य। ब्रह्मणा कुशैरन्वारब्ध। समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणाऽऽज्यहोमः।

अग्नेरुत्तरभागे-ॐ प्रजापतये (अत्र न स्वाहाकारः)। इदं प्रजापतये न मम। अग्नेर्दक्षिणभागे - ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय न मम। समिद्धतमे - ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये न मम। ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम।

संकल्पः- अस्मिन् अमुकार्चनकर्मणि इमानि हवनीयद्रव्याणि या या यक्ष्यमाण देवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तं न मम। यथा दैवतानि सन्तु।

01. गणपति (केवल घृत) – ॐ गणानां त्वा गणपति गुं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति गुं हवामहे निधीनां त्वा निधिपति गुं हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमात्त्वमजासि गर्भधम्।। **ॐ गणपतये स्वाहा।**

02. अम्बिका (केवल घृत)– ॐ अम्बेऽम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।। **ॐ अम्बिकायै स्वाहा।**

01. सूर्य (मदार/द्राक्षा) – ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यंच। हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।। **ॐ सूर्याय स्वाहा।**

02. चन्द्र (पलाश/इक्षु) – ॐ इमं देवाऽअसपत्न गुं सुवद्ध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोमी राजा सोमोस्माकं ब्राह्मणाना गुं राजा।। **ॐ सोमाय स्वाहा।**

03. भौम (खैर/पूग) – ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽ अयम्। अपा गुं रेता गुं सि जिन्वति।। **ॐ भौमाय स्वाहा।**

04. बुध (अपामार्ग / नारिंग) ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहित्व मिष्टापूर्ते स गुं सृजेथा मयञ्च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।। **ॐ बुधाय स्वाहा।**

05. बृहस्पति (पीपल/जम्बीरं) ॐ बृहस्पतेऽअति यदर्योऽअर्हाद्यु मद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजा ततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्। **ॐ बृहस्पतये स्वाहा।**

06. शुक्र (गूलर/बीजपूरकम्) – ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान गुं शुक्रमन्धसऽ इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।। **ॐ शुक्राय स्वाहा।**

07. शनि (शमी/उतत्ती) – ॐ शंनो देवी रभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये।
शंय्योरभिस्रवन्तु नः।। ॐ **शनैश्चराय स्वाहा।**

08. राहु (दूर्वा/नारिकेलं) – ॐ कया नश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा।
कयाशचिष्ठ्ठया वृता।। ॐ **राहवे स्वाहा।**

09. केतु (कुशा/दाडिमं) – ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्य्याऽअपेशसे।
समुषद्भि रजा यथाः।। ॐ **केतवे स्वाहा।**

10. ईश्वरम् – ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।। ॐ **ईश्वराय स्वाहा।**

11. उमाम् – ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं मइषाण।। ॐ **उमायै स्वाहा।**

12. स्कन्दम् – ॐ यदक्रन्द्रः प्रथमं जायमानऽउद्यन्त्समुद्द्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्यं महि जातन्तेऽअर्वन्।। ॐ **स्कन्दाय स्वाहा।**

13. विष्णुम् – ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि।
वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।। ॐ **विष्णवे स्वाहा।**

14. ब्रह्माणम् – ॐ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।
ॐ **ब्रह्मणे स्वाहा।**

15. इन्द्रम् – ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिव वृत्रहा शूर विद्वान्।
जहि शत्रूँ२रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः।। ॐ **इन्द्राय स्वाहा।**

16. यमम् – ॐ यमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा।
स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे।। ॐ **यमाय स्वाहा।**

17. कालम् – ॐ कार्षिरसि समुद्रस्यत्वा क्षित्या उन्नयामि।
समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः।। ॐ **कालाय स्वाहा।**

18. चित्रगुप्तम् – ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय।। ॐ **चित्रगुप्ताय स्वाहा।**

19. **अग्निम्** – ॐ अग्निन्दूतम्पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे।
देवाँ२आसादयादिह।। ॐ **अग्नये स्वाहा।**

20. **अप्(जलम्)** – ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवस्तानऽऊर्जे दधातन।
महे रणाय चक्षसे।। ॐ **अद्भ्यः स्वाहा।**

21. **पृथ्वीम्** – ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी।
यच्छा नः शर्म सप्रथाः।। ॐ **पृथिव्यै स्वाहा।**

22. **विष्णुम्** – ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्।
समूढमस्य पा गुं सुरे स्वाहा।। ॐ **विष्णवे स्वाहा।**

23. **इन्द्रम्** – ॐ इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्।। ॐ **इन्द्राय स्वाहा।**

24. **इन्द्राणीम्** – ॐ अदित्यै रास्नाऽसीन्द्राण्या उष्णीषः। पूषाऽसि घर्माय दीष्व।। ॐ **इन्द्राण्यै स्वाहा।**

25. **प्रजापतिम्** – ॐ प्रजापते नत्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय गुं स्याम पतयो रयीणाम्।। ॐ **प्रजापतये स्वाहा।**

26. **सर्पान्** – ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।। ॐ **सर्पेभ्यः स्वाहा।**

27. **ब्रह्माणम्** – ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिसतश्चविवः।। ॐ **ब्रह्मणे स्वाहा।**

28. **गणपतिम्** – ॐ गणानां त्वा गणपति गुं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति गुं हवामहे निधीनां त्वा निधिपति गुं हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्त्वमजासि गर्ब्भधम्।। ॐ **गणपतये स्वाहा।**

29. **दुर्गाम्** – ॐ अम्बेऽम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।। ॐ **दुर्गायै स्वाहा।**

30. **वायुम्**– ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर गुं सहस्रिणीभिरुप याहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।। ॐ **वायवे स्वाहा।**

31. **आकाशम्** – ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।। ॐ **आकाशाय स्वाहा।**

32. अश्विनू – ॐ या वां कशा मधु मत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्।
ॐ अश्निभ्यां स्वाहा।

33. वास्तोष्पतिम् – ॐ वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमी वो भवानः। यत्त्वे महे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।
ॐ वास्तोष्पतये स्वाहा।

34. क्षेत्राधिपतिम् – ॐ नहि स्पशमविदन्नन्य मस्माद्वैश्वानरात्पुर एतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः।।
ॐ क्षेत्राधिपतये स्वाहा।

35. इन्द्रम् – ॐ त्रातारमिन्द्र मवितारमिन्द्र गुं हवे हवे सुहव गुं शूरमिन्द्रम्। ह्यामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र गुं स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।। ॐ इन्द्राय स्वाहा।

36. अग्निम् – ॐ अग्निन्दूतम्पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँ२आसादयादिह।।
ॐ अग्नये स्वाहा।

37. यमम् – ॐ यमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा।
स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे।। ॐ यमाय स्वाहा।

38. निर्ऋतिम् – ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।।
ॐ निर्ऋतये स्वाहा।

39. वरुणम् – ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणे हवोद्ध्युरुश गुं समानऽआयुः प्रमोषीः।।
ॐ वरुणाय स्वाहा।

40. वायुम् – ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर गुं सहस्रिणीभिरुप याहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।। ॐ वायवे स्वाहा।

41. सोमम् – ॐ वय गुं सोमव्व्रते तवमनस्तनूषुबिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।।
ॐ सोमाय स्वाहा।

42. ईशानम् – ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।। ॐ ईशानाय स्वाहा।

43. **ब्रह्माणम्** – ॐ अस्म्मेरुद्द्रा मेहना पर्व्वतासो व्वृत्रहत्त्ये भरहूतौ सजोषाः।
यः श गुं सते स्तुवते धायि पज्ज्रऽइन्द्रज्येष्ठाऽअस्म्माँ२ ऽअवन्तु देवाः।।
ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।

44. **अनन्तम्** – ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छानःशर्म सप्रथाः।।
ॐ अनन्ताय स्वाहा।

ध्यानम् – ॐ ग्रहाऽऊर्ज्जाहुतयो व्वयन्तो व्विप्राय मतिम्। तेषां व्विशिप्प्रियाणां वो हमिषमूर्ज गुं समग्ग्रभमुपयाम गृहीतो सीन्द्राय त्वा जुष्ट्टङ्गृह्ण्णाम्येषते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।।

ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ।।
अनेन कृतेन होमेन सूर्यादिमण्डलग्रहदेवताः प्रीयन्तां न मम ।

रुद्रहोम – ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्राऽ अधि भूम्याम्।
तेषा गुं सहस्रयोजने वधन्वानि तन्मसि।।
ॐ असंख्याकरुद्रेभ्यः स्वाहा।

वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नग भूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
वन्दे सूर्यशशांकवह्नि नयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
वन्दे भक्त जनाश्रयञ्च वरदं वन्देशिवंशंकरम्।।

अनेन कृतेन होमेन असंख्याकरुद्राः प्रीयन्तां न मम।

***

आरोग्यं तरणिः शशी विमलतां भौमः प्रतापोदयम्, बुद्धिः शीतकरात्मजः सुरगुरुः ज्ञानं सुखं भार्गवः।
शौर्यं सूर्य सुतश्च राहुरभयं केतुः प्रसादं सदा, ब्रह्मा विष्णु शिवेश्वरी प्रभृतयो देवाः सदा पान्तु वः।।
आरोग्यं प्रददातु नो दिनकरः चन्द्रो यशो निर्मलम्, भूतिं भूमिसुतो सुधांशु तनयः प्रज्ञा गुरुः गौरवम्।
काव्यः कोमल वाग् विलासमतुलं मन्दो मुदं सर्वदा, राहुर्बाहु बलं विरोध शमनं केतुः कुलस्योन्नतिम्।।
सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मंगलं मंगलः, सद्बुद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनिः।
राहुर्बाहुबलं करोतु विपुलं केतुः कुलस्योन्नतिं, नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु भवतां सर्वे प्रसन्ना ग्रहाः।।

नाममन्त्रेण वास्तु मण्डल हवन

ॐ वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमी वो भवानः।
यत्त्वे महे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।

1. ॐ शिखिने नमः स्वाहा।
2. ॐ पर्जन्याय नमः स्वाहा।
3. ॐ जयन्ताय नमः स्वाहा।
4. ॐ कुलिशायुधाय नमः स्वाहा।
5. ॐ सूर्याय नमः स्वाहा।
6. ॐ सत्याय नमः स्वाहा।
7. ॐ भृशाय नमः स्वाहा।
8. ॐ आकाशाय नमः स्वाहा।
9. ॐ वायवे नमः स्वाहा।
10. ॐ पूष्णे नमः स्वाहा।
11. ॐ वितथाय नमः स्वाहा।
12. ॐ गृहक्षताय नमः स्वाहा।
13. ॐ यमाय नमः स्वाहा।
14. ॐ गन्धर्वाय नमः स्वाहा।
15. ॐ भृंगराजाय नमः स्वाहा।
16. ॐ मृगाय नमः स्वाहा।
17. ॐ पितृभ्यो नमः स्वाहा।
18. ॐ दौवारिकाय नमः स्वाहा।
19. ॐ सुग्रीवाय नमः स्वाहा।
20. ॐ पुष्पदन्ताय नमः स्वाहा।
21. ॐ वरुणाय नमः स्वाहा।
22. ॐ असुराय नमः स्वाहा।
23. ॐ शोषाय नमः स्वाहा।
24. ॐ पापाय नमः स्वाहा।
25. ॐ रोगाय नमः स्वाहा।
26. ॐ अहये नमः स्वाहा।
27. ॐ मुख्याय नमः स्वाहा।
28. ॐ भल्लाटाय नमः स्वाहा।
29. ॐ सोमाय नमः स्वाहा।
30. ॐ सर्पाय नमः स्वाहा।
31. ॐ अदित्यै नमः स्वाहा।
32. ॐ दित्यै नमः स्वाहा।
33. ॐ अद्भ्यो नमः स्वाहा।
34. ॐ सावित्राय नमः स्वाहा।
35. ॐ जयाय नमः स्वाहा।
36. ॐ रुद्राय नमः स्वाहा।
37. ॐ अर्यम्णे नमः स्वाहा।
38. ॐ सवित्रे नमः स्वाहा।
39. ॐ विवस्वते नमः स्वाहा।
40. ॐ विबुधाधिपाय नमः स्वाहा।
41. ॐ मित्राय नमः स्वाहा।
42. ॐ राजयक्ष्मणे नमः स्वाहा।
43. ॐ पृथ्वीधराय नमः स्वाहा।
44. ॐ आपवत्साय नमः स्वाहा।
45. ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा।
46. ॐ चरक्यै नमः स्वाहा।
47. ॐ विदार्यै नमः स्वाहा।
48. ॐ पूतनायै नमः स्वाहा।
49. ॐ पापराक्षस्यै नमः स्वाहा।
50. ॐ स्कन्दाय नमः स्वाहा।
51. ॐ अर्यम्णे नमः स्वाहा।
52. ॐ जृम्भकाय नमः स्वाहा।
53. ॐ पिलिपिच्छाय नमः स्वाहा।
54. ॐ इन्द्राय नमः स्वाहा।

55. ॐ अग्नये नमः स्वाहा।
56. ॐ यमाय नमः स्वाहा।
57. ॐ निर्ऋतये नमः स्वाहा।
58. ॐ वरुणाय नमः स्वाहा।
59. ॐ वायवे नमः स्वाहा।
60. ॐ कुबेराय नमः स्वाहा।
61. ॐ ईश्वराय नमः स्वाहा।
62. ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा।
63. ॐ अनन्ताय नमः स्वाहा।

(शेष इक्यासी मण्डल वास्तु के लिए)

64. ॐ उग्रसेनाय नमः स्वाहा।
65. ॐ डामराय नमः स्वाहा।
66. ॐ महाकालाय नमः स्वाहा।
67. ॐ पिलिपिच्छाय नमः स्वाहा।
68. ॐ हेतुकाय नमः स्वाहा।
69. ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः स्वाहा।
70. ॐ अग्निवैतालाय नमः स्वाहा।
71. ॐ असिवैतालाय नमः स्वाहा।
72. ॐ कालाय नमः स्वाहा।
73. ॐ करालाय नमः स्वाहा।
74. ॐ एकपादाय नमः स्वाहा।
75. ॐ भीमरूपाय नमः स्वाहा।
76. ॐ खेचराय नमः स्वाहा।
77. ॐ तलवासिने नमः स्वाहा।

(इहरतिरिति षडाज्याहुतीनाम् उदपात्रे त्यागः)

(1) ॐ इहरतिरिहरमध्वमिहधृतिरिहस्वधृतिः स्वाहा। इदमग्नये न मम।

(2) ॐ उपसृजं धरुणं मात्रे धरुणो मातरन्धयन्। रायस्पोषमस्मासुदीधरत् स्वाहा। इदमग्नये न मम।

(3) ॐ वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमी वो भवानः। यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा।। ॐ वास्तोष्पतये न मम।

(4) ॐ वास्तोष्पते प्रतरणो नऽएधि गयस्फानो गोभिरश्वेभिरिन्दो। अजरासस्ते सख्ये स्याम पितेव पुत्रान् प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा।। ॐ वास्तोष्पतये न मम।

(5) ॐ वास्तोष्पतेशग्मया स गुँ सदा ते सक्षीमहिरण्यया गातुमत्या। पाहि क्षेमऽउत योगे वरं नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा।। ॐ वास्तोष्पतये न मम।

(6) ॐ अमीवहा वास्तोष्पते विश्वा रूपाण्याविशन्। सखा सुशेवऽएधि नः स्वाहा।। ॐ वास्तोष्पतये न मम।

(7) ॐ वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणा गुँ सत्र गुँ सोम्यानाद्रप्सो भेत्ता पुरां शश्वतीनामिन्द्रो मुनीनां सखा शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा।। ॐ वास्तोष्पतये न मम।

(8) ॐ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्तेऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः।। इत्यघोराहुतिः।।

अनेन कृतेन होमेन शिख्यादिवास्तुमण्डलदेवताः प्रीयन्तां न मम।

चतुःषष्टियोगिनी मण्डल हवन

1. ॐ अम्बेऽम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।। ॐ **महाकाल्यै** स्वाहा।

2. ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।
इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं मइषाण।। ॐ **महालक्ष्म्यै** स्वाहा।

3. ॐ पावकानः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनी वती।
यज्ञं वष्टुधियावसुः।। ॐ **महासरस्वत्यै** स्वाहा।

1. ॐ गजाननायै नमः स्वाहा।
2. ॐ सिंहमुख्यै नमः स्वाहा।
3. ॐ गृध्रास्यायै नमः स्वाहा।
4. ॐ काकतुण्डिकायै नमः स्वाहा।
5. ॐ उष्ट्रग्रीवायै नमः स्वाहा।
6. ॐ हयग्रीवायै नमः स्वाहा।
7. ॐ वाराह्यै नमः स्वाहा।
8. ॐ शरभाननायै नमः स्वाहा।
9. ॐ उलूकिकायै नमः स्वाहा।
10. ॐ शिवारावायै नमः स्वाहा।
11. ॐ मयूर्यै नमः स्वाहा।
12. ॐ विकटाननायै नमः स्वाहा।
13. ॐ अष्टवक्रायै नमः स्वाहा।
14. ॐ कोटराक्ष्यै नमः स्वाहा।
15. ॐ कुब्जायै नमः स्वाहा।
16. ॐ विकटलोचनायै नमः स्वाहा।
17. ॐ शुष्कोदर्यै नमः स्वाहा।
18. ॐ ललजिह्वायै नमः स्वाहा।
19. ॐ श्वदंष्ट्रायै नमः स्वाहा।
20. ॐ वानराननायै नमः स्वाहा।
21. ॐ रुक्षाक्ष्यै नमः स्वाहा।
22. ॐ केकराक्ष्यै नमः स्वाहा।
23. ॐ बृहत्तुण्डायै नमः स्वाहा।
24. ॐ सुराप्रियायै नमः स्वाहा।
25. ॐ कपालहस्तायै नमः स्वाहा।
26. ॐ रक्ताक्ष्यै नमः स्वाहा।
27. ॐ शुक्यै नमः स्वाहा।
28. ॐ श्वेन्यै नमः स्वाहा।
29. ॐ कपोतिकायै नमः स्वाहा।
30. ॐ पाशहस्तायै नमः स्वाहा।
31. ॐ दण्डहस्तायै नमः स्वाहा।
32. ॐ प्रचण्डायै नमः स्वाहा।
33. ॐ चण्डविक्रमायै नमः स्वाहा।
34. ॐ शिशुघ्न्यै नमः स्वाहा।

35. ॐ पापहन्त्र्यै नमः स्वाहा।
36. ॐ काल्यै नमः स्वाहा।
37. ॐ रुधिरपायिन्यै नमः स्वाहा।
38. ॐ वसाधयायै नमः स्वाहा।
39. ॐ गर्भभक्षायै नमः स्वाहा।
40. ॐ शवहस्तायै नमः स्वाहा।
41. ॐ आन्त्रमालिन्यै नमः स्वाहा।
42. ॐ स्थूलकेश्यै नमः स्वाहा।
43. ॐ बृहत्कुक्ष्यै नमः स्वाहा।
44. ॐ सर्पास्यायै नमः स्वाहा।
45. ॐ प्रेतवाहनायै नमः स्वाहा।
46. ॐ दन्दशूककरायै नमः स्वाहा।
47. ॐ क्रौञ्च्यै नमः स्वाहा।
48. ॐ मृगशीर्षायै नमः स्वाहा।
49. ॐ वृषाननायै नमः स्वाहा।
50. ॐ व्यात्तास्यायै नमः स्वाहा।
51. ॐ धूमनिः श्वासायै नमः स्वाहा।
52. ॐ व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे नमः स्वाहा।
53. ॐ तापिन्यै नमः स्वाहा।
54. ॐ शोषणीदृष्ट्यै नमः स्वाहा।
55. ॐ कोटर्यै नमः स्वाहा।
56. ॐ स्थूलनासिकायै नमः स्वाहा।
57. ॐ विद्युत्प्रभायै नमः स्वाहा।
58. ॐ बलाकास्यायै नमः स्वाहा।
59. ॐ मार्जार्यै नमः स्वाहा।
60. ॐ कटपूतनायै नमः स्वाहा।
61. ॐ अट्टाट्टहासायै नमः स्वाहा।
62. ॐ कामाक्ष्यै नमः स्वाहा।
63. ॐ मृगाक्ष्यै नमः स्वाहा।
64. ॐ मृगलोचनायै नमः स्वाहा।

ॐ योगे योगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे। सखायऽइन्द्रमूतये स्वाहा।

अनेन कृतेन होमेन श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीपूर्वक गजाननादि चतुःषष्टियोगिन्यः मातरः प्रीयन्तां न मम।।

***

आदित्यादि नवग्रहाः शुभकरा मेषादयो राशयो,
नक्षत्राणि सयोगकाश्च तिथयस्तद्देवतास्तद्गणाः।
मासाब्दा ऋतवस्तथैव दिवसाः सन्ध्यास्तथा रात्रयः,
सर्वे स्थावरजङ्गमाः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम्।।

ब्रह्मा वेदपतिः शिवः पशुपतिः सूर्यो ग्रहाणां पतिः,
शक्रो देवपतिर्हविर्हुत पतिः स्कन्दश्च सेनापतिः।
विष्णुर्यज्ञपतिर्यमः पितृपतिः शक्तिः पतीनां पतिः,
सर्वे ते पतयः सुमेरुसहिताः कुर्वन्तु वो मंगलम्।।

नाममन्त्रेण क्षेत्रपाल मण्डल हवन

.ॐ नहि स्पशमविदन्नन्य मस्माद्वैश्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः।
एमेनमवृधन्नमृताऽअमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः।।

1 ॐ क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा।
2 ॐ अजराय नमः स्वाहा।
3 ॐ व्यापकाय नमः स्वाहा।
4 ॐ इन्द्रचौराय नमः स्वाहा।
5 ॐ इन्द्रमूर्तये नमः स्वाहा।
6 ॐ उक्षाय नमः स्वाहा।
7 ॐ कूष्माण्डाय नमः स्वाहा।
8 ॐ वरुणाय नमः स्वाहा।
9 ॐ बटुकाय नमः स्वाहा।
10 ॐ विमुक्ताय नमः स्वाहा।
11 ॐ लिप्तकायाय नमः स्वाहा।
12 ॐ लीलाकाय नमः स्वाहा।
13 ॐ एकदंष्ट्राय नमः स्वाहा।
14 ॐ ऐरावताय नमः स्वाहा।
15 ॐ ओषधिघ्नाय नमः स्वाहा।
16 ॐ बन्धनाय नमः स्वाहा।
17 ॐ दिव्यकाय नमः स्वाहा।
18 ॐ कम्बलाय नमः स्वाहा।
19 ॐ भीषणाय नमः स्वाहा।
20 ॐ गवयाय नमः स्वाहा।
21 ॐ घण्टाय नमः स्वाहा।
22 ॐ व्यालाय नमः स्वाहा।
23 ॐ अणवे नमः स्वाहा।
24 ॐ चन्द्रवारुणाय नमः स्वाहा।
25 ॐ पटाटोपाय नमः स्वाहा।
26 ॐ जटालाय नमः स्वाहा।
27 ॐ क्रतवे नमः स्वाहा।
28 ॐ घण्टेश्वराय नमः स्वाहा।
29 ॐ विटंकाय नमः स्वाहा।
30 ॐ मणिमानाय नमः स्वाहा।
31 ॐ गणबन्धवे नमः स्वाहा।
32 ॐ डामराय नमः स्वाहा।
33 ॐ ढुण्ढिकर्णाय नमः स्वाहा।
34 ॐ स्थविराय नमः स्वाहा।
35 ॐ दन्तुराय नमः स्वाहा।
36 ॐ धनदाय नमः स्वाहा।
37 ॐ नागकर्णाय नमः स्वाहा।
38 ॐ महाबलाय नमः स्वाहा।
39 ॐ फेत्काराय नमः स्वाहा।
40 ॐ चीकराय नमः स्वाहा।
41 ॐ सिंहाय नमः स्वाहा।
42 ॐ मृगाय नमः स्वाहा।
43 ॐ यक्षाय नमः स्वाहा।
44 ॐ मेघवाहनाय नमः स्वाहा।
45 ॐ तीक्ष्णोष्ठाय नमः स्वाहा।
46 ॐ अनलाय नमः स्वाहा।
47 ॐ शुक्लतुण्डाय नमः स्वाहा।
48 ॐ सुधालापाय नमः स्वाहा।
49 ॐ बर्बरकाय नमः स्वाहा।
50 ॐ पवनाय नमः स्वाहा।
51 ॐ पावनाय नमः स्वाहा।

अनेन कृतेन होमेन अजरादिक्षेत्रपालमण्डलदेवताः प्रीयन्तां न मम।

ॐ यं यं यं यक्षरूपं दशदिशि वदनं भूमिकम्पायमानं सं सं संहारमूर्तिं शिरमुकुटजटाशेखरं चन्द्रबिम्बम्। दं दं दं दीर्घकेशं विकृतनखमुखं चोर्ध्वरेखाकपालं पं पं पं पापनाशं प्रणतपशुपतिं भैरवं क्षेत्रपालम्।

नाममन्त्रेण सर्वतोभद्रमण्डल हवन

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः।
स बुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिसतश्चविवः।।

1 ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा।
2 ॐ सोमाय नमः स्वाहा।
3 ॐ ईशानाय नमः स्वाहा।
4 ॐ इन्द्राय नमः स्वाहा।
5 ॐ अग्नये नमः स्वाहा।
6 ॐ यमाय नमः स्वाहा।
7 ॐ निर्ऋतये नमः स्वाहा।
8 ॐ वरुणाय नमः स्वाहा।
9 ॐ वायवे नमः स्वाहा।
10 ॐ अष्टवसुभ्यो नमः स्वाहा।
11 ॐ एकादशरुद्रेभ्यो नमः स्वाहा।
12 ॐ द्वादशादित्येभ्यो नमः स्वाहा।
13 ॐ अश्विनीभ्यां नमः स्वाहा।
14 ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः स्वाहा।
15 ॐ सप्तयक्षेभ्यो नमः स्वाहा।
16 ॐ भूतनागेभ्यो नमः स्वाहा।
17 ॐ गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः स्वाहा।
18 ॐ स्कन्दाय नमः स्वाहा।
19 ॐ नन्दिने नमः स्वाहा।
20 ॐ शूलाय नमः स्वाहा।
21 ॐ महाकालाय नमः स्वाहा।
22 ॐ दक्षादिसप्तगणेभ्यो नमः स्वाहा।
23 ॐ दुर्गायै नमः स्वाहा।
24 ॐ विष्णवे नमः स्वाहा।
25 ॐ स्वधायै नमः स्वाहा।
26 ॐ मृत्युरोगाभ्यां नमः स्वाहा।
27 ॐ गणपतये नमः स्वाहा।
28 ॐ अद्भ्यो नमः स्वाहा।
29 ॐ मरुद्भ्यो नमः स्वाहा।
30 ॐ पृथिव्यै नमः स्वाहा।
31 ॐ गंगादिनदीभ्यो नमः स्वाहा।
32 ॐ सप्तसागरेभ्यो नमः स्वाहा।
33 ॐ मेरवे नमः स्वाहा।
34 ॐ गदायै नमः स्वाहा।
35 ॐ त्रिशूलाय नमः स्वाहा।
36 ॐ वज्राय नमः स्वाहा।
37 ॐ शक्तये नमः स्वाहा।
38 ॐ दण्डाय नमः स्वाहा।
39 ॐ खड्गाय नमः स्वाहा।
40 ॐ पाशाय नमः स्वाहा।
41 ॐ अंकुशाय नमः स्वाहा।
42 ॐ गौतमाय नमः स्वाहा।
43 ॐ भरद्वाजाय नमः स्वाहा।
44 ॐ विश्वामित्राय नमः स्वाहा।
45 ॐ कश्यपाय नमः स्वाहा।
46 ॐ जमदग्नये नमः स्वाहा।
47 ॐ वसिष्ठाय नमः स्वाहा।
48 ॐ अत्रये नमः स्वाहा।
49 ॐ अरुन्धत्यै नमः स्वाहा।
50 ॐ ऐन्द्रयै नमः स्वाहा।
51 ॐ कौमार्यै नमः स्वाहा।
52 ॐ ब्राह्मयै नमः स्वाहा।
53 ॐ वाराह्यै नमः स्वाहा।
54 ॐ चामुण्डायै नमः स्वाहा।
55 ॐ वैष्णव्यै नमः स्वाहा।
56 ॐ माहेश्वयै नमः स्वाहा।
57 ॐ वैनायक्यै नमः स्वाहा।

अनेन कृतेन होमेन सर्वतोभद्रमण्डलदेवताः प्रीयन्तां न मम।

ॐ यस्यांके च विभाति भूधरसुता देवापगामस्तके, भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट्।
सोऽयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा, शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशंकरः पातुमाम्।।

श्रीलक्ष्मीनारायण हवन

पुरुषसूक्तम्

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमि गुं सर्वत स्पृत्वात्त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।। 1।।
पुरुष एवेद गुं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्त्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।। 2।।
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।। 3।।
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्सा शनानशने अभि।। 4।।
ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।। 5।।
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये।। 6।।
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दा गुं सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।। 7।।
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः।। 8।।
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये।। 9।।
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते।। 10।।
ब्राह्मणोऽस्य मूखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या गुं शूद्रो अजायत।। 11।।
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।। 12।।

नाभ्या आसीदन्तरिक्ष गुं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२अकल्पयन्।। 13।।
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।। 14।।
सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम्।। 15।।
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।। 16।।
ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पा गुं सुरे स्वाहा।। ॐ विष्णवे नमः स्वाहा।

***

श्रीसूक्तम्

ॐ ह्रीं हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।। 1।।
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मी मन पगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वंपुरुषानहम्।। 2।।
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्ति नाद प्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवीजुषताम्।। 3।।
कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्म वर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम्।। 4।।
चन्द्रां प्रभासां यशसाज्चलन्तीं श्रियं लोकेदेव जुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणे।। 5।।
आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातोवनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्यफलानितपसा नुदन्तुमायान्तरायाश्च बाह्याऽअलक्ष्मीः।। 6।।
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।। 7।।
क्षुत्पिपासा मलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निणुद मे गृहात्।। 8।।

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम्।। 9।।

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।। 10।।

कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।। 11।।

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।। 12।।

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।। 13।।

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जात वेदो म आ वह।। 14।।

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावोदास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।। 15।।

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।। 16।।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।
इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण।। ॐ महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा।।

गुग्गुल होमः हस्तेजलमादाय - अद्यपूर्वोच्चारित एवं गुणविशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुक गोत्रोत्पन्नोऽमुक शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं मम गृहे भूत प्रेत पिशाच दोष परिहारार्थं त्र्यम्बक मन्त्रेण गुग्गुल होममहं करिष्ये।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् स्वाहा।।

सर्षप होमः पुनर्जलमादाय - अद्यपूर्वोच्चारित एवं गुणविशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुक गोत्रोत्पन्नः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं मम गृहे सर्वारिष्ट परिहारार्थं सर्वशत्रु बलक्षयार्थं सर्षपहोममहं करिष्ये।

ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिव वृत्रहा शूर विद्वान्।
जहि शत्रूँ२ रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः स्वाहा।।

लक्ष्मी होमः पुनर्जलमादाय – अद्यपूर्वोच्चारित एवं गुणविशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुक गोत्रोत्पन्नः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं मम गृहे अलक्ष्मी विनाशार्थं दशविध लक्ष्मी प्राप्त्यर्थं लक्ष्मीहोममहं करिष्ये।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण।। ॐ महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा।।

अघोरमन्त्र होमः – ॐ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोर तरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्तेऽअस्तुरुद्ररूपेभ्यः स्वाहा।।

प्रायश्चित्त होमः – हस्तेजलमादाय – अद्यपूर्वोच्चारित एवं गुणविशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुक गोत्रोत्पन्नः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं अमुक कर्मणि न्यूनातिरिक्त दोष सकलदोष वा परिहारार्थं यथा संख्या प्रायश्चित्त होममहं करिष्ये।

ॐ भूः स्वाहा। ॐ भुवः स्वाहा। ॐ स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवःस्वः स्वाहा।

अथ उत्तरपूजनम् – हस्तेजलमादाय – अद्यपूर्वोच्चारित एवं गुणविशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुक गोत्रोत्पन्नः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं कृतस्य कर्मणः साङ्गता सिद्ध्यर्थं स्थापित देवतानां मृडाग्नेश्चोत्तर पूजनं करिष्ये। गणेशात् रुद्रकलश सहित मृडाग्नि पर्यन्तं स्थापित देवताभ्यो नमः उत्तरपूजनार्थे सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

स्विष्टकृद्धोमः – ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्ने स्विष्टकृते न मम। इति हुताशेषाऽज्यस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः।

अथ नवाहुतिहोमः – (1) ॐ भूः स्वाहा **इदमग्नये न मम**। (2) ॐ भुवः स्वाहा **इदं वायवे न मम**। (3) ॐ स्वः स्वाहा **इदं सूर्याय न मम**। (4) ॐ त्वन्नोऽ अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासि सीष्ठाः। यजिष्ठोव्वह्निन तमः शोशुचानो विश्वाद्वेषा गुं सि प्रमुमुग्ध्यस्म्मत् स्वाहा। **इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम**।। (5) सत्त्वन्नोऽअग्ने वमो भवोती नेदिष्ठोऽअस्याऽउषसोव्व्युष्टौ। अवयक्ष्वनो वरुण गुं रराणोव्वीहि मृडीक गुं सुहवोनऽएधि स्वाहा। **इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम**।। (6) ॐ अयाश्चाग्नेस्य नभि शस्ति पाश्च सत्यमित्त्व मयाऽअसि। अयानो यज्ञं वहास्य यानो धेहि भेषज गुं स्वाहा। **इदमग्नये अयसे न मम**।। (7) ॐ येते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा विता महान्तः। तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्क्काः स्वाहा। **इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम**।। (8) ॐ उदुत्तमं वरुण पाश मस्मदवाधमं विमद्ध्यम गुं श्रथाय। अथा व्ययमादित्यव्व्रते तवानागसोऽअदितयेस्याम स्वाहा। **इदं वरुणाय आदित्याय अदितये च न मम**।। (9) ॐ प्रजापतये स्वाहा **इदं प्रजापतये न मम**।।

दीपदान – आटे के सोलह दीपक तैयार करके जिसमें पन्द्रह गोल दीपक घी के और एक चौमुखा दीपक तेल का प्रज्ज्वलित करके पूजन करें।

अथ एकतन्त्रेण दशदिक्पालबलिदान मन्त्रः – ॐ प्राच्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहोदीच्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहोर्ध्वायै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहा।।

ॐ इन्द्रादि दशदिक्पालान् साङ्गान् सपरिवारान् सायुधान् सशक्तिकान् एभिर्गन्धाक्षतपुष्पैः अहं पूजयामि। ॐ इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः एतान् सदीपान् दधिमाष भक्तबलीन् समर्पयामि। भो भो इन्द्रादिदशदिक्पालाः दिशं रक्षत बलिं भक्षत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य अभ्युदयं कुरुत। आयुः कर्तारः क्षेम कर्तारः शान्ति कर्तारः पुष्टि कर्तारः तुष्टि कर्तारः निर्विघ्न कर्तारः कल्याण कर्तारो वरदा भवत। अनेन बलिदानेन इन्द्रादिदशदिक्पालाः प्रीयन्ताम्।।

अथ एकतन्त्रेण नवग्रहबलिदानमन्त्रः – ॐ ग्रहाऽऊर्ज्जाहुतयो व्वयन्तो व्विप्राय मतिम्। तेषां व्विशिप्रियाणां वो हमिषमूर्ज गुं समग्रभमुपयाम गृहीतो सीन्द्राय त्वा जुष्टङ्गृह्ण्णाम्येषते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।।

ॐ सूर्यादिनवग्रहेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः अधिदेवता प्रत्यधिदेवता गणपत्यादि पञ्चलोकपालवास्तोष्पतिसहितेभ्यः इदं दधिमाषबलिं समर्पयामि। भो सूर्यादिनवग्रहाः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः अधिदेवता प्रत्यधिदेवतासहिता इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्तारः क्षेम कर्तारः शान्ति कर्तारः पुष्टि कर्तारः तुष्टि कर्तारः निर्विघ्न कर्तारः कल्याण कर्तारो वरदा भवत। अनेन बलिदानेन सूर्यादिनवग्रहाः प्रीयन्ताम्।।

अथ वास्तुबलिदानमन्त्रः –ॐ वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमी वो भवानः। यत्त्वे महे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।

ॐ शिख्यादिवास्तुमण्डलदेवतासहिताय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय वास्तुपुरुषाय इमं सदीपम् आसादितं बलिं समर्पयामि।

ॐ शिख्यादिवास्तुमण्डलदेवतासहितवास्तुपुरुष इमं बलिं गृहाण। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता क्षेम कर्ता शान्ति कर्ता पुष्टि कर्ता तुष्टि कर्ता निर्विघ्न कर्ता कल्याण कर्ता वरदो भव।

।। अनेन बलिदानेन शिख्यादिवास्तुमण्डलदेवतासहितवास्तुपुरुषः प्रीयताम्।।

अथ मातृकाबलिदानमन्त्रः –ॐ समक्ख्ये देव्व्याधिया सन्दक्षिणयोरुचक्षसा। मामऽआयुः प्रमोषीर्म्मोऽअहन्तवव्वीरं व्विदेयतव देविसन्दृशि।।

भो वसोर्द्धारासहितसगणेशगौर्यादयः षोडशमातरः इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्त्र्यः क्षेम कर्त्र्यः शान्ति कर्त्र्यः पुष्टि कर्त्र्यः तुष्टि कर्त्र्यः निर्विघ्न कर्त्र्यः कल्याण कर्त्र्यः वरदा भवत।

अनेन बलिदानेन वसोर्द्धारासहितसगणेशगौर्यादयः षोडशमातरः प्रीयन्ताम्।।

अथ योगिनीबलिदानमन्त्रः-ॐ योगे योगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे। सखायऽइन्द्रमूतये।

भो चतुःषष्टियोगिन्यः इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्त्र्यः क्षेम कर्त्र्यः शान्ति कर्त्र्यः पुष्टि कर्त्र्यः तुष्टि कर्त्र्यः निर्विघ्न कर्त्र्यः कल्याण कर्त्र्यः वरदा भवत। अनेन बलिदानेन चतुःषष्टियोगिन्यः प्रीयन्ताम्।।

अथ प्रधानदेवताबलिदानमन्त्रः - ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।
समूढमस्य पा गुं सुरे स्वाहा।।

अथवा - ॐ अम्बेऽम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।

अथ क्षेत्रपालबलिदानमन्त्रः - ॐ नहि स्पशमविदन्नन्य मस्माद्वैश्वानरात्पुर एतारमग्नेः।
एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः।।

ॐ क्षेत्रपालाय नमः आवाहयामि स्थापयामि सर्वोपचारार्थे पूजयामि।।

ॐ क्षेत्रपाल महाबाहो महाबलपराक्रमः। क्षेत्राणां रक्षणार्थाय बलिं नय नमोऽस्तुते।।

ॐ क्षेत्रपालाय साङ्गाय भूत प्रेत पिशाच डाकिनीशाकिनी पिशाचिनी मारीगण वेतालादि परिवारसहिताय सायुधाय सशक्तिकाय सवाहनाय इमं सचतुर्मुखदीप दधिभक्तबलिं समर्पयामि। भो क्षेत्रपाल सर्वतो दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य अभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता क्षेम कर्ता शान्ति कर्ता पुष्टि कर्ता तुष्टि कर्ता निर्विघ्न कर्ता कल्याण कर्ता वरदो भव।

हस्ते जलं गृहीत्वा - अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयताम्।।

(दुर्गापूजन समये कूष्माण्ड बलिं दद्यात्।) ततो दुर्ब्राह्मणेन शूद्रेण वा (नाई के द्वारा) बलिं गृहीत्वा यजमानस्य मस्तकोपरि सकृत् भ्रामयित्वा चतुष्पथे निक्षिपेत्। ततो यजमानस्य पृष्ठतो द्वार पर्यन्तं गत्वा हिंकारायेति मन्त्रेण जलं क्षिपेत् -

ॐ हिंकाराय स्वाहा हिंकृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा वक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा व्वल्गते स्वाहा सीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृत्तायस्वाहा स गुं हानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहा यनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा।। (ततो यजमानः पाणिपादं प्रक्षाल्याऽऽचम्य)

अथ पूर्णाहुतिमन्त्राः

ॐ पूर्णाहुत्यै नमः, गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ समुद्रादूर्म्मिर्मधुमाँ२ऽउदारदुपा गुं शुना सममृतत्वमानट्।
घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः। 1

व्वयं नाम प्रब्रवामा घृतस्यास्मिन्यज्ञे धारयामा नमोभिः।
उप ब्रह्मा शृणवच्छस्य मानं चतुः शृंगोवमीद् गौरऽएतत्। 2

चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ२आविवेश। 3

त्रिधा हितं पर्णिभिर्गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविन्दन्।
इन्द्रऽएक गुं सूर्यऽएकं जजान व्वेनादेक गुं स्वधया निष्टतक्षुः। 4

एताऽअर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्रजा रिपूणा नावचक्षे।
घृतस्य धारा ऽअभिचाकशीमि हिरण्ययो व्वेतसो मध्य ऽआसाम्। 5

सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेनाऽअन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः।
एतेऽअर्षन्त्यूर्म्मयो घृतस्य मृगाऽइव क्षिपणोरीषमाणाः। 6

सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः। 7

अभिप्रवन्त समनेवयोषाः। कल्याण्यः स्मयमानासोऽअग्निम्।
घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्य्यति जातवेदाः। 8

कन्याऽइव व्वहतुमेतवाऽउ ऽअञ्ज्यञ्जानाऽअभिचाकशीमि।
यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा ऽअभि तत्पवन्ते। 9

अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त।
इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते। 10

धामं ते विश्वं भुवनमधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि।
अपामनीके समिथे य ऽआभृतस्तमश्याम मधुमन्तं त ऽऊर्म्मिम्। 11

ॐ जन्माद्यस्य यतोऽन्वयादितरतश्चार्थेष्वभिज्ञः स्वराट् तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये मुह्यन्ति यत्सूरयः। तेजोवारिमृदा यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गोऽमृषा धाम्ना स्वेन सदा निरस्त कुहकं सत्यं परं धीमहि॥

पुनस्त्वादित्या रुद्रा व्वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो व्वसुनीथ यज्ञैः।
घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः। 12

मूर्द्धानं दिवोऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृतऽआ जातमग्निम्।
कवि गुं सम्म्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः। 13

ॐ पूर्णा दर्व्वि परापत सुपूर्णा पुरापत।
वस्नेवव्विक्क्रीणा वहाऽइषमूर्ज्ज गुं शतक्क्रतो स्वाहा।। 14

इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवतेऽग्नये अद्भ्यश्च न मम।।

अथ वसोर्द्धाराहोमः –

ॐ सप्त ते ऽअग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऽऋषयः सप्त धाम प्रियाणि।
सप्त होत्राः सप्तधात्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणरूवा घृतेन स्वाहा। ॥1॥

शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्माँश्च।
शुक्रश्च ऋतपाश्चात्त्य गुं हाः । ॥2॥

ईदृङ् चान्यादृङ् च सदृङ्च प्रतिसदृङ्च। मितश्च सम्मितश्च सभराः। ॥3॥

ऋतश्च सत्यश्च ध्रुवश्च धरुणश्च। धर्त्ता च विधर्त्ता च विधारयः। ॥4॥

ऋतजिच्च सत्यजिच्च सेनजिच्च सुषेणश्च। अन्तिमित्रश्च दूरेऽअमित्रश्च गणः॥5॥

ईदृक्षासऽ एतादृक्षास ऽऊषुणः सदृक्षासः प्रतिसदृक्षासऽएतन।
मितासश्च सम्मितासो नोऽअद्य सभरसो मरुतो यज्ञेऽअस्मिन्। ॥6॥

स्वतवाँश्च प्रघासी च सान्तपनश्च गृहमेधी च। क्रीडी च शाकी चोज्जेषी। ॥7॥

इन्द्रं दैवीर्व्विशो मरुतोनुवर्त्मानो भवन्यथेन्द्रं दैवीर्व्विशो मरुतोनुवर्त्मानो भवन्।
एवमिमं यजमानं दैवीश्च व्विशो मानुषीश्चानुवर्त्मानो भवन्तु। ॥8॥

इम गुं स्तन मूर्ज्जस्वन्तं धयापां प्रपीनमग्ने सरिरस्य मध्ये।
उत्सं जुषस्व मधु मन्तमर्व्वन्त्समुद्रिय गुं सदनमाव्विशस्व। ॥9॥

घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम।
अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहा कृतं वृषभ वक्षि हव्यम्। ॥10॥

**ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा। ॥11॥**

।। इदमग्नये वैश्वानराय न मम।।

अथ कुण्डाग्ने प्रदक्षिणामन्त्र : – ॐ अग्ने नय सुपथा राये ऽअस्मान्विश्वानि दकव व्युनानि विद्वान्। यु योद्ध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम ऽउक्ति विधेम।। (भस्म रुद्र कलश को अर्पण की जा सकती है। अन्य देवताओं को नहीं। शेष यजमान के लिए)

अथ भस्मधारणमन्त्रः – ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे। कश्य पस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम्। यद्देवेषु त्र्यायुषमिति बाह्वोः। तन्नो ऽअस्तु त्र्यायुषमिति हृदि। संस्रवप्राशनम् (आचमनम्)। पवित्राभ्यां मार्जनम्। अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः।

ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्– प्रणीतोदकेन संकल्पः– कृतस्य अमुक शान्त्याख्यस्य कर्मणः साङ्गता सिद्धयर्थं ब्रह्मन् इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणाकं तुभ्यमहं सम्प्रददे। यजमानो वदेत् - प्रतिगृह्यताम्। ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु, इति मन्त्रेण पूर्णपात्रं ब्रह्मा गृह्णामि। अग्नेः पश्चात् प्रणीता विमोकः। ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्। आचार्याय **आज्यपात्रदानम्। भूयसीदक्षिणादानम्।**

श्रेयोदानम् – ततः आचार्यः श्रेयोदानं कुर्यात्। कृतस्य अमुक शान्त्याख्यस्य कर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं यजमानाय श्रेयोदानं करिष्ये। भवन्नियोगेन मया अस्मिन् अमुक कर्मणि यत्कृतम् आचार्यत्वं तदुत्पन्नं श्रेयः तत् अमुना साक्षतेन सजलेन पूंगीफलेन तुभ्यमहं सम्प्रददे। प्रतिगृह्यताम्। 'देवस्यत्वे'ति प्रतिगृह्णामि। तेन श्रेयसा त्वं श्रेयोवान् भव। 'भवामि'ति तेन वाच्यम्।

ब्राह्मणादिभोजनसंकल्पः – कृतस्य अमुक कर्मणः सांगतासिद्धयर्थं तत्सम्पूर्ण फलप्राप्त्यर्थं च यथासंख्याकान् ब्राह्मणान् कुमारिकाः बटुकान् सुवासिन्यादीन् यथाकाले यथोत्पन्नेना ऽहं भोजयिष्ये। भोजनान्ते कृतस्य अमुक कर्मणः सांगतासिद्धयर्थं नानागोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथोत्साहं ताम्बूलदक्षिणां च दास्ये।

अभिषेकः– ततो रुद्रकलश देवतान्तरकलशोदकमेस्मिन् पात्रे कृत्वा दूर्वापञ्चपल्लवैरुदंमुख आचार्यस्तिष्ठन् चत्वारो ऋत्विजश्च सकुटुम्बं स्वोत्तरतः सपत्नीकं यजमानं प्रांमुखमुपविष्टमभिषिञ्चेयुः।

अभिषेकः मन्त्राः – देवस्यत्त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनोर्ब्बाहुब्भ्यां पूष्णो हस्ताब्भ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्म्राज्ज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ। देवस्यत्त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनोर्ब्बाहुब्भ्यां पूष्णो हस्ताब्भ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणा ऽग्नेः साम्म्राज्ज्येनाभिषिञ्चामि।। देवस्यत्त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनोर्ब्बाहुब्भ्यां पूष्णो हस्ताब्भ्याम्। अश्विनौर्भैषज्ज्येन तेजसे ब्रह्मव्वर्च्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्ज्येन व्वीर्य्या यान्नाद्यायाभि- षिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेणबलाय श्रियै यशसे ऽभिषिञ्चामि।।

।। अमृताभिषेको ऽस्तु। शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चा ऽस्तु।।

भाग्यं फलति सर्वत्र न च विद्या न पौरुषम्। समुद्र मन्थनं प्राप्य विष्णुर्लक्ष्मी हरेर्विषम्।।
झष चाप कुलीरस्थो जीवोप्यशुभ गोचरः। अतिशोभन तां दद्याद् विवाहोपनयादिषु।।

वैदिक आरती

ॐ आ रात्रि पार्थिव गुँ रजः पितुरप्रायि धामभिः।
दिवः सदा गुँ सि बृहति वितिष्ठस आत्वेषं वर्तते तमः।।
ॐ इद गुँ हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीर गुँ सर्वगण गुँ स्वस्तये।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि।
अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त।।
ॐ ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्येदश स्थ।
अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम्।।

क्षमा प्रार्थना

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर।।1।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर। यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे।।2।।
अपराध सहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया। दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर।।3।।
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम। तस्मात् कारुण्य भावेन रक्षस्व परमेस्वर।।4।।
गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्रमेव च। आगता सुख सम्पत्तिः पुण्योऽहं तव दर्शनात्।।5।।
यदक्षर पदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्। तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ।।6।।

मत्समो नास्ति पापिष्ठस्त्वत्समो नास्ति पापहा।
इति मत्वा दया सिन्धो यथेच्छसि तथा कुरु।।7।।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वानु सृत स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत्।।8।।

अर्पणम्-अनेनावाहनासनपाद्यार्घाचमनीयस्नानवस्त्रोपवीतगन्धपुष्पधूपदीप नैवेद्य ताम्बूलदक्षिणा मन्त्रपुष्पनमस्काररूपैः षोडशोपचारैः अन्योपचारैश्च यथाज्ञानेन यथामिलितोपचारद्रव्यैः कृतपूजनेन श्री अमुक देवता प्रीयतां न मम।।

।। ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।।

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः।।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।

ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः।।

ॐ ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना।।
हरिर्दाता हरिर्भोक्ता हरिरन्नं प्रजापतिः। हरिर्विप्रशरीरस्थो भुंक्ते भोजयते हरिः।।
त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये। गृहाण सुमुखो भूत्वा प्रसीद परमेश्वर।।

तिलकाशीर्वादः

स्वस्ति तिलकः- ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्ध श्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिःस्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

ॐ पुनस्त्वादित्या रुद्रा व्वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो व्वसुनीथ यज्ञैः।
घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।।

ॐ दीर्घायुस्त ऽओषधे खनिता यस्मै चत्वा खनाम्यहम्।
अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शत वल्शा बिरोहतात्।।

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात् पवमानं महीयते।
धान्यं धनं पशुं बहुपुत्र लाभंशतसंवत्सरं दीर्घमायुः।।

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनारथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव।।

आयुष्कामो यशस्कामो पुत्र-पौत्रस्तथैव च।
आरोग्यं धनकामश्च सर्वे कामा भवन्तु मे।।

विसर्जन

गच्छन्तु च सुराःश्रेष्ठाः स्वस्थानं परमेश्वराः। यजमान हितार्थाय पुनरागमनाय च।।
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर। मम पूजा गृहात्वेमां पुनरागमनाय च।।
यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्। इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।।

आकाशात् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्। सर्व देव नमस्कारः केशवं प्रति गच्छति।।
सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग भवेत्।।
ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।

।। ॐ विष्णवे नमः,ॐ विष्णवे नमः,ॐ विष्णवे नमः।।
।। ॐ विष्णोः स्मरणात् परिपूर्णास्तु अस्तु परिपूर्णः।।
।। जयतु संस्कृतं जयतु भारतम्।।

ॐ ब्रह्माविष्णु च रुद्रश्च रक्षां कुर्वन्तु ते सदा।
सौभाग्यं ते प्रयच्छन्तु सूर्यादि सकलाग्रहाः।।

श्री संकष्टनाशन गणेश स्तोत्रम्

।। श्री मंगलमूर्तये नमः।।

ॐ प्रणम्य शिरसा देवं गौरी पुत्रं विनायकम्।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुष्कामार्थ सिद्धये।। 1।।

प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्।
तृतीयं कृष्णपिंगाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम्।। 2।।

लम्बोदरं पंचमं च षष्ठं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूमवर्णं तथाष्टमम्।। 3।।

नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम्।। 4।।

द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
न च विघ्न भयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम्।। 5।।

विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम्।। 6।।

जपेद् गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत्।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः।। 7।।

अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत्।
तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादतः।। 8।।

। श्रीनारदपुराणे संकष्टनाशने नाम गणेशस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

श्री गणपत्यथर्वशीर्षम्

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा गुं सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।। ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।।

ॐ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्तासि। त्वमेव केवलं धर्तासि। त्वमेव केवलं हर्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि नित्यम्।। 1।। ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि।। 2।। अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचानमव शिष्यम्। अव पश्चातात्। अव पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्।। 3।। त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानन्दा द्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि।। 4।। सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमि रापोऽनलोऽनिलो नभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि।। 5।। त्वं गुणत्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वमवस्थात्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितो नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवःस्वरोम्।। 6।। गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्। तारेण रुद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारःपूर्वरूपम्। अकारोमध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्। बिन्दुरुत्तररूपम्। नादः संधानम्। स गुं हितासन्धिः सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः निचृद् गायत्री छन्दः। गणपतिर्देवता। ॐ गँ गणपतये नमः।। 7।। एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।। 8।। एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमं कुश धारिणम्। रदं च वरदं हस्तैर्विभ्राणं मूषकध्वजम्। रक्तं लम्बोदरं शूर्प कर्णकं रक्तवाससम्। रक्तगन्धाऽनुलिप्तांगं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्। भक्तानुकंपिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्। आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ। प्रकृतेः पुरूषात्परम्। एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः।। 9।। नमो व्रातपतये। नमो गणपतये। नमः प्रमथपतये। नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैक दन्ताय विघ्न विनाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमो नमः।। 10।। एतदथर्वशीर्ष योऽधीते। स ब्रह्मभूयाय कल्पते। स सर्व विघ्नैर्नबाध्यते। स सर्वतः सुखमेधते। स पञ्चमहापापात्प्रमुच्यते।। 11।। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायम्प्रातः प्रयुञ्जानोऽपापो भवति। सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नो भवति। धर्मार्थकाममोक्षं च विन्दति।। 12।। इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम्। यो यदि मोहाद्दास्यति स पापी यान् भवति। सहस्रावर्तनाद् यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत्।। 13।।

अनेन गणपतिमभिषिञ्चति। स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्नञ्जपति। स विद्यावान् भवति। इत्यथर्वण वाक्यम्। ब्रह्माद्यावरणं विद्यात् न बिभेति कदाचनेति।। 14।। यो दूर्वांकुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति। स मेधावान् भवति। यो मोदक सहस्रेण यजति स वाञ्छितफलमवाप्नोति। यः साज्यसमिद्भिर्यजति स सर्वं लभते स सर्वं लभते।। 15।। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासंनिधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति। महाविघ्नात् प्रमुच्यते। महादोषात् प्रमुच्यते। स सर्वविद् भवति। स सर्वविद् भवति। य एवं वेद इत्युपनिषत्।। 16।।

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा गुं सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।। ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।। ॐ शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु, सर्वारिष्ट सकलोपद्रवः शान्तिरस्तु।

***

श्री सरस्वत्याः द्वादश नामानि

श्री सरस्वती जी के श्रेष्ठ बारह नामों का प्रतिदिन तीन बार पाठ करने से बुद्धि की जड़ता दूर होती है। माँ सरस्वती ब्रह्मरूप में पाठकर्ता की जीभ के अग्र भाग में सदैव निवास करती है।

।। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं सरस्वत्यै नमः।।

प्रथमं भारती नाम द्वितीयं च सरस्वती।
तृतीयं शारदा देवी चतुर्थं हंसवाहिनी।।
पंचमं जगती ख्याता षष्ठं वागीश्वरी तथा।
सप्तमं कुमुदी प्रोक्ता अष्टमं ब्रह्मचारिणी।।
नवमं बुद्धि दात्री च दशमं वरदायिनी।
एकादशं चन्द्रकान्ति-र्द्वादशं भुवनेश्वरी।।
द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
जिह्वाग्रे वसते नित्यं ब्रह्मरूपा सरस्वती।।

।। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं सरस्वत्यै नमः।।

प्रज्ञा वर्धन स्तोत्रम्

विनियोगः - अस्य श्री प्रज्ञावर्धन स्तोत्रस्य भगवान् शिव-ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः स्कन्दकुमारोदेवता, प्रज्ञासिद्धयर्थे पाठे(जपे) विनियोगः।

योगेश्वरो महासेनः कार्तिकेयोऽग्नि नन्दनः।
स्कन्दः कुमारः सेनानी स्वामी शंकर सम्भवः।।1।।

गांगेयस्ताम्र चूडश्च ब्रह्मचारी शिखिध्वजः।
तारकारिरुमापुत्रः क्रौञ्चारिश्च षडाननः ।। 2।।

शब्दब्रह्म समूहश्च सिद्धः सारस्वतो गुहः।
सनत्कुमारो भगवान् भोग-मोक्षप्रदः प्रभुः ।। 3।।

शरजन्मा गणाधीशः पूर्वजो मुक्तिमार्गकृत्।
सर्वागमप्रणेता च वाञ्छितार्थ प्रदर्शकः ।। 4।।

अष्टाविंशति नामानि मदीयानीति यः पठेत्।
प्रत्यूषे श्रद्धया युक्तो मूको वाचस्पतिर्भवेत् ।। 5।।

महामन्त्रमयानीति मम नामानि कीर्तयेत्।
महाप्रज्ञामवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ।। 6।।

पुष्य नक्षत्रमारभ्य पुनः पुष्ये समाप्य च।
अश्वत्थ मूले प्रतिदिनं दशवार तु सम्पठेत्।।
सप्तविंश दिनैरेकं पुरश्चरणकं भवेत् ।। 7।।

-----------।। इति प्रज्ञा वर्धन स्तोत्रं समाप्तम्।।--------

.... ❀ ....

जाता मन्दर मन्थनाज्जलनिधौ, पीयूष रूपा पुरा,
त्रैलोक्ये विजयप्रदेति विजया, श्री देवराज प्रिया।
लोकानां हितकाम्यया क्षितितले, प्राप्ता करैः कामदा,
सर्वातङ्क विनाश हर्षजननी, सा सेविता सर्वदा।।

अथ देवी-पुष्पाञ्जलि-स्तोत्रम्

ॐ अम्बा शाम्भवि चन्द्रमौलिरमणाऽपर्णा उमा पार्वती,
काली हेमवती शिवात्रिनयनी, कात्यायनी भैरवी।
सावित्री नवयौवना शुभकरी, साम्राज्य लक्ष्मी प्रदा,
चिद्रूपा परदेवता भगवती, श्रीराजराजेश्वरी।।

ॐ अयि गिरि-नन्दिनि नन्दित-मेदिनि विश्व-विनोदिनी नन्दिनुते,
गिरिवर-विन्ध्य-शिरोऽधिनिवासिनि विष्णु-विलासिनि जिष्णुनुते।
भगवती हे शितिकण्ठ-कुटुम्बिनि भूरि-कुटुम्बिनि भूतिकृते,
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनि! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! ।।1।।

सुरवर-वर्षिणि दुर्धर-धर्षिणि दुर्मुख-मर्षिणि हर्षरते,
त्रिभुवन-पोषिणि शंकर-तोषिणि कल्मष-मोषिणि घोषरते।
दनुज-निरोषिणि दुर्मद-शोषिणि दुर्मुनि-रोषिणि सिन्धुसुते,
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनि! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! ।।2।।

अयि जगदम्ब ! कदम्ब-वनप्रिय वासिनि तोषिणि हासरते,
शिखरि-शिरोमणि तुंग-हिमालय श्रृंग-निजालय मध्यगते।
मधु-मधुरे मधु-कैटभ-गंजिनि महिष-विदारिणि रासरते,
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनि! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! ।।3।।

अयि निज-हुंकृति- मात्र-निराकृत धूम्र-विलोचन धूम्रशते,
समर - विशोषित - रोषित - शोणित बीज - समुद्भव बीजलते।
शिव-शिव शुम्भ - निशुम्भ - महाहव - तर्पित - भूत -पिशाचरते,
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनि! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते!।।4।।

अयि शतखण्ड-विखण्डित-रुण्ड वितुण्डित-शुण्ड-गजाधिपते,
निज-भुजदण्ड-निपातित-चण्ड विपाटित-मुण्ड-भटाधिपते।
रिपुगज-गण्ड-विदारण-चण्ड पराक्रम-शौण्ड-मृगाधिपते,
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनि! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! ॥5॥

धनुरनुषंग - रणक्षणसंग - परिस्फुरदंग - नटत्कटके,
कनक-पिशंग-पृषत् कनिषंग-रसद्भट-श्रृंग हताबटुके।
हत-चतुरंग-बल-क्षितिरंग घटद्-बहुरंग रटद्-बटुके,
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनि! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! ॥6॥

अयि रण दुर्मद-शत्रुवधद्धुर-दुर्धर-निर्भर-शक्तिभृते,
चतुर-विचार-धुरीण-महाशय दूतकृत-प्रमथाधिपते।
दुरित-दुरीह-दुराशय-दुर्मति दानवदूत- दुरन्तगते,
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनि! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! ॥7॥

अयि शरणागत-वैरिवधू-जन-वीरवराभव-दायिकरे,
त्रिभुवन-मस्तक-शूलविरोधि-शिरोधि-कृतामल-शूलकरे।
दुमि-दुमितामर-दुन्दुभि-नाद-मुहुर्मुखरीकृत-दिङ्निकरे,
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनि! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! ॥8॥

सुरललना-तत-थेयित-थेयित-थाभिनयोत्तर-नृत्यरते,
कृतकुकुथा-कुकुथो दिडदाडिक ताल-कुतूहल-गानरते।
धुधुकुट-धूधुट-धिन्धि-मितध्वनि धीर मृदंग निनादरते,
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनि! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! ॥9॥

जय जय जाप्यजये जयशब्द-परस्तुति-तत्पर-विश्वनुते,
झण झण-झिंझिम-झिंकृत-नूपुर-शिञ्जित-मोहित-भूतपते।
नटित-नटार्ध-नटीनटनायक-नाट ननाटित-नाट्यरते,
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनि! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! ।।10।।

अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोरम कान्तियुते,
श्रितरजनी रजनी रजनी रजनी रजनीकर वक्त्रभृते।
सुनयन- विभ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमराभिदृते,
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनि! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! ।।11।।

महित-महाहव-मल्ल-मतल्लिक-वल्लित-रल्लित-भल्लिरते,
विरचित-वल्लि-कपालिक-पल्लिक-झिल्लिक-भिल्लिक-वर्गवृते।
श्रुतकृतपुल्ल-समुल्ल सितारुण-तल्लज-पल्लव-सल्ललिते,
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनि! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! ।।12।।

अयि सुदतीजन-लालस-मानस-मोहन-मन्मथ-राजसुते,
अविरल- गण्ड-गलन्-मदनेदुर-मत्त-मत्तंगज राजगते।
त्रिभुवन-भूषण-भूतकलानिधि-रूप-पयोनिधि-राजसुते,
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनि! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! ।।13।।

कमल-दलामल-कोमलकान्ति-कलाकलितामल-भालतले,
सकल-विलास-कलानिलयक्रम-केलि-चलत्-कलहंस-कुले।
अलिकुल-संकुल-कुन्तल-मण्डल-मौलिमिलद्-बकुलालिकुले,
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनि! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! ।।14।।

करमुरली-रव-वर्जित-कूजित-लज्जित-कोकल-मञ्जुमते,
मिलित-मिलिन्द-मनोहर-गुञ्जित-रञ्जित-शैल-निकुञ्जगते।
निजगण भूत महाशबरी गण रंगण सम्भृत-केलिरते,
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनि! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! ।। 15 ।।

कटितट पीत दुकूल विचित्र मयूख तिरस्कृत चण्डरुचे,
जित कनकाचल मौलि मदोर्जित-गर्जित- कुञ्जर-कुम्भकुचे।
प्रणत सुराऽसुर मौलिमणि-स्फुरदंशुल सन्नख-चन्द्ररुचे,
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनि! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! ।। 16 ।।

विजित सहस्र-करैक सहस्र-करैक सहस्रकरैकनुते,
कृत सुरतारक- संगरतारक संगरतारक सूनुनुते।
सुरथ समाधि समान समाधि समान समाधि सुजाप्यरते,
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनि! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! ।। 17 ।।

पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं सुशिवे,
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत्।
तव मदमेव परं पदमस्त्विति शीलयतो मम किं न शिवे,
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनि! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! ।। 18 ।।

कनक लसत् कलशीकजलै-रनुषिञ्चति तेऽङ्गण रंगभुवम्,
भजति स किं न शची कुच कुम्भ नटी परिरम्भ सुखानुभवम्।
तव चरणं शरणं करवाणि सुवाणि पथं मम देहि शिवम्,
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनि! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! ।। 19 ।।

तव विमलेन्दु कलं वदनेन्दु मलं कलयन्ननुकूलयते,
किमु पुरुहूत पुरीन्दुमुखी-सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते।
मम तु मतं शिवमानधने भवती कृपयाकिमु न क्रियते,
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनि! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! ।। 20 ।।

अयि मयि दीनदयालु तया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे,
अयि जगतो जननीति यथाऽसि मयाऽसि तथाऽनुमतासि रमे।
यदुचितमत्र भवत्पुरगं कुरु शाम्भवि देवि दयां कुरु मे,
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनि! रम्यकपर्दिनी! शैलसुते! ।। 21 ।।

स्तुतिमिमां स्तिमितः सुसमाधिना नियमतो यमतोऽनुदिनं पठेत्।
परमया रमया स निषेव्यते परिजनोऽरिजनोऽपि च तं भजेत्।। 22 ।।

।। इति देवी-पुष्पाञ्जलि-स्तोत्रं समाप्तम्।।

आरती श्री गणेशजी की

मैं आरती तेरी गाऊँ, मेरे गणराज बिहारी।
मैं नित-नित शीश झुकाऊँ, मेरे गणराज बिहारी।
तुम एकदन्त गणराजा, मैं शरण तुम्हारी आया।
अब राखो लाज हमारी, मेरे गणराज बिहारी।
तुम रिद्धि-सिद्धि के दाता, भक्तों के भाग्य विधाता।
मैं आया शरण तिहारी, मेरे गणराज बिहारी।
तुम माँ गौरी घर आये, और शिव के मन को भाये।
अब मेरे घर भी आओ, मेरे गणराज बिहारी।
कोई छप्पन भोग लगाये, कोई मोदक भोग जिमाये।
मैं हरदिन तुम्हे मनाऊँ, मेरे गणराज बिहारी।
मैं आरती तेरी गाऊँ, मेरे गणराज बिहारी।

अथ कमलाकवचम्

विनियोगः – अस्याश्चतुरक्षरी विष्णुवल्लभायाः कवचस्य भगवान् ऋषिरनुष्टुप्छन्दो वाग्भवी शक्तिर्देवता वाग्भवं बीजं लज्जा रमा कीलकं काम बीजात्मकं कवचं मम सुपाण्डित्य-कवित्व- सर्वसिद्धि समृद्धये पाठे विनियोगः।

अथ वक्ष्ये महेशानि कवचं सर्व कामदम्। यस्य विज्ञान मात्रेण भवेत् साक्षात् सदाशिवः।।1।।
नार्चनं तस्य देवेशि मन्त्रमात्रं जपेन्नरः। स भवेत् पार्वती पुत्रः सर्वशास्त्र विशारदः।। 2।।
विद्यार्थिनां सदा विद्या धनदातृ विशेषतः। धनार्थिभिः सदा सेव्या कमला विष्णुवल्लभा।। 3।।
ऐंकारो मस्तके पातु वाग्भवी सर्वसिद्धिदा। ह्रीं पातु चक्षुषोर्मध्ये चक्षुयुग्मे च शाङ्करी।। 4।।
जिह्वायां मुखवृत्ते च कर्णयोर्दन्तयोर्नसि। ओष्ठाधरे दन्तपंक्तौ तालु मूले हनौ पुनः।। 5।।
पातु मां विष्णुवनिता लक्ष्मीः विष्णु रूपिणी।। 6।।
कर्णयुग्मे भुजद्वन्द्वे स्तनद्वन्द्वे च पार्वती। हृदये मणिबन्धे च ग्रीवायां पार्श्वयोः पुनः।। 7।।
पृष्ठदेशे तथा गुह्ये वामे च दक्षिणे तथा। उपस्थे च नितम्बे च नाभौ जंघा द्वये पुनः।। 8।।
जानुचक्रे पद द्वन्द्वे घुटिकेऽगुलि मूलके। स्वाधातु प्राण शक्त्यात्म सीमन्ते मस्तके पुनः।।9।।
विजया पातु भवने जया पातु सदा मम। सर्वांगे पातु कामेशी महादेवी सरस्वती।। 10।।
तुष्टिः पातु महामाया उत्कृष्टिः सर्वदावतु। ऋद्धिः पातु महादेवी सर्वत्र शम्भुवल्लभा।। 11।।
वाग्भवी सर्वदा पातु पातु मां हरगेहिनी। रमा पातु सदा देवी पातु माया स्वराट् स्वयम्।। 12।।
सर्वांगे पातु मां लक्ष्मीर्विष्णु माया सुरेश्वरी। शिवदूती सदा पातु सुन्दरी पातु सर्वदा।। 13।।
भैरवी पातु सर्वत्र भेरुण्डा सर्वदाऽवतु। त्वरिता पातु मां नित्यमुग्र तारा सदाऽवतु।। 14।।
पातु मां कालिका नित्यं कालरात्रिः सदाऽवतु। नवदुर्गा सदा पातु कामाक्षी सर्वदाऽवतु।। 15।।
योगिन्यः सर्वदा पान्तु मुद्राः पान्तु सदा मम। मात्रा पान्तु सदा देव्यश्चक्रस्था योगिनीगणाः।। 16।।
सर्वत्र सर्वकार्येषु सर्वकर्मसु सर्वदा। पातु मां देवदेवी च लक्ष्मीः सर्व समृद्धिदा।। 17।।
इति ते कथितं दिव्यं कवचं सर्व सिद्धये। यत्र तत्र न वक्तव्यं यदीच्छेदात्मनो हितम्।। 18।।
शठाय भक्ति हीनाय निन्दकाय महेश्वरी। न्यूनांगे चातिरिक्तांगे दर्शयेन्न कदाचन।। 19।।
न स्तवं दर्शयेद् दिव्यं सन्दर्श्य शिवहा भवेत्। कुलीनाय महेच्छाय दुर्गाभक्ति पराय च।। 20।।
वैष्णवाय विशुद्धाय दद्यात् कवचमुत्तमम्। निज शिष्याय शान्ताय धनिने ज्ञानिने तथा।। 21।।
दद्यात् कवचमित्युक्तं सर्वतंत्र समन्वितम्। शनौ मंगलवारे च रक्त चन्दनकैस्तथा।। 22।।
यावकेन लिखेन्मंत्रं सर्वतंत्र समन्वितम्। विलिख्य कवचं दिव्यं स्वयं भू कुसुमैः शुभैः।। 23।।
स्वशुक्रः परशुक्रैर्वा नानागन्ध समन्वितैः। गोरोचना कुंकुमेन रक्त चन्दनकेन वा।। 24।।
सुतिथौ शुभयोगे वा श्रवणायां रवेर्दिने। अश्विन्यां कृत्तिकायां वा फल्गुन्यां वा मघासु च।। 25।।
पूर्वभाद्रपदा योगे स्वात्यां मंगलवासरे। विलिखेत् प्रपठेत् स्तोत्रं शुभयोगे सुरालये।। 26।।
आयुष्मत् प्रीतियोगे च ब्रह्मयोगे विशेषतः। इन्द्र योगे शुभे योगे शुक्र योगे तथैव च।। 27।।
कौलके बालके चैव वणिजे चैव सत्तमः। शून्यागारे श्मशाने च विजने च विशेषतः।। 28।।

कुमारीं पूजयित्वादी यजेद् देवीं सनातनीम्। मत्स्यैर्मांसैः शाकसूपैः पूजयेत् परदेवताम्।। 29।।
घृताद्यैः सोपकरणैः पूपसूपैर्विशेषतः। ब्राह्मणान् भोजयित्वा च पूजयेत् परमेश्वरीम्।। 30।।
अखेटकमुपाख्यानं तत्र कुर्याद् दिनत्रयम्। तदाधरेन्महाविद्यां शंकरेण प्रभाषिताम्।। 31।।
मारण द्वेषणादीनि लभते नात्र संशयः। स भवेत् पार्वती पुत्रः सर्वशास्त्र पुरस्कृतः।। 32।।
गुरुर्देवो हरः साक्षात् पत्नी तस्य हरप्रिया। अभेदेन भजेद्यस्तु तस्य सिद्धिरदूरतः।। 33।।
पठति य इह मर्त्यो नित्यमाद्रान्तरात्मा, जपफलमनुमेयं लप्स्यते यद्विधेयम्।
स भवति पदमुच्चैः सम्पदां पादनम्र, क्षितिप मुकुट लक्ष्मीर्लक्षणानां चिराय।। 34।।

।। इति विश्वसार तन्त्रे कमलात्मिका कवचम्।।

अथ इन्द्राक्षीस्तोत्रं प्रारभ्यते

।। श्री गणेशाय नमः।। श्री नर्मदादेव्यै नमः।।

ॐ अस्य श्रीइन्द्राक्षीस्तोत्र मंत्रस्य पुरंदर ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः इन्द्राक्षीदेवता महालक्ष्मी बीजम् भुवनेश्वरी शक्तिः भवानीति कीलकम् मम सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे श्रीइन्द्राक्षी वरप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।।

।। अथ न्यासः।।

ॐ इन्द्राक्षी अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ महालक्ष्मी तर्जनीभ्यां नमः। ॐ माहेश्वरी मध्यमाभ्यां नमः। ॐ अंबुजाक्षी अनामिकाभ्यां नमः। ॐ कात्यायनी कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ कौमारी करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

।। हृदयादिः न्यासः।।

ॐ इन्द्राक्षी हृदयाय नमः। ॐ महालक्ष्मी शिरसे स्वाहा। ॐ माहेश्वरी शिखायै वषट्। ॐ अंबुजाक्षी कवचाय हुम्। ॐ कात्यायनी नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ कौमारी अस्त्राय फट्। ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

।। अथ दिग्बंधः।।

ॐ प्राच्यै दिशे नमः इन्द्राय नमः। ॐ आग्नेय्यै दिशे नमः अग्नये नमः। ॐ याम्यायै दिशे नमः यमाय नमः। ॐ नैर्ऋत्यै दिशे नमः नैर्ऋत्याय नमः। ॐ प्रतीच्यै दिशे नमः वरूणाय नमः। ॐ वायव्यै दिशे नमः वायवे नमः। ॐ उदीच्यै दिशे नमः कुबेराय नमः। ॐ ईशान्यैदिशे नमः ईश्वराय नमः। ॐ ऊर्ध्वायैदिशे नमः ब्रह्मणे नमः। ॐ अधरायै दिशे नमः अनन्ताय नमः। ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वरोमिति दिग्बंधनम्।

।। अथ ध्यानम् ।।

इन्द्राक्षीं द्विभुजान्देवीं पीतवस्त्रद्वयान्विताम्। वामहस्ते वज्रधरां दक्षिणेन वरप्रदाम् ।। 1 ।।
इन्द्राक्षीं सहस्रयुवतीनानालंकारभूषिताम्। प्रसन्नवदनांभोजामप्सरोगणसेविताम् ।। 2 ।।

।। अथ मंत्रः ।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं इन्द्राक्षी क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ स्वाहा।

। अष्टोत्तरशतं जप्त्वा सर्वसिद्धिप्रदायकम् ।।

।। इन्द्र उवाच ।।

ॐ इन्द्राक्षी नाम सा देवी दैवतैः समुदाहृता। गौरी शाकम्भरी देवी दुर्गानाम्नीति विश्रुता ।। 1 ।।
कात्यायनी महादेवी चन्द्रघण्टा महातपा। सावित्री सा च गायत्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ।। 2 ।।
नारायणी भद्रकाली रूद्राणी कृष्णपिंगला। अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी ।। 3 ।।
मेघश्यामा सहस्राक्षी विकटांगी जलोदरी। महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ।। 4 ।।
अद्रिजा भद्रजा नन्दा रोगहन्त्री शिवप्रिया। शिवदूती कराली च प्रत्यक्ष परमेश्वरी ।। 5 ।।
इन्द्राणी इन्द्ररूपा च इन्द्रशक्ति परायणा। सदा सम्मोहिनीदेवी सुन्दरी भुवनेश्वरी ।। 6 ।।
एकाक्षरी परब्रह्म-स्थूल-सूक्ष्म-प्रवर्द्धिनी। वाराही नारसिंही च भीमा भैरवनादिनी ।। 7 ।।
श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती। अनन्ता विजया पूर्णा मानस्तोका पराजिता ।। 8 ।।
भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यंबिका शिवा। शिवा भवानी रूद्राणी शंकरार्द्धशरीरिणी ।। 9 ।।
एतैर्नाम पदैर्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता। आयुरारोग्यमैश्वर्य्यं ज्ञानवित्तयशोबलम् ।। 10 ।।
शतमावर्त्तयेद्यस्तु मुच्यते व्याधिबन्धनात्। आवर्तनं सहस्रन्तु लभते वांछितं फलम् ।। 11 ।।
राजानं च समाप्नोति इन्द्राक्षीं नात्र संशयः। नाभि मात्रे जले स्थित्वा सहस्रपरिसंख्यया ।। 12 ।।
जपेत्स्तोत्रमिदं मन्त्रं वाचासिद्धिर्भवेद्ध्रुवम्। सायंप्रातः पठेन्नित्यं षण्मासैः सिद्धिरूच्यते ।। 13 ।।
संवत्सरमुपाश्रित्य सर्वकामार्थसिद्धये। अनेन विधिना भक्ता मंत्रसिद्धिः प्रजायते ।। 14 ।।
संतुष्टा च भवेद्देवी प्रत्यक्षं संप्रजायते। अष्टम्यां च चतुर्दश्यामिदं स्तोत्रं पठेन्नरः ।। 15 ।।
धावतस्तस्य नश्यन्ति विघ्न संख्या न संशयः। कारागृहे यदा बद्धो मध्यरात्रौ तदा जपेत् ।। 16 ।।
दिवसत्रयमात्रेण मुच्यते नात्र संशयः। सकामो जपते स्तोत्रं मंत्र पूजा विचारतः ।। 17 ।।
पंचाधिकैर्दशादित्यैरियं सिद्धिस्तु जायते। रक्तपुष्पै रक्तवस्त्रै रक्तचंदन चर्चितैः ।। 18 ।।
धूपदीपैश्च नैवेद्यैः प्रसन्ना भगवती भवेत्। एवं संपूज्य इन्द्राक्षीमिन्द्रेण परमात्मना ।। 19 ।।
वरं लब्धं दितेः पुत्राः भगवत्याः प्रसादतः ।। 20 ।।

हरिः ॐ तत्सद् इति श्रीमदिन्द्रोक्तमिन्द्राक्षी स्तोत्रं संपूर्णम् ।।

अथ इन्द्राक्षीकवचम्

ॐ अस्य श्रीइन्द्राक्षीस्तोत्रमहामंत्रस्य पुरंदर ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। इन्द्राक्षीदुर्गादेवता महालक्ष्मीर्बीजम्। भुवनेश्वरी शक्तिः। भवानीति कीलकम्। मम इन्द्राक्षीप्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

।। अथ न्यासः।।

ॐ इन्द्राक्षी अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ महालक्ष्मी तर्जनीभ्यां नमः। ॐ माहेश्वरी मध्यमाभ्यां नमः। ॐ अम्बुजाक्षी अनामिकाभ्यां नमः। ॐ कात्यायनी कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ कौमारी करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

।। हृदयादिः न्यासः।।

ॐ इन्द्राक्षी हृदयाय नमः। ॐ महालक्ष्मी शिरसे स्वाहा। ॐ माहेश्वरी शिखायै वषट्। ॐ अम्बुजाक्षी कवचाय हुम्। ॐ कात्यायनी नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ कौमारी अस्त्राय फट्।

।। अथ ध्यानम्।।

नेत्राणां दशभिश्शतैः परिवृतामत्युग्रचर्माम्बरो
हेमाभां महतीं विलम्बितशिखामामुक्तकेशान्विताम्।।
घण्टामण्डित पादपद्मयुगलां नागेन्द्रकुम्भस्तनी
मिन्द्राक्षीं परिचिन्तयामि मनसा कल्पोक्तसिद्धिप्रदाम्।।

इन्द्राक्षीं द्विभुजान्देवीं पीतवस्त्रद्वयान्विताम्। वामहस्ते वज्रधरां दक्षिणेन वरप्रदाम्।।
इन्द्रादिभिः सुरैर्वन्द्यां वन्दे शंकरवल्लभाम्। एवं ध्यात्वा महादेवीं जपेत् सर्वार्थसिद्धये।।
इन्द्राक्षीं नौमि युवतीनानालंकारभूषिताम्। प्रसन्नवदनांभोजामप्सरोगणसेविताम्।।

इन्द्र उवाच

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वरोमिति दिग्बंधनम्।

इन्द्राक्षीं पूर्वतः पातु पात्वाग्नेयां दशेश्वरी। कौमारी दक्षिणे पातु नैर्ऋत्यां पातु पार्वती।।
वाराही पश्चिमे पातु वायव्ये नारसिंह्यपि। उदीच्यां कालरात्री मामैशान्यां सर्वशक्तयः।।
भैरव्यूर्ध्वं सदा पातु पात्वधो वैष्णवी सदा। एवं दश दिशो रक्षेत् सर्वांगं भुवनेश्वरी।।

इन्द्राक्षीकवचम्

ॐ नमो भगवत्यै इन्द्राक्ष्यै महालक्ष्म्यै सर्वजनवशंकर्यै सर्वदुष्टग्रहस्तम्भिन्यै स्वाहा। ॐ नमो भगवति पिंगलभैरवि त्रैलोक्यलक्ष्मि त्रैलोक्य-मोहिनि इन्दाक्षि मां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।

ॐ नमो भगवति भद्रकालि महादेवि कृष्णवर्णे तुंगस्तनि शूर्पहस्ते कपाटवक्षः स्थले कपालधरे परशुधरे चापधरे विकृतरूपधरे विकृतरूपे महाकृष्णसर्पयज्ञोपवीतिनि भस्मोद् धूलित सर्वगात्रीन्द्राक्षि मां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।

ॐ नमो भगवति प्राणेश्वरि पद्मासने सिंहवाहने महिषासुरमर्दिन्युष्णज्वर पित्तज्वर श्लेष्मज्वर कफज्वरालापज्वर संनिपातज्वर कृत्रिमज्वर कृत्यादिज्वरैकाहिकज्वर द्व्याहिकज्वर त्र्याहिकज्वर चतुराहिकज्वर पञ्चाहिकज्वर पक्षज्वर मासज्वर षण्मासज्वर संवत्सरज्वर सर्वांगज्वरान् नाशय नाशय हर हर जहि जहि दह दह पच पच ताडय ताडयाकर्षयाकर्षय विद्विषः स्तम्भय स्तम्भय मोहय मोहयोच्चाटयोच्चाटय हुं फट् स्वाहा।

ॐ ह्रीं ॐ नमो भगवति प्राणेश्वरि पद्मासने लम्बोष्ठि कम्बुकण्ठिके कलिकामरूपिणि परमन्त्र परयन्त्र परतन्त्र प्रभेदिनि प्रतिपक्षविधवंसिनि परबलदुर्गाविमर्दिनी शत्रुकरच्छेदिनि सकलदुष्टज्वर निवारिणि भूतप्रेत पिशाच ब्रह्मराक्षस यक्षयमदूत शाकिनी डाकिनी कामिनी स्तम्भिनी मोहिनी वशंकरी कुक्षिरोग शिरोरोग नेत्ररोग क्षयापस्मार कुष्ठादि महारोग निवारिणि मम सर्वरोगान् नाशय नाशय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं श्रीं हुं दुं इन्द्राक्षि मां रक्ष रक्ष, मम शत्रून् नाशय नाशय, जलरोगान् शोषय शोषय, दुःख व्याधीन् स्फोटय स्फोटय, क्रूरानरीन् भञ्जय भञ्जय, मनोग्रन्थि प्राणग्रन्थि शिरोग्रन्थीन् काटय काटय, इन्द्राक्षि मां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।

ॐ नमो भगवति माहेश्वरि महाचिन्तामणि दुर्गेसकल सिद्धेश्वरि सकल जन मनोहारिणि कालकालरात्र्यनलेऽजितेऽभये महाघोर रूपे विश्वरूपिणि मधुसूदनि महाविष्णुस्वरूपिणि नेत्रशूल कर्णशूल कटिशूल पक्षशूल पाण्डुरोगकमलादीन् नाशय नाशय वैष्णवी ब्रह्मास्त्रेण विष्णुचक्रेण रुद्रशूलेन यमदण्डेन वरुणपाशेन वासववज्रेण सर्वानरीन् भञ्जय भञ्जय यक्षग्रह राक्षसग्रह स्कन्दग्रह विनायकग्रह बालग्रह चौरग्रह कूष्माण्डग्रहादीन् निगृह्ण निगृह्ण राजयक्ष्मक्षय रोग तापज्वर निवारिणि मम सर्वज्वरान् नाशय नाशय सर्वग्रहान् उच्चाटय उच्चाटय हुं फट् स्वाहा।

।। इन्द्राक्षीकवचं सम्पूर्णम् ।।

***

इच्छित भूमि प्राप्ति

इन श्लोकों का प्रातः पाठ करने से इच्छित भूमि की प्राप्ति होती है।

श्रीनारायण उवाच

आदौ च पृथिवी देवी वराहेण च पूजिता। ततो हि ब्रह्मणा पश्चात् पूजिता पृथिवी तदा।।
ततः सर्वैर्मुनीन्द्रैश्च मनुभिर्मानवादिभिः। ध्यानं च स्तवनं मन्त्रं शृणु वक्ष्यामि नारद।।

ॐ श्रीं क्लीं वसुधायै स्वाहेत्यनेन मन्त्रेण विष्णुना पूजिता पुरा।
श्वेतपंकज वर्णाभां शरच्चन्द्र निभाननाम्।।

चन्दनोक्षिप्त सर्वांगी रत्नभूषण भूषिताम्।
रत्नाधारां रत्नगर्भा रत्नाकर समन्विताम्।।
वह्निशुद्धां शुकाधानां सस्मितां वन्दितां भजे।
ध्यानेनाऽनेन सा देवी सर्वैश्च पूजिताऽभवत्।।
स्तवनं शृणु विप्रेन्द्र कण्वशाखोक्तमेव च।

श्रीनारायण उवाच

जये जये जलाधारे जलशीले जलप्रदे।
यज्ञ सूकरजाये त्वं जयं देहि जयावहे। मंगले मंगलाधारे मांगल्ये मंगलप्रदे।।
मंगलार्थं मंगलेशे मंगलं देहिमे भवे। सर्वाधारे च सर्वज्ञे सर्वशक्तिसमन्विते।।
सर्वकामप्रदे देवि सर्वेष्टं देहि मे भवे। पुण्यस्वरूपे पुण्यानां बीजरूपे सनातनि।।
पुण्याभये पुण्यवता मालये पुण्यदे भवे। सर्व सस्यालये सर्व सस्याढये सर्वसस्यदे।।
सर्वसस्य हरे काले सर्व सस्यात्मिके भवे। भूमे भूमिप सर्वस्वे भूमिपाल परायणे।।
भूमिपानां सुखकरे भूमिं देहि च भूमिदे। इदं स्तोत्रं महापुण्यं प्रातरुत्थाय यःपठेत्।।
कोटिजन्मसु स भवेद् बलवान् भूमिपेश्वरः। भूमिदान कृतं पुण्यं लभ्यते पठनाज्जनैः।।
भूमिदानहरात् पापान्मुच्यते नाऽत्र संशयः। अम्बुवाची भूकरण पापात् स मुच्यतेध्रुवम्।।
अन्यकूपे कूपखनन् पापात् स मुच्यते ध्रुवम्। परभूमिहरात् पापान्मुच्यतेनाऽत्र संशयः।।
भूमौ वीर्यत्यागपापाद् भूमौ दीपादि स्थापनात्। पातेन मुच्यते सोऽपि स्तोत्रस्य पठनान्मुने।।
अश्वमेधशतं पुण्यं लभते नाऽत्र संशयः। भूमिदेव्या महास्तोत्रं सर्वकल्याणकारकम्।।

।। श्री देवीभागवते महापुराणे नवमस्कन्धे नवमोऽध्यायः।।

***

☛ माँ लक्ष्मी की प्रसन्नता के लिए श्री शंकराचार्य द्वारा वसन्ततिलकादि छन्द में निर्मित श्रीकनकधारा स्तोत्र का प्रतिदिन पाठ करने से धन की वृद्धि होती हैं। एवं कुबेर के समान लक्ष्मी प्राप्ति होती है।

श्री कनकधारास्तोत्रम्

श्रीविद्या परिपूर्ण मेरुशिखरे बिन्दु त्रिकोणस्थिते,
वागीशेष महेश भूतचरणे मञ्चेशिवा कारके।
कामाक्षीं करुणा रसार्णवमयीं कामेश्वरांकेस्थिताम्,
काञ्ची चिन्मय कामकोटि निलयां श्रीब्रह्मविद्यां भजे।।

अङ्गं हरेः पुलक भूषणमाश्रयन्ती भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम्।
अङ्गीकृताखिलविभूतिरपाङ्गलीला माङ्ल्यदाऽस्तु मम मङ्गलदेवतायाः।। 1।।

मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः प्रेमत्रपा प्रणि हितानि गतागतानि।
माला दृशोर्मधुकरीव महोत्पले या सामे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः।। 2।।

विश्वा मरेन्द्र पद विभ्रम दानदक्ष मानन्दहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्ध मिन्दीवरोदर सहोदरमिन्दिरायाः।। 3।।

आमीलिताक्ष मधिगम्य मुदा मुकुन्द मानन्दकन्द मनिमेष मनङ्गतन्त्रम्।
आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रं भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः।। 4।।

बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या हारावलीव हरिनीलमयी विभाति।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः।। 5।।

कालाम्बुदालिललितोरसि कैटभारेर्धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव।
मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्तिर्भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः।। 6।।

प्राप्तं पदं प्रथमतः किलयत्प्रभावान्माङ्गल्य भाजि मधुमाथिनि मन्मथेन।
मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्धं मन्दालसं च मकरालयकन्यकायाः।। 7।।

दद्याद्दया नुपवनो द्रविणाम्बुधारा मस्मिन्नकिञ्चन विहङ्गशिशौ विषण्णे।
दुष्कर्म घर्ममपनीय चिराय दूरं नारायण प्रणयिनी नयनाम्बुवाहः।। 8।।

इष्टा विशिष्टमतयोऽपि ययादयार्द्र दृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते।
दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदर दीप्तिरिष्टां पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्कर विष्टरायाः।। 9।।

गीर्देवतेति गरुडध्वज सुन्दरीति शाकम्भरीति शशि शेखर वल्लभेति।
सृष्टि स्थिति प्रलयकेलिषु संस्थितायै तस्यै नमस्त्रिभुवनैक गुरोस्तरुण्यै।। 10।।

श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै रत्यै नमोऽस्तु रमणीय गुणार्णवायै।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्र निकेतनायै पुष्टयै नमोऽस्तु पुरुषोत्तवल्लभायै।। 11।।

नमोऽस्तु नाली कनिभाननायै नमोऽस्तु दुग्धो दधि जन्मभूत्यै।
नमोऽस्तु सोमामृत सोदरायै नमोऽस्तु नारायण वल्लभायै।। 12।।

सम्पत्कराणि सकलेन्द्रिय नन्दनानि साम्राज्य दान विभवानि सरोरुहाक्षि।
त्वद्वन्दनानि दुरिता हरणोद्यतानि मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये।। 13।।

यत्कटाक्ष समुपासना विधिः सेवकस्य सकलार्थ सम्पदः।
सन्तनोति वचनाङ्ग मानसैस्त्वां मुरारि हृदयेश्वरीं भजे।। 14।।

सरसिज निलये सरोज हस्ते धवल तमांशुक गन्ध माल्य शोभे।
भगवति हरि वल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवन भूतिकरि प्रसीद मह्यम्।। 15।।

दिग्घस्तिभिःकनककुम्भमुखावसृष्ट स्वर्वाहिनी विमलचारुजलप्लुताङ्गीम्।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष लोकाधिनाथ गृहिणी ममृताब्धिपुत्रीम्।। 16।।

कमले कमलाक्ष वल्लभे त्वं करुणा पूरत रङ्गितै रपाङ्गैः।
अवलोकय मामकिञ्चनानां प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः।। 17।।

स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं त्रयी मयीं त्रिभुवन मातरं रमाम्।
गुणाधिका गुरुतर भाग्य भागिनो भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः।। 18।।

स्तोत्रं सुवर्ण धारा यच्छङ्कराचार्य निर्मितम्।
त्रिसंध्यं यः पठेन्नित्यं सः कुबेर समो भवेत्।। 19।।

***

या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी,
गम्भीरावर्त नाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया।
या लक्ष्मीर्दिव्यरूपैर्मणिगण खचितैः स्नापिता हेमकुम्भैः,
सा नित्यं पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमांगल्ययुक्ता।।

धर्म से कर्म इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि :-
धर्म करके भगवान से मांगना पड़ता है, जबकि :-
कर्म करने से भगवान को स्वयं ही देना पड़ता है।

॥ नर्मदाष्टकम् ॥

ध्यान - आदौ ब्रह्माण्ड खण्डे त्रिभुवन विवरे, कल्पदा सा कुमारी
मध्याह्ने शुद्ध रेवा वहति सुरनदी, वेद कण्ठोपकण्ठैः।
श्रीकण्ठे कन्यरूपा ललित शिवजटा, शंकरी ब्रह्म शान्तिः
सा देवी वेद गंगा ऋषिकुल तरिणी, नर्मदा मां पुनातु।।

सबिन्दु सिन्धु सुस्खलत्तरंग भंग रञ्जितं, द्विषत्सु पाप जात-जात कारि-वारि संयुतम्।
कृतान्त दूत काल भूत भीतिहारि वर्मदे, त्वदीय पाद पंकजं नमामि देवि नर्मदे।।1।।

त्वदम्बु लीन दीन मीन दिव्य सम्प्रदायकं, कलौ मलौघ भारहारि सर्वतीर्थ नायकम्।
सुमत्स्य कच्छ नक्र चक्र चक्रवाक शर्मदे, त्वदीय पाद पंकजं नमामि देवि नर्मदे।।2।।

महागभीर नीर पूर पाप धूत भूतलं, ध्वनत् समस्त पाप कारि दारिता पदाचलम्।
जगल्लये महाभये मृकण्डु सूनु हर्म्यदे, त्वदीय पाद पंकजं नमामि देवि नर्मदे।।3।।

गतं तदैव मे भयं त्वदम्बु वीक्षितं यदा, मृकण्ड सूनु शौनकासुरारि सेवि सर्वदा।
पुनर्भवाब्धि जन्मजं भवाब्धि दुःख वर्मदे, त्वदीय पाद पंकजं नमामि देवि नर्मदे।।4।।

अलक्ष-लक्ष किन्नरामरासुरादि पूजितं, सुलक्ष नीर तीर-धीर पक्षि लक्ष कूजितम्।
वशिष्ठ शिष्ट पिप्लादि कर्दमादि शर्मदे, त्वदीय पादपंकजं नमामि देवि नर्मदे।।5।।

सनत्कुमार नाचिकेत कश्यपात्रि षट्पदै धृतं स्वकीय मानसेषु नारदादि षट्पदैः।
रवीन्दु-रन्ति देव-देव राज कर्म शर्मदे, त्वदीय पादपंकजं नमामि देवि नर्मदे।।6।।

अलक्ष लक्ष-लक्ष पाप लक्ष सार सायुधं, ततस्तु जीव जन्तु तन्तु भुक्ति-मुक्ति दायकम्।
विरञ्चि-विष्णु-शंकर स्वकीय धाम वर्मदे, त्वदीय पादपंकजं नमामि देवि नर्मदे।।7।।

अहोऽमृतं स्वनं क्षुतं महेश केश जातटे, किरात सूत वाडवेषु पण्डिते शठे नटे।
दुरन्त पाप-ताप हारि सर्वजन्तु शर्मदे, त्वदीय पाद पंकजं नमामि देवि नर्मदे।।8।।

इदन्तु नर्मदाष्टकं त्रिकालमेव ये सदा पठन्ति ते निरन्तरं न यान्ति दुर्गतिं कदा।
सुलभ्य देह दुर्लभं महेश धाम गौरवं, पुनर्भवा नरा न वै विलोकयन्ति रौरवम्।।
त्वदीय पाद पंकजं नमामि देवि नर्मदे।। त्वदीय पाद पंकजं नमामि मातु नर्मदे।।

ॐ नर्मदायै नमः प्रातर्नर्मदायै नमो निशि। नमस्ते नर्मदे देवि त्राहि मां भवसागरात्।।
ॐ उत्तिष्ठ त्वं महादेवि, उत्तिष्ठ जगदीश्वरि। उत्तिष्ठ भद्रकाली त्वं त्रैलोक्य मंगलं कुरु।।

शिवाष्टक (शिव प्रार्थना)

कर्पूर गौरं करुणावतारं, संसार सारं भुजगेन्द्र हारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानि सहितं नमामि।।

मन्दार माला कलि तालकायै, कपाल मालांकितशेखराय।
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय, नमः शिवायै च नमः शिवाय।।

जय शिवशंकर, जय गंगाधर, करुणाकर करतार हरे।
जय कैलासी, जय अविनाशी, सुखराशी सुखसार हरे।।
जय शशिशेखर जय डमरुधर जय-जय प्रेमागार हरे।
जय त्रिपुरारी, जय मदहारी, अमित अनन्त अपार हरे।।
निर्गुण जय जय सगुण अनामय, निराकार साकार हरे।
पारवतीपति हरहर शम्भो! पाहि पाहि दातार हरे।। 1।।

जय रामेश्वर,जय नागेश्वर, वैद्यनाथ केदार हरे।
मल्लिकार्जुन, सोमनाथ जय, महाकाल,ओंकार हरे।।
त्र्यम्बकेश्वर जय घुश्मेश्वर, भीमेश्वर जगतार हरे।
काशीपति श्रीविश्वनाथ जय, मंगलमय अधहार हरे।।
नीलकण्ठ जय भूतनाथ जय, मृत्युञ्जय अविकार हरे।
पारवतीपति हरहर शम्भो! पाहि पाहि दातार हरे।। 2।।

जय महेश जय जय भवेश,जय आदिदेवमहादेव विभो।
किस मुख से हे गुणातीत, प्रभु तव अपार गुण वर्णन हो।
जय भवकारक, तारक, हारक, पातकदारक, शिवशम्भो!
दीन दुःखहर, सर्वसुखाकर, प्रेमसुधाकर की जय हो।
पार लगादो भवसागर से, बनकर करुणाधार हरे।
पारवतीपति हरहर शम्भो! पाहि पाहि दातार हरे।। 3।।

जय मनभावन, जय अति पावन, शोक नशावन शिवशम्भो।
विपद विदारन अधम उधारन, सत्य सनातन शिवशम्भो।
सहजवचन,हर जलज नयनवर, धवलवरन तनशिवशम्भो।

मदन दहनकर पापहरण हर,चरन मनन धन शिवशम्भो।
विवसन, विश्वरूप, प्रलयंकर जग के मूलाधार हरे।
पारवतीपति हरहर शम्भो! पाहि पाहि दातार हरे।। 4।।

भोलानाथ कृपालु दयामय, औढर दानी शिव योगी।
निमिष मात्र में देते है नव-निधि मनमानी शिव योगी।
सरल हृदय अति करुण सागर अकथ कहानी शिव योगी।
भक्तों पर सर्वस्व लुटाकर बने मशानी शिव योगी।
स्वयं अकिञ्चन,जन मन रञ्जन पर शिव परम उदार हरे।
पारवतीपति हरहर शम्भो! पाहिपाहि दातार हरे।। 5।।

आशुतोष इस मोहमयी निद्रा से मुझे जगा देना।
विषम वेदना से विषयों की मायाधीश छुड़ा देना।
रूप सुधा की एक बूँद से जीवन मुक्त बना देना।
दिव्य ज्ञान भण्डार युगल चरणों की लगन लगा देना।
एक बार इस मन मन्दिर में कीजे पद सञ्चार हरे।
पारवतीपति हरहर शम्भो ! पाहि पाहि दातार हरे।। 6।।

दानी हो दो भिक्षा में अपनी अनपायिनी भक्ति प्रभो।
शक्तिमान हो दो अविचल निष्काम प्रेम की शक्ति प्रभो।
त्यागी हो दो इस असार संसार से पूर्ण विरक्ति प्रभो।
परमपिता हो दो तुम अपने चरणों में अनुरक्ति प्रभो।
स्वामी हो निज सेवक की सुन लेना करुण पुकार हरे।
पारवतीपति हरहर शम्भो ! पाहि पाहि दातार हरे।। 7।।

तुम बिन बेकल हूँ प्राणेश्वर आ जाओ भगवन्त हरे।
चरण-शरण की बाँह गहो हे! उमारमण प्रिय कन्त हरे।
विरह व्यथित हूँ दीन दुःखी हूँ दीन दयालु अनन्त हरे।
आओ तुम मेरे हो जाओ आजाओ भगवन्त हरे।
मेरी इस दयनीय दशा पर कुछ तो करो विचार हरे।
पारवतीपति हरहर शम्भो ! पाहि पाहि दातार हरे।। 8।।
शिव पारवतीपति हरहर शम्भो ! पाहि पाहि दातार हरे।।

शिवपरिवारस्य ध्यानमावाहनपूजनम्

गणपति - ॐ गणानां त्वा गणपति गुं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति गुं हवामहे निधीनां त्वा निधिपति गुं हवामहे वसोमम।।
आहमजानि गर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्।।

गौरी - ॐ अम्बेऽम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ् काम्पीलवासिनीम्।।

नन्दीश्वर - ॐ आशुः शिशानोवृषभोनभीमो घनाघनः
क्षोभणश्श्चर्षणीनाम्। सङ्क्रन्दनोनिमिषऽएकवीरः
शत गुं सेनाऽअजयत्साक मिन्द्रः।।

कार्तिक - ॐ यदक्रन्द्रः प्रथमं जायमानऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्यं महि जातन्तेऽअर्वन्।।

सर्प - ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

पार्वती - ॐ आयंगौः पृश्निरक्रमी दस दन्मातरम्पुरः।
पितरञ्च प्रयन्त्स्वः।।

शिव - ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय
च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।

***

सुविचार

ॐ सानन्दं सदनं सुताश्च सुधियः कान्ता न दुर्भाषिणी,
सन्मित्रं सुधनं स्वयोषिति रतिश्चाज्ञापराः सेवकाः।
आतिथ्यं शिवपूजनं प्रतिदिनं मृष्टान्न पानं गृहे,
साधोः संगमुपासते हि सततं धन्यो गृहस्थाश्रमः।।

"अभिषेक प्रिय शिवः"

। शिवपरिवारपूजनोपरान्तेऽभिषेकं कुर्यात्।

षडंगन्यासाः -

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ गुं समिमं दधातु। विश्वे देवा सऽइह मादयन्तामों३ प्रतिष्ठ।। **ॐ हृदयाय नमः।।**

ॐ अवोद्धयग्निः समिधा जनानाम्प्रति धेनुमिवायतीमुषासम्। यह्वा ऽइवप्रवयामुज्जिहानाः प्रभानवः सिस्रते नाकमच्छ।। **ॐ शिरसे स्वाहा।।**

ॐ मूर्द्धानन्दिवोऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृतऽआ जातमग्निम्। कवि गुं सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः।। **ॐ शिखायै वषट्।।**

ॐ मर्म्माणिते वर्म्मणाच्छा दयामि सोमस्त्वा राजा मृतेना नुवस्ताम्। उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानुदेवामदन्तु।। **ॐ कवचाय हुम्।।**

ॐ विश्वतश्चक्षु रुत विश्वतो मुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावा भूमीजनयन्देव एकः।। **ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्।।**

ॐ मानस्तो केतनयेमानऽआयुषि मानो गोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः। मानोवीरान्नुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे।। **ॐ अस्त्राय फट्।।**

ध्यान - ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्वबन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

ॐ गणनाथ सरस्वती रवि शुक्र बृहस्पतीन्।
पञ्चैतान् संस्मरेन्नित्यं वेदवाणी प्रवर्तते।।
गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णुर्गुरूर्देवो महेश्वरः।
गुरूः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
शारदा शारदाम्भोज वदना वदनाम्बुजे।
सर्वदा सर्वदास्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात्।।

।। प्रथमोऽध्यायः ।।

हरिः ॐ गणानां त्वा गणपति गुं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति गुं हवामहे निधीनां त्वा निधिपति गुं हवामहे वसोमम।। आहमजानि गर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्।। 1।। गायत्री त्रिष्टुब्जगत्त्य-नुष्टुप्पंक्तयासह।। बृहत्त्युष्णिहा ककुप्सूचीभिः शम्यन्तुत्त्वा।। 2।। द्विपदा याश्च्चतुष्पदास्त्रिपदायाश्च्च षट्पदाः।। विच्छन्दायाश्च्च सच्छन्दाः सूचीभिः शम्यन्तुत्त्वा।। 3।। सहस्तोमाः सहछन्दसऽआवृतः सहप्रमाऽ ऋषयः सप्तदैव्याः।। पूर्वेषाम्पन्थामनुदृश्यधीराऽ अन्वाले भिरे रत्थ्योनरश्मीन्।। 4।। यज्जाग्ग्रतो दूरमुदैति दैवन्तदुसुप्तस्य तथैवैति।। दूरंगमज्ज्योतिषाञ्ज्योतिरेकन्तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।। 5।। येन कर्म्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषुधीराः।। यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानान्तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।। 6।। यत्त्प्रज्ञानमुत चेतोधृतिश्च यज्जयोतिरन्तरमृतम्प्रजासु।। यस्मान्नऽऋतेकिञ्चन कर्मक्रियते तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु।। 7।। येनेदम्भूतम्भुवनम्भविष्यत्त्परिगृहीतममृतेन सर्वम्।। येनयज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।। 8।। यस्मिन्नृचःसामयजू गुं षियस्मिन्प्रतिष्ष्ठिता रथना भावि वाराः।। यस्मिंश्चित्त गुं सर्वमोतम्प्रजानान्तन्तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।। 9।। सुषारथि रश्वानिवयन्मनुष्यान्ने नीयते भीशुभिर्वाजिनऽइव।। हृत्प्रतिष्ठंयदजिरञ्जविष्ठन्तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु।। 10।।

इति प्रथमोऽध्यायः।।

मेषराशिं गते सूर्ये सिंहराशौ बृहस्पतौ। उज्जयिन्यां भवेत् कुम्भः सदा मुक्ति प्रदायकः।।
मकरे च दिवानाथे वृषगे च बृहस्पतौ। कुम्भयोगो भवेत्तत्र प्रयागे ह्यतिदुर्लभः।।

।। द्वितीयोऽध्यायः ।।

हरिः ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमि गुं सर्वतस्पृत्वाऽत्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम्।। 1।। पुरुष एवेद गुं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।। 2।। एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।। 3।। त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत्सा शनानशने अभि।। 4।। ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।। 5।। तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये।। 6।। तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दा गुं सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।। 7।। तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः।। 8।। तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये।। 9।। यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते।। 10।। ब्राह्मणोऽस्य मूखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या गुं शूद्रो अजायत।। 11।। चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।। 12।। नाभ्या आसीदन्तरिक्ष गुं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ2 अकल्पयन्।। 13।। यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।। 14।। सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम्।। 15।। यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। तेह नाकं महिमानःसचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।। 16।। अद्भ्यः

सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्चविश्श्वश्व कर्म्मणः समवर्त्तताग्ग्रे।। तस्यत्त्वष्टाविदधद्रूपमेति तन्न्मर्त्यस्य देवत्वमा जानमग्ग्रे।। 17।। वेदाहमेतम्पुरुषम्महान्तमादित्यवर्ण्णन्तमसः परस्तात्।। तमेवविदित्त्वाति मृत्युमेतिनान्न्यः पन्थाविद्यतेऽयनाय।। 18।। प्रजापतिश्श्चरति गर्ब्भेऽअन्तरजाय मानो बहुधा विजायते।। तस्ययोनिम्परिपश्यन्ति धीरास्तस्मिन्न्हतस्थुर्ब्भुवनानि विश्श्वा।। 19।। योदेवेब्भ्यऽ आतपति योदेवानाम्पुरोहितः पूर्वोयोदेवेब्भ्यो जातोनमो रुचायब्ब्राह्मये।। 20।। रुचम्ब्राह्मञ्जन यन्तो देवाऽअग्ग्रेतदब्ब्रुवन्।। यस्त्वैवंब्ब्राह्मणो विद्यात्तस्यदेवाऽअसन्न्वशे।। 21।। श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं मइषाण।। 22।। इति द्वितीयोऽध्यायः।।

।। तृतीयोऽध्यायः।।

हरिः ॐ आशुः शिशानोवृषभोनभीमो घनाघनः क्षोभण-श्श्चर्षणीनाम्।। सङ्क्रन्दनोनिमिष ऽएकवीरः शत गुं सेनाऽअजयत्साक मिन्द्रः।। 1।। सङ्क्रन्दने नानिमिषेण जिष्णुना युत्त्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना।। तदिन्द्रेण जयततत्सहद्ध्वंयुधोनरऽइषु हस्तेन वृष्णा।। 2।। सऽइषु हस्तैः सनिषङ्गिभिर्वशीस गुं स्स्रष्टासयुधऽइन्द्रोगणेन।। स गुं सृष्टजित्त्सोमपा- बाहुशर्द्ध्युग्ग्र धन्वाप्प्रतिहिताभिरस्ता।। 3।। बृहस्पते परिदीयारथेन रक्षोहामित्राँ२ऽअपबाधमानः प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणोयुधा-जयन्नस्म्मा कमेद्ध्यविताथानाम्।। 4।। बलविज्ञाय स्त्थविरः प्रवीरः सहस्वान्वाजी सहमानऽउग्ग्रः।। अभिवीरोऽअभिसत्त्वा सहोजा जैत्रमिन्द्ररथमातिष्ठ गोवित्।। 5।। गोत्रभिदङ्गो विदंवज्ज्र

बाहुञ्जयन्तमज्ज्मप्रमृणन्तमोजसा।। इम गुं सजाताऽअनुवीर यद्ध्वमिन्द्र गुं सखायोऽअनुस गुं रभद्ध्वम्।। 6।। अभिगोत्राणि सहसा गाहमानो दयोवीरः शतमन्न्युरिन्द्रः।। दुश्श्च्यवनः पृतना षाडयुद्ध्योऽस्माक गुं सेनाऽअवतुप्प्रयुत्सु।। 7।। इन्द्रऽआसान्नेता बृहस्प्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतुसोमः।। देवसेनाना मभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्मरुतो यन्त्वग्ग्रम्।। 8।। इन्द्रस्य वृष्ष्णोवरुणस्यराज्ञऽ आदित्यानाम्मरुता गुं शर्द्धऽउग्ग्रम्।। महामनसाम्भुवनच्च्यवानाङ्घोषो देवानाञ्जयता मुदस्थात्।। 9।। उद्धर्षय मघवन्नायुधान्न्युत्सत्त्वनाम्मामकानाम्मना गुं सि।। उद्वृत्र हन्वाजिनां वाजिनान्न्युद् द्रथानाञ्जयतां यन्तु घोषाः।। 10।। अस्माकमिन्द्रः समृतेषुद्ध्वजेष्वस्माकंय्याऽइषवस्ताजयन्तु।। अस्माकंवीराऽउत्तरे भवन्त्वस्म्माँ२ऽउदेवाऽअवताहवेषु।। 11।। अमीषाञ्चित्तम्प्रति लोभयन्ती गृहाणाङ्गान्न्यप्प्वेपरेहि।। अभिप्प्रेहि निर्द्दहहृत्सु शोकैरन्धेनामित्रास्तमसा सचन्ताम्।। 12।। अवसृष्ष्टा परापत शरव्येब्ब्रह्मस गुं शिते।। गच्छामित्रान्प्प्रपद्यस्व मामीषाङ्कञ्चनोच्छिषः।। 13।। प्रेताजयता नरऽइन्द्रोवः शर्म्मयच्छतु।। उग्ग्रावः सन्तु बाह्वोनाधृष्ष्या यथासथ।। 14।। असौया सेनामरुतः परेषा मब्भ्यैतिनऽओजसास्प्पद्धमाना।। ताङ्गूहततमसापव्व्रतेन यथामीऽ अन्न्योऽअन्न्यन्नजानन्।। 15।। यत्र बाणाः सम्पतन्तिकुमारा विशिखाऽइव।। तन्न इन्द्रो बृहस्प्पतिरदितिः शर्म्मयच्छतु विश्श्वाहाशर्म्म यच्छतु।। 16।। मर्म्माणिते वर्म्मणाच्छा दयामि सोमस्त्वा राजा मृतेना नुवस्ताम्। उरोर्वरीयोवरुणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानुदेवामदन्तु।। 17।।

।। इति तृतीयोऽध्यायः।।

।। चतुर्थोऽध्यायः ।।

हरिः ॐ विब्भ्राड् बृहत्पिबतु सोम्म्यम्मद्ध्वा युद्‌र्दधद्यज्ञपता वविहुतम् ।। वातजूतोयोऽअभि रक्षतित्मनाप्प्रजाः पुपोषपुरुधाविराजति ।। 1 ।। उदुत्यञ्जातवेदसन्देवंवहन्ति केतवः ।। दृशे विश्श्वाय सूर्य्यम् ।। 2 ।। येनापावक चक्षसा भुरण्ण्यन्तञ्जनाँ२ऽअनु त्वंवरुण पश्यसि ।। 3 ।। दैव्व्या वद्ध्वर्य्यूऽआगत गुं रथेनसूर्य्यत्वचा ।। मद्ध्वायज्ञ गुं समञ्जाथे ।। तम्प्रत्क्नथाऽयं वे नश्शिचत्रन्देवानाम् ।। 4 ।। तम्प्रत्क्नथा पूर्वथा विश्श्वथेमथा ज्ज्येष्ठता तिम्बर्हिषद गुं स्वर्विदम् ।। प्रतीचीनं वृजनन्दो हसेधुनिमाशुञ्जयन्त मनुया सुवर्द्धसे ।। 5 ।। अयंव्वे नश्च्चोदयत्पृश्श्नि गर्ब्भाज्ज्योतिर्जरायू रजसोव्विमाने ।। इममपा गुं संगमे सूर्य्यस्य शिशुन्न विप्प्रामतिभीरिहन्ति ।। 6 ।। चित्रन्देवानामुदगादनी कञ्चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्ग्नेः ।। आप्प्राद्यावा पृथिवीऽअन्तरिक्ष गुं सूर्यऽआत्त्मा जगतस्तस्थुषश्श्च ।। 7 ।। आनऽइडाभिर्विदथे सुशस्ति व्विश्श्वा नरः सवितादेवऽएतु ।। अपि यथा युवानो मत्सथानो व्विश्श्वञ्जगदभिपित्त्वे मनीषा ।। 8 ।। यदद्यकच्चवृत्रहन्नुदगाऽअभिसूर्य्य ।। सर्वन्तदिन्द्रते वशे ।। 9 ।। तरणिर्विश्श्व दर्शतोज्ज्योतिष्कृदसिसूर्य्य ।। विश्श्वमाभासिरोचनम् ।। 10 ।। तत्सूर्य्यस्य देवत्वन्तन्महित्वम्मद्ध्या कर्त्तोर्व्वितत गुं सञ्जभार ।। यदेदयुक्त हरितः सधस्त्थादाद्द्रात्रीवासस्तनुते सिमस्म्मै ।। 11 ।। तन्मित्रस्य वरुणस्याभि चक्षेसूर्य्यो रूपङ्कृणुतेद्योरुपस्त्थे ।। अनन्त मन्न्यद्द्रुशदस्यपाजः कृष्ण्णमन्न्यद्धरितः सम्भरन्ति ।। 12 ।। बण्णमहाँ२ ऽअसि सूर्य्यबडादित्त्यमहाँ२ऽअसि ।। महस्ते सतो महिमा पनस्यतेद्धा देवमहाँ२ऽअसि ।। 13 ।। बट्सूर्यश्रवसामहाँ२ऽअसि ।। सत्रादेवमहाँ२ ऽअसि ।। मन्न्हा देवानामसुर्य्यः पुरोहितो व्विभुज्ज्योतिरदाब्भ्यम् ।। 14 ।।

श्रायन्त ऽइवसूर्यंविश्श्वेदिन्द्रस्य भक्षत।। वसूनिजाते जनमानऽ ओजसाप्प्रति भागन्नदीधिम।। 15।। अद्यादेवाऽउदिता सूर्य्यस्यनिर गुं हसः पिपृतानिरवद्यात्।। तन्नोमित्रोवरुणो मामहन्ता मदितिः सिन्धुः पृथिवीऽउतद्यौः।। 16।। आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यंच।। हिरण्ण्येन सविता रथेना देवोयाति भुवनानि पश्यन्।। 17।।

।। इति चतुर्थोऽध्यायः।।

।। पञ्चमोऽध्यायः।।

हरिः ॐ नमस्ते रुद्रमन्न्यवऽउतोतऽइषवे नमः।। बाहुब्भ्यामुतते नमः।। 1।। यातेरुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी।। तया नस्तन्न्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचा कशीहि।। 2।। यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे।। शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरुमा हि गुं सीः पुरुषञ्जगत्।। 3।। शिवेन वचसात्त्वा गिरिशाच्छा वदामसि।। यथानः सर्वमिज्जगदयक्ष्म गुं सुमनाऽअसत्।। 4।। अद्ध्यवो चदधिवक्ताप्प्रथमोदैव्व्योभिषक्।। अहीँश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्श्च यातुधान्न्यो ऽधराचीः परासुव।। 5।। असौयस्ताम्म्रोऽअरुणऽउतबब्भ्रुः सुमंगलः।। ये चैन गुं रुद्राऽ अभितो दिक्षुश्श्रिताः सहस्रशोऽवैषा गुं हेडऽईमहे।। 6।। असौयोऽवसर्प्पति नीलग्ग्रीवो विलोहितः।। उतैनङ्गोपाऽअदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहार्यः सदृष्टो मृडयाति नः।। 7।। नमोऽस्तु नीलग्ग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे।। अथोयेऽअस्य सत्त्वानोऽहन्तेब्भ्योऽकरन्नमः।। 8।। प्रमुञ्च धन्वनस्त्व मुभयोरात्त्क्न्योर्ज्ज्याम्।। याश्च्चते हस्तऽइषवः पराताभगवोव्वप।। 9।। विज्ज्यन्धनुः कपर्दिनोविशल्ल्यो बाणवाँ२ऽउत।। अनेशन्नस्ययाऽ इषवऽआभुरस्य निषङ्गधिः।। 10।। यातेहेतिर्म्मीढुष्टमहस्ते बभूवते धनुः।। तयास्म्मान्विश्श्व तस्त्वमयक्ष्मया परिभुज।। 11।। परितेधन्न्वनो

हेतिरस्म्मान्वृणक्तु विश्श्वतः।। अथोयऽइषुधिस्तवारेऽ अस्म्मन्निधेहितम्।। 12।। अवतत्त्य धनुष्ट्व गुं सहस्राक्ष शतेषुधे।। निशीर्य्यशल्ल्यानाम्मुखा शिवोनः सुमनाभव।। 13।। नमस्तऽआयुधायाना तताय धृष्ण्णवे।। उभाब्भ्यामुतते नमो बाहुब्भ्यान्तवधन्न्वने।। 14।। मानो महान्तमुतमानोऽ अर्ब्भकम्मानऽउक्षन्तमुतमानऽउक्षितम्।। मानोव्वधीः पितरम्मोत मातरम्मानः प्प्रियास्तन्न्वो रुद्द्ररीरिषः।। 15।। मानस्तोकेतनयेमानऽ आयुषि मानो गोषुमानोऽ अश्वेषुरीरिषः। मानो वीरान्नुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे।। 16।। नमो हिरण्ण्य बाहवे सेनान्न्ये दिशाञ्च पतये नमोनमो वृक्षेब्भ्यो हरि केशेब्भ्यः पशूनाम्पतये नमो नमः शष्प्पिञ्जरायत्त्विषीमते पथीनाम्पतये नमो नमो हरिकेशायो पवीतिने पुष्ट्टानाम्पतये नमो नमो बब्भ्लुशाय व्याधिनेऽन्नानाम्पतये नमो नमो भवस्यहेत्त्यै जगताम्पतये नमो नमो रुद्द्रायाततायिनेक्षेत्राणाम्पतये नमो नमः सूतायाहन्त्यै वनानाम्पतये नमो नमो रोहितायस्त्थपतये वृक्षाणाम्पतये नमो नमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतये नमो नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणाम्पतये नमो नमऽउच्चैर्ग्घोषायाक्क्रन्दयतेपत्तीनाम्पतये नमो नमः कृत्स्नायतया धावते सत्त्वनाम्पतये नमो नमः सहमानाय निव्व्याधिनऽआव्याधिनीनाम्पतये नमो नमो निषङ्गिणे ककुभायस्तेनानाम्पतये नमो नमो निचेरवे परिचराय रण्ण्यानाम्पतये नमो नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनाम्पतयेनमो नमो निषङ्गिणऽइषुधिमते तस्क्कराणाम्पतये नमो नमः सृकायिब्भ्योजिघा गुं सद्भ्योमुष्ण्णताम्पतये नमो नमोऽसिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यो विकृन्तानाम्पतये नमः।। 17,18,19,20,21।। नमऽउष्ण्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये नमो नमऽइषुमद्भ्यो धन्न्वायिब्भ्यश्श्चवो नमो नमऽआतन्न्वानेब्भ्यः प्रति दधानेब्भ्यश्श्चवो

नमो नमऽआयच्छद्भ्योस्यद्भ्यश्श्चवो नमो नमो विसृजद्भ्यो विद्ध्यद्भ्यश्श्चवो नमो नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्चवो नमो नमः शयानेब्भ्यऽआसीनेब्भ्यश्चवोनमो नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्चवोनमोनमः सभाब्भ्यः सभापतिब्भ्यश्चवो नमो नमोऽश्वेब्भ्योऽ श्वपतिब्भ्यश्चवो नमो नमऽआव्याधिनीब्भ्योविविद्ध्यन्तीब्भ्यश्चवो नमो नमऽउगणाब्भ्यस्तृ गुं हतीब्भ्यश्चवो नमो नमो गणेब्भ्यो गणपतिब्भ्यश्चवो नमो नमो व्रातेब्भ्योव्रातपतिब्भ्यश्चवो नमो नमो गृत्सेब्भ्योगृत्सपतिब्भ्यश्चवो नमो नमो विरूपेब्भ्योविश्वरूपेब्भ्यश्चवो नमो नमः सेनाब्भ्यः सेनानिब्भ्यश्चवो नमो नमो रथिब्भ्योऽअरथेब्भ्यश्चवो नमोनमः क्षत्तृब्भ्यः सङ्ग्रहीतृ ब्भ्यश्चवो नमो नमो महद्भ्यो ऽअर्ब्भकेब्भ्यश्चवो नमः।। 22,23,24,25,26।। नमस्तक्षब्भ्यो रथकारेब्भ्यश्चवो नमो नमः कुलालेब्भ्यः कम्मरिब्भ्यश्चवो नमो नमो निषादेब्भ्यः पुञ्जिष्ठेब्भ्यश्चवो नमो नमः श्वनिब्भ्यो मृगयुब्भ्यश्चवो नमो नमः श्वब्भ्यः श्वपतिब्भ्यश्चवो नमो नमो भवायच रुद्द्रायच नमः शर्वायच पशुपतये च नमो नीलग्ग्रीवाय च शितिकण्ठाय च।। 27, 28।। नमः कपर्द्दिने चव्युप्तकेशायच नमः सहस्राक्षायचशतधन्वनेच नमो गिरिशयाय चशिपिविष्ट्टाय च नमो मीढुष्ट्टमाय चेषुमते च।। 29।। नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च नमो वृद्द्धाय च सवृधे च नमोऽग्याय चप्प्रथमाय च।। 30।। नमऽआशवे चाजिराय च नमः शीग्घ्याय च शीब्भ्याय च नमऽऊर्म्याय चावस्वन्न्याय च नमो नादेयाय चद्द्वीप्प्याय च।। 31।। नमोज्ज्येष्ठ्ठाय च कनिष्ठ्ठायच नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो मद्ध्यमाय चापगल्भाय चनमो जघन्न्याय च बुध्न्याय च।। 32।। नमः सोब्भ्याय चप्प्रति सर्य्याय च नमो याम्म्याय च क्षेम्म्याय चनमः श्श्लोक्क्याय चावसान्न्याय च नमऽउर्वर्य्याय च खल्ल्याय च।। 33।। नमोव्वन्न्याय चकक्ष्याय च नमः

श्रवाय चप्रति श्रवाय चनमऽआशुषेणाय चाशुरथाय च नमः शूराय चावभेदिने च।। 34।। नमो बिल्म्मिने च कवचिने च नमो वर्म्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्न्याय च।। 35।। नमो धृष्ष्णवे चप्रमृशाय चनमो निषङ्गिणे चेषुधिमते चनमस्तीक्ष्णे षवेचायुधिनेचनमः स्वायुधायच सुधन्वने च।। 36।। नमः स्रुत्याय च पत्थ्याय च नमः काट्टयाय च नीप्प्याय च नमः कुल्ल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशन्ताय च ।। 37।। नमः कूप्प्याय चावट्टयाय चनमो वीद्ध्रयाय चातप्प्याय चनमो मेग्घ्याय च विद्द्युत्याय चनमो वर्ष्ष्याय चावर्ष्ष्याय च।। 38।। नमो वात्त्याय चरेष्म्म्याय च नमो वास्तव्व्याय च वास्तुपाय च नमः सोमाय च रुद्द्राय च नमस्ताम्म्राय चारुणाय च।। 39।। नमः शङ्गवे च पशुपतये च नमऽउग्ग्राय च भीमाय च नमोऽग्ग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च नमो वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यो नमस्ताराय।। 40।। नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।। 41।। नमः पार्य्याय चावार्य्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्त्थ्याय च कूल्ल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्न्याय च ।। 42।। नमः सिकत्त्याय चप्रवाह्य्याय च नमः कि गुं शिलाय च क्षयणाय च नमः कपर्द्दिने च पुलस्तये च नमऽइरिण्ण्याय चप्रपत्थ्याय च।। 43।। नमो व्रज्जयाय च गोष्ठ्याय च नमस्तल्प्प्याय च गेह्य्याय च नमो हृदय्याय च निवेष्प्याय च नमः काट्टयाय च गह्वरेष्ठाय च।। 44।। नमः शुष्क्याय च हरित्याय च नमः पा गुं सव्व्याय च रजस्याय च नमो लोप्प्याय चोलप्प्याय च नमऽऊर्व्य्याय च सूर्व्याय च।। 45।। नमः पर्ण्णाय च पर्ण्णशदाय च नमऽउद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च नमऽआखिदते च प्रखिदते च नमऽइषुकृद्भ्योधनुष्कृद्भ्यश्च वो नमो नमो वः किरिकेब्भ्यो

देवाना गुं हृदयेब्भ्यो नमो विचिन्वत्केब्भ्यो नमो विक्षिणत्केब्भ्यो नमऽआनिर्हतेब्भ्यः।। 46।। द्रापेऽअन्ध सस्पते दरिद्द्र नीललोहित।। आसाम्प्रजानामेषाम्पशूनाम्माभेर्म्मारोङ्मोचनः किञ्चनाममत्।। 47।। इमारुद्द्राय तवसे कपर्द्दिने क्षयद्द्वीराय प्रभरामहेमतीः।। यथाशमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वम्पुष्ट्टङ्ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम्।। 48।। याते रुद्द्र शिवातनूः शिवा विश्श्वाहा भेषजी।। शिवारुतस्य भेषजी तयानो मृडजीवसे।। 49।। परिनोरुद्द्रस्य हेतिर्व्वृणक्तु परित्त्वेषस्य दुर्म्मतिरघायोः।। अवस्त्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्ष्व मीड्ढवस्तो काय तनयाय मृड।। 50।। मीढुष्ट्टम शिवतम शिवोनः सुमनाभव।। परमे वृक्षऽआयुधन्निधाय कृत्तिं वसानऽआचरपिनाकम्बिब्भ्रदागहि।। 51।। विकिरिद्द्र विलोहितनमस्तेऽअस्तु भगवः।। यास्ते सहस्र गुं हेतयोऽन्न्यमस्म्मन्निव पन्तुताः।। 52।। सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः।। तासामीशानो भगवः पराचीना मुखाकृधि।। 53।। असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्द्राऽअधि भूम्याम्।। तेषा गुं सहस्रयोजनेवधन्न्वा नितन्न्मसि।। 54।। अस्म्मिन्न्महत्त्यर्ण्णवेऽन्तरिक्षे भवाऽअधि।। तेषा गुं सहस्रयोजनेवधन्न्वा नितन्न्मसि।। 55।। नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठादिव गुं रुद्द्राऽउपश्श्रिताः।। तेषा गुं सहस्रयोजनेवधन्न्वा नितन्न्मसि।। 56।। नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वाऽअधः क्षमाचराः।। तेषा गुं सहस्रयोजनेवधन्न्वा नितन्न्मसि।। 57।। येवृक्षेषु शष्प्पिञ्जरा नीलग्ग्रीवा विलोहिताः।। तेषा गुं सहस्रयोजने वधन्न्वा नितन्न्मसि।। 58।। येभूतानामधिपतयो व्विशिखासः कपर्द्दिनः।। तेषा गुं सहस्रयोजनेवधन्न्वा नितन्न्मसि।। 59।। येपथाम्पथिरक्षयऽऐलबृदाऽआयुर्य्युधः।। तेषा गुं सहस्रयो जनेवधन्न्वा नितन्न्मसि।। 60।। येतीर्त्थानिप्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।। तेषा गुं सहस्रयो जनेवधन्न्वा नितन्न्मसि।। 61।।

येन्नेषुव्विविद्ध्यन्ति पात्रेषु पिबतोजनान्।। तेषा गुं सहस्रयो जनेवधन्न्वा नितन्न्मसि।। 62।। यऽएतावन्तश्श्च भूया गुं सश्श्चदिशो रुद्राव्वितस्थिरे।। तेषा गुं सहस्रयोजनेवधन्न्वा नितन्न्मसि।। 63।। नमोऽस्तु रुद्रेब्भ्यो येदिवि येषांव्वर्षमिषवः।। तेब्भ्यो दशप्प्राचीर्दश दक्षिणादशप्प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोद्ध्वाः।। तेब्भ्यो नमोऽअस्तुतेनो वन्तुतेनो मृडयन्तुते यन्द्विष्म्मो यश्श्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदद्ध्मः।। 64।। नमोऽस्तु रुद्रेब्भ्यो येऽन्तरिक्षे ये षांव्वातऽइषवः।। तेब्भ्यो दशप्प्राचीर्दशदक्षिणा दशप्प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोद्ध्वाः।। तेब्भ्यो नमोऽअस्तुतेनो वन्तुतेनो मृडयन्तुते यन्द्विष्म्मो यश्श्चनोद् द्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदद्ध्मः।। 65।। नमोऽस्तु रुद्रेब्भ्यो ये पृथिव्व्यांय्येषा मन्नमिषवः।। तेब्भ्यो दशप्प्राचीर्दश दक्षिणा दशप्प्रतीचीर्दशो दीचीर्दशोद्ध्वाः।। तेब्भ्यो नमोऽअस्तुतेनो वन्तुतेनो मृडयन्तुते यन्द्विष्म्मो यश्श्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदद्ध्मः।।66।। इति पञ्चमोऽध्यायः।।

।। षष्ठोऽध्यायः।।

हरिः ॐ वय गुं सोमव्व्रते तवमनस्त्तनूषुबिब्भ्रतः।। प्रजावन्तः सचेमहि।। 1।। एषते रुद्रभागः सहस्वस्रा ऽम्बिकयातञ्जुषस्व स्वाहैषते रुद्रभागऽआखुस्तेपशुः।। 2।। अव रुद्रमदीमह्यवदेवन्त्र्यम्बकम्।। यथानोवस्यसस्करद्यथानः श्श्रेयसस्करद्यथानोव्व्यवसाययात्।। 3।। भेषजमसि भेषजङ्गवेऽश्वाय पुरुषाय भेषजम्।। सुखम्मेषाय मेष्ष्यै।। 4।। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्। उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः।। 5।। एतत्ते रुद्राऽवसन्तेन परोमूजवतोऽतीहि।। अवततधन्न्वा पिनाकावसः कृत्तिवासाऽअहि गुं

सन्नः शिवोऽतीहि।। 6।। त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्य पस्य त्र्यायुषम्।। यद्देवेषु त्र्यायुषन्तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्।। 7।। शिवोनामा सिस्वधितिस्ते पितानमस्तेऽअस्तु मामाहि गुं सीः।। निवर्त्तयाम्म्यायुषेऽन्नाद्यायप्रजननायरायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्य्याय।। 8।। इति षष्ठोऽध्यायः।।

।। सप्तमोऽध्यायः।।

हरिः ॐ उग्रश्च्च भीमश्च्चद्ध्वान्तश्च्च धुनिश्च्च।। सासह्वाँश्च्चाभियुग्वाचविक्षिपः स्वाहा।। 1।। अग्नि गुं हृदयेनाशनि गुं हृदयाग्ग्रेण पशुपतिङ्कृत्स्न हृदयेन भवंय्यक्ना।। शर्व्वम्मतस्न्नाब्भ्यामीशानम्मन्न्युना महादेवमन्तः पर्शव्व्येनोग्ग्रन्देवं वनिष्ठ्ठुनावसिष्ठ्ठहनुः शिङ्गीनिकोश्याब्भ्याम्।। 2।। उग्ग्रँल्लोहितेन मित्र गुं सौव्रत्त्येन रुद्द्रन्दौर्व्रत्त्येनेन्द्रम्प्रक्क्रीडेन मरुतो बलेन साद्ध्यान्प्रमुदा।। भवस्य कण्ठ्च गुं रुद्द्रस्यान्तः पाश्र्व्यम्महा देवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठ्ठुः पशुपतेः पुरीतत्।। 3।। लोमब्भ्यः स्वाहा लोमब्भ्यः स्वाहा त्वचे स्वाहा त्वचे स्वाहा लोहिताय स्वाहा लोहिताय स्वाहा मेदोब्भ्यः स्वाहा मेदोब्भ्यः स्वाहा।। मा गुं सेब्भ्यः स्वाहा मा गुं सेब्भ्यः स्वाहा स्न्नावब्भ्यः स्वाहा स्न्नावब्भ्यः स्वाहा स्त्थब्भ्यः स्वाहा स्त्थब्भ्यः स्वाहा मज्जब्भ्यः स्वाहा मज्जब्भ्यः स्वाहा।। रेतसे स्वाहा पायवे स्वाहा।। 4।। आयासाय स्वाहा प्प्रायासाय स्वाहा संय्यासाय स्वाहा व्वियासाय स्वाहोद्यासाय स्वाहा।। शुचे स्वाहा शोचते स्वाहा शोचमानाय स्वाहा शोकाय स्वाहा।। 5।। तपसे स्वाहा तप्प्यते स्वाहा तप्यमानाय स्वाहा तप्ताय स्वाहा घर्म्माय स्वाहा।। निष्कृत्यै स्वाहा प्रायश्च्चित्यै स्वाहा भेषजाय स्वाहा।। 6।। यमाय स्वाहाऽन्तकाय स्वाहा मृत्यवे स्वाहा।। ब्रह्मणे स्वाहा ब्रह्महत्यायै स्वाहा विश्श्वेब्भ्यो देवेब्भ्यः स्वाहा द्यावापृथिवीब्भ्या गुं स्वाहा।। 7।। ।। इति सप्तमोऽध्यायः।।

।। अष्टमोऽध्यायः ।।

हरिः ॐ वाजश्च्चमे प्रसवश्च्चमे प्रयतिश्च्चमे प्रसितिश्च्चमे धीतिश्च्चमे क्रतुश्च्चमे स्वरश्च्चमेश्श्लोकश्च्चमे श्श्रवश्च्चमेश्श्रुतिश्च्चमे ज्ज्योतिश्च्चमेस्वश्च्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ।। 1 ।। प्राणश्च्चमेऽपानश्च्चमे व्यानश्च्चमेऽसुश्च्चमेचित्तञ्चमऽआधीतञ्चमे वाक्चमे मनश्च्चमे चक्षुश्च्चमे श्रोत्रञ्चमे दक्षश्च्चमे बलञ्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ।। 2 ।। ओजश्च्चमे सहश्च्चमऽआत्माचमे तनूश्च्चमे शर्म्मचमे वर्म्मचमे ऽङ्गानिचमेऽस्थीनिचमेपरू गुं षिचमे शरीराणिचमऽआयुश्च्चमे जराचमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ।। 3 ।। ज्यैठ्यञ्चमऽआधिपत्त्यञ्चमे मन्न्युश्च्चमे भामश्च्चमेऽमश्च्चमेऽम्भश्च्चमे जेमाचमे महिमाचमे वरिमाचमे प्रथिमाचमे वर्षिमाचमे द्राधिमाचमे वृद्धञ्चमे वृद्धिश्च्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ।। 4 ।। **(न.1)** ।। **सत्त्यञ्च**मे श्रद्धाचमे जगच्चमे धनञ्चमे विश्वञ्चमे महश्च्चमे क्रीडाचमे मोदश्च्चमे जातञ्चमे जनिष्ष्यमाणञ्चमे सूक्क्तञ्चमे सुकृतञ्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ।। 5 ।। ऋतञ्चमेऽमृतञ्चमेऽ यक्ष्मञ्चमे नामयच्चमे जीवातुश्च्चमे दीर्घायुत्त्वञ्चमेऽनमित्रञ्चमेऽभयञ्चमे सुखञ्चमे शयनञ्चमे सूखाश्चमे सुदिनञ्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ।। 6 ।। यन्ताचमे धर्त्ताचमे क्षेमश्च्चमे धृतिश्च्चमे विश्वञ्चमे महश्च्चमे संविच्चमे ज्ञात्रञ्चमे सूश्च्चमे प्रसूश्च्चमे सीरञ्चमे लयश्च्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ।। 7 ।। शञ्चमे मयश्च्चमे प्रियञ्चमेऽनुकामश्च्चमे कामश्च्चमे सौमनसश्च्चमे भगश्च्चमे द्रविणञ्चमे भद्द्रञ्चमे श्रेयश्च्चमे वसीयश्च्चमे यशश्च्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ।। 8 ।। **(न.2)** ।। **ऊक्क्र्च**मे सूनृताचमे पयश्च्चमे रसश्च्चमे घृतञ्चमे मधुचमे सग्धिश्च्चमे सपीतिश्च्चमे कृषिश्च्चमे वृष्ष्टिश्च्चमे जैत्रञ्चमऽ औद्भिद्यञ्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ।। 9 ।। रयिच्चमे रायश्च्चमे पुष्ष्टञ्चमे पुष्ष्टिश्च्चमे विभुचमे प्रभुचमे पूर्ण्णञ्चमे

पूर्ण्णतरञ्चमे कुयवञ्चमे ऽक्षितञ्चमे ऽन्नञ्चमे ऽक्षुच्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम्।। 10।। वित्तञ्चमे वेद्यञ्चमे भूतञ्चमे भविष्यच्चमे सुगञ्चमे सुपत्थ्यञ्चम ऽऋद्धञ्चमऽऋद्धिश्च्चमे क्लृप्तञ्चमे क्लृप्तिश्च्चमे मतिश्च्चमे सुमतिश्च्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम्।। 11।। व्व्रीहयश्च्चमे यवाश्च्चमे माषाश्च्चमे तिलाश्च्चमे मुद्गाश्च्चमे खल्ल्वाश्च्चमे प्रियङ्गवश्च्चमेऽ णवश्च्चमे श्यामाकाश्च्चमे नीवाराश्च्चमे गोधूमाश्च्चमे मसूराश्च्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम्।। 12।। (न.3)।। **अश्म्माचमे** मृत्तिकाचमे गिरयश्च्चमे पर्वताश्च्चमे सिकताश्च्चमे वनस्प्पयश्च्चमे हिरण्ण्यञ्चमेऽयश्च्चमे श्यामञ्चमे लोहञ्चमे सीसञ्चमे त्रपुचमे यज्ञेनकल्पन्ताम्।। 13।। अग्ग्निश्च्चमऽआपश्च्चमे वीरुधश्च्चमऽओषधयश्च्चमे कृष्टपच्च्या श्च्चमेऽ कृष्टपच्च्याश्च्चमे ग्ग्राम्म्याश्च्चमे पशवऽ आरण्ण्याश्च्चमे वित्तञ्चमे वित्तिश्च्चमे भूतञ्चमे भूतिश्च्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम्।। 14।। वसुचमे वसतिश्च्चमे कर्म्मचमे शक्तिश्च्चमेऽर्थश्च्चमऽ एमश्च्चमऽइत्त्याचमे गतिश्च्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम्।। 15।। (न.4)।। **अग्ग्निश्च्च**मऽइन्द्रश्च्चमे सोमश्च्चमऽइन्द्रश्च्चमे सविता चमऽइन्द्रश्च्चमे सरस्वती चमऽइन्द्रश्च्चमे पूषाचमऽइन्द्रश्च्चमे बृहस्पतिश्च्चमऽ इन्द्रश्च्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ।। 16 ।। मित्रश्च्चमऽइन्द्रश्च्चमे वरुणश्च्चमऽइन्द्रश्च्चमे धाताचमऽइन्द्रश्च्चमे त्त्वष्टाचमऽइन्द्रश्च्चमे मरुतश्च्चमऽइन्द्रश्च्चमे विश्श्वेचमे देवाऽइन्द्रश्च्चमे यज्ञेनकल्पताम्।। 17।। पृथिवीचमऽ इन्द्रश्च्चमेऽन्तरिक्षञ्चमऽइन्द्रश्च्चमे द्यौश्च्चमऽ इन्द्रश्च्चमे समाश्च्चमऽ इन्द्रश्च्चमे नक्षत्राणिचमऽइन्द्रश्च्चमे दिशश्च्चमऽइन्द्रश्च्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम्।। 18।। (न.5)।। **अ गुं शुश्च्च**मे रश्मिश्च्चमेऽ दाब्भ्यश्च्चमेऽधिपतिश्च्चमऽउपा गुं शुश्च्चमे ऽन्तर्य्यामश्च्चमऽ ऐन्द्रवायवश्च्चमे मैत्रावरुणश्च्चमऽआश्श्विनश्च्चमे प्रतिप्रस्थानश्च्चमे शुक्र श्च्चमे मन्थीचमे यज्ञेनकल्पन्ताम्।। 19।।

आग्ग्रयणश्च्चमे वैश्श्वदेवश्च्चमेद्ध्रुवश्च्चमे वैश्श्वानरश्च्चमऽ ऐन्द्राग्ग्नश्च्चमे महावैश्श्वदेवश्च्चमे मरुत्त्वतीयाश्च्चमे निष्केवल्ल्यश्च्चमे सावित्रश्च्चमे सारस्वतश्च्चमे पात्क्नीवतश्च्चमे हारियोजनश्च्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ।। 20 ।। स्रुचश्च्चमे चमसाश्च्चमे वायव्व्यानिचमे द्रोणकलशश्च्चमे ग्ग्रावाणश्च्चमेऽधिषवणेचमे पूतभृच्चमऽ आधवनीयश्च्चमे वेदिश्च्चमे बर्हिश्च्चमेऽवभृथश्च्चमेस्वागाकारश्च्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ।। 21 ।। (न.6) ।। **अग्ग्निश्च्च**मे घर्म्मश्च्चमेऽ र्क्कश्च्चमे सूर्य्यश्च्चमे प्राणश्च्चमेऽश्श्वमेधश्च्चमे पृथिवीचमेऽ दितिश्च्चमे दितिश्च्चमे द्यौश्च्चमेऽङ्गुलयः शक्वरयो दिशश्च्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ।। 22 ।। व्रतञ्चमऽऋतवश्च्चमे तपश्च्चमे संवत्सरश्च्चमेऽ होरात्रेऽऊर्व्वष्ठ्ठीवे बृहद्रथन्तरेचमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ।। 23 ।। (न.7) ।। **एकाच**मे तिस्रश्च्चमे तिस्रश्च्चमे पञ्चचमे पञ्चचमे सप्तचमे सप्तचमे नवचमे नवचमऽएकादशचमऽ एकादशचमेऽ त्रयोदशचमे त्रयोदशचमे पञ्चदशचमे पञ्चदशचमे सप्तदशचमे सप्तदशचमे नवदशचमे नवदशचमऽएकवि गुं शतिश्च्चमऽएकवि गुं शतिश्च्चमे त्रयोवि गुं शतिश्च्चमे त्रयोवि गुं शतिश्च्चमे पञ्चवि गुं शतिश्च्चमे पञ्चवि गुं शतिश्च्चमे सप्प्तवि गुं शतिश्च्चमे सप्प्तवि गुं शतिश्च्चमे नववि गुं शतिश्च्चमे नववि गुं शतिश्च्चमऽ एकत्रि गुं शच्चमऽएकत्रि गुं शच्चमे त्रयस्त्रि गुं शच्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ।। 24 ।। (न.8) ।। **चतस्रश्च्च**मेऽष्टौचमेऽष्टौचमे द्वादशचमे द्वादशचमे षोडशचमे षोडशचमे वि गुं शतिश्च्चमे वि गुं शतिश्च्चमे चतुर्विं गुं शतिश्च्चमे चतुर्विं गुं शतिश्च्चमेऽष्टावि गुं शतिश्च्चमेऽष्टावि गुं शतिश्च्चमे द्वात्रि गुं शच्चमे द्वात्रि गुं शच्चमे षट्त्रि गुं शच्चमे षट्त्रि गुं शच्चमे चत्त्वारि गुं शच्चमे चत्त्वारि गुं शच्चमे चतुश्च्चत्वारि गुं शच्चमे चतुश्चत्त्वारि गुं शच्चमेऽष्ट्टाचत्त्वारि गुं शच्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ।। 25 ।। (न.9) ।। **त्र्यविश्च्च**मे त्र्यवीचमे दित्त्यवाट्चमे दित्त्यौहीचमे पञ्चाविश्च्चमे

आग्ग्रयणश्च्चमे वैश्श्वदेवश्च्चमेद्ध्रुवश्च्चमे वैश्श्वानरश्च्चमऽ ऐन्द्राग्ग्नश्च्चमे महावैश्श्वदेवश्च्चमे मरुत्त्वतीयाश्च्चमे निष्केवल्ल्यश्च्चमे सावित्रश्च्चमे सारस्वतश्च्चमे पात्क्नीवतश्च्चमे हारियोजनश्च्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ।। 20 ।। स्स्रुचश्च्चमे चमसाश्च्चमे वायव्व्यानिचमे द्रोणकलशश्च्चमे ग्ग्रावाणश्च्चमेऽधिषवणेचमे पूतभृच्चमऽ आधवनीयश्च्चमे वेदिश्च्चमे बर्हिश्च्चमेऽवभृथश्च्चमेस्वागाकारश्च्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ।। 21 ।। (न.6) ।। **अग्ग्निश्च्च**मे घर्म्मश्च्चमेऽ र्क्कश्च्चमे सूर्य्यश्च्चमे प्राणश्च्चमेऽश्श्वमेधश्च्चमे पृथिवीचमेऽ दितिश्च्चमे दितिश्च्चमे द्यौश्च्चमेऽङ्गुलयः शक्वरयो दिशश्च्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ।। 22 ।। व्रतञ्चमऽऋतवश्च्चमे तपश्च्चमे संवत्सरश्च्चमेऽ होरात्रेऽऊर्व्वष्ठ्ठीवे बृहद्रथन्तरेचमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ।। 23 ।। (न.7) ।। **एकाच**मे तिस्स्रश्च्चमे तिस्स्रश्च्चमे पञ्चचमे पञ्चचमे सप्तचमे सप्तचमे नवचमे नवचमऽएकादशचमऽ एकादशचमेऽ त्रयोदशचमे त्रयोदशचमे पञ्चदशचमे पञ्चदशचमे सप्तदशचमे सप्तदशचमे नवदशचमे नवदशचमऽएकवि गुं शतिश्च्चमऽएकवि गुं शतिश्च्चमे त्रयोवि गुं शतिश्च्चमे त्रयोवि गुं शतिश्च्चमे पञ्चवि गुं शतिश्च्चमे पञ्चवि गुं शतिश्च्चमे सप्प्तवि गुं शतिश्च्चमे सप्प्तवि गुं शतिश्च्चमे नववि गुं शतिश्च्चमे नववि गुं शतिश्च्चमऽ एकत्रि गुं शच्चमऽएकत्रि गुं शच्चमे त्रयस्त्रि गुं शच्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ।। 24 ।। (न.8) ।। **चतस्स्रश्च्च**मेऽष्टौचमेऽष्टौचमे द्वादशचमे द्वादशचमे षोडशचमे षोडशचमे वि गुं शतिश्च्चमे वि गुं शतिश्च्चमे चतुर्विं गुं शतिश्च्चमे चतुर्विं गुं शतिश्च्चमेऽष्टावि गुं शतिश्च्चमेऽष्टावि गुं शतिश्च्चमे द्वात्रि गुं शच्चमे द्वात्रि गुं शच्चमे षट्त्रि गुं शच्चमे षट्त्रि गुं शच्चमे चत्त्वारि गुं शच्चमे चत्त्वारि गुं शच्चमे चतुश्च्चत्त्वारि गुं शच्चमे चतुश्चत्त्वारि गुं शच्चमेऽष्ष्टाचत्त्वारि गुं शच्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ।। 25 ।। (न.9) ।। **त्र्यविश्च्च**मे त्र्यवीचमे दित्त्यवाट्टचमे दित्त्यौहीचमे पञ्चाविश्च्चमे

पञ्चावीचमे त्रिवत्तसश्च्चमे त्रिवत्तसाचमे तुर्य्यवाट्चमे तुर्य्यौहीचमे यज्ञेनकल्पन्ताम्।। 26।। पष्ट्ठवाट्चमे पष्ट्ठौहीचमऽउक्षाचमे वशाचमऽऋषभश्च्चमे व्वेहच्चमेऽ नड्वाँश्च्चमे धेनुश्च्चमे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। 27।। **(न.10)।। वाजायस्वाहा** प्रसवायस्वाहाऽ पिजायस्वाहा क्रतवे स्वाहा वसवे स्वाहाऽहर्प्पतये स्वाहाह्न्नेमुग्धाय स्वाहा मुग्धाय वैन गुं शिनायस्वाहा विन गुं शिनऽआन्त्यायनाय स्वाहान्त्याय भौवनाय स्वाहा भुवनस्यपतये स्वाहाधिपतये स्वाहाप्रजापतये स्वाहा।। इयन्ते राण्म्मित्राय यन्ता सियमनऽ ऊर्ज्जेत्वा व्वृष्टचैत्त्वा प्प्रजानांत्त्वाधिपत्त्याय।। 28।। आयुर्य्यज्ञेनकल्पतांप्प्राणो यज्ञेन कल्पताञ्चक्षुर्य्यज्ञेनकल्पता गुं श्रोत्रं यज्ञेनकल्पतां वाक्यज्ञेनकल्पतां मनो यज्ञेनकल्पता मात्मा यज्ञेनकल्पतां ब्रह्मा यज्ञेन कल्पतां ज्योतिर्य्यज्ञेनकल्पता गुं स्वर्य्यज्ञेनकल्पतां पृष्ट्ठंय्यज्ञेनकल्पतां यज्ञोयज्ञेनकल्पताम्।। स्तोमश्च्च यजुश्च्चऽऋक्च सामच बृहच्च रथन्तरञ्च।। स्वर्द्देवाऽअगन्मामृताऽ अभूमप्रजापतेः प्रजाऽ **अभूमव्वेट्स्वाहा**।।29।।(न.11)।। इति अष्टमोऽध्यायः।।

।। शान्त्यध्यायः।।।

हरिः ॐ ऋचंवाचम्प्रपद्ये मनोयजुः प्प्रपद्ये सामप्राणम्प्रपद्ये चक्षुः श्रोत्रम्प्रपद्ये।। वागोजः सहौजोमयिप्प्रणापानौ।। 1।। यन्मे छिद्द्रञ्चक्षुषो हृदयस्य मनसोव्वातितृण्णम्बृहस्पतिर्म्मे तद्दधातु।। शन्नोभवतु भुवनस्ययस्पतिः।। 2।। भूर्ब्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।। धियो यो नः प्रचोदयात्।। 3।। कया नश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठ्ठया वृता।। 4।। कस्त्वा सत्यो मदानाम्म गुं हिष्ट्ठोमत्सदन्धसः।। दृढाचिदारुजेवसु।। 5।। अभीषुणः सखीनाम विताजरितृणाम्।। शतम्भवास्यूतिभिः।। 6।। कयात्वन्नऽ ऊत्त्याभिप्रमन्दसेव्वृषन्।। कयास्तो तृब्भ्यऽआभर।। 7।।

इन्द्रो व्विश्श्वस्य राजति।। शन्नोऽअस्तु द्विपदेशञ्चतुष्पदे।। 8।। शन्नोमित्रः शंव्वरुणः शन्नोभवत्वर्यमा।। शन्नऽइन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो व्विष्णुरुरुक्क्रमः।।9।। शन्नोव्वातः पवता गुं शन्नस्तपतु सूर्य्यः।। शन्नः कनिक्क्रदद्देवः पर्ज्जन्न्यो ऽअभिवर्षतु।। 10।। अहानिशम्भवन्तुनः श गुं रात्रीः प्रतिधीयताम्।। शन्नऽइन्द्राग्ग्नी भवतामवोभिः शन्नऽइन्द्रावरुणा रातहव्व्या।। शन्नऽइन्द्रा पूषणा वाजसातौ शमिन्द्रा सोमा सुवितायशंय्योः।। 11।। शन्नो देवी रभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये।। शंय्योरभिस्रवन्तु नः।। 12।। स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी।। यच्छा नः शर्म सप्रथाः।। 13।। आपो हिष्ठा मयो भुवस्तानऽऊर्जे दधातन।। महे रणाय चक्षसे।। 14।। योवः शिवतमो रसस्तस्यभाजयतेहनः।। उशतीरिवमातरः।। 15।। तस्म्माऽ अरङ्गमामवोयस्य क्षयाय जिन्वथ।। आपोजनयथाचनः।। 16।। द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष गुं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व गुं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।। 17।। दृतेदृ गुं हमा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ।। मित्रस्या हञ्चक्षुषा सर्व्वाणि भूतानि समीक्षे।। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।। 18।। दृतेदृ गुं हमा ज्ज्योक्क्तेसन्दृशिजीव्या सञ्ज्योक्क्ते सन्दृशिजी व्यासम् ।। 19।। नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्तेऽअस्त्वर्च्चिषे।। अन्न्याँस्तेऽअस्म्मत्त पन्तुहेतयः पावकोऽअस्म्मभ्य्य गुं शिवोभव।। 20।। नमस्तेऽअस्तुव्विद्युते नमस्तेस्तनयित्नवे।। नमस्तेभगवन्नस्तुयतःस्वः समीहसे।। 21।। यतोयतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।। शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।। 22।। सुमित्रियानऽआपऽओषधयः सन्तुदुर्म्मित्रियास्तस्मै सन्तुयोऽस्म्मान्द्द्वेष्टियञ्चवयन्द्विष्म्मः।। 23।। तच्चक्षुर्द्देवहितं पुरस्ताच्छुक्क्रमुच्चरत्।। पश्येम शरदः शतञ्जीवेम शरदः शत गुं शृणुयामशरदः शतं प्रब्ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्यामशरदः शतम्भूयश्च्च शरदः शतात्।। 24।।इति शान्त्यध्यायः।।

स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राः

ॐ स्वस्ति नऽ इन्द्रो वृद्ध श्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।। 1।। पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।। 2।। विष्णोररराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्त्वा।। 3।। अग्निर्द्देवता वातोदेवता सूर्योदेवता चन्द्रमा देवता वसवोदेवता रुद्द्रादेवताऽऽदित्त्यादेवता मरुतोदेवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणोदेवता।।4।। ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।। भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः।। 5।। वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूत दमनाय नमो मनोन्मनाय नमः।।6।। अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोर तरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्तेऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः।।7।। तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।।8।। ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्।। ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मेऽअस्तु सदा शिवोऽम्।। 9।। शिवोनामा सिस्वधितिस्ते पितानमस्तेऽअस्तु मामाहि गुं सीः।। निवर्त्तयाम्म्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्प्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्य्याय।। 10।। ॐ विश्श्वानिदेव सवितर्द्दुरितानि परासुव।। यद्भद्द्रन्तन्नऽआसुव।। 11।। द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष गुं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व गुं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।। 17।। ॐ सर्वेषां वाऽएष वेदाना गुं रसो यत्साम सर्वेषामेवैनमेतद्वेदाना गुं रसेनाभिषिञ्चति।। ॐ शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु। सर्वारिष्ट शान्तिर्भवतु। ॐ अमृताभिषेकोऽस्तु। अस्त्वमृताभिषेकः।।

।। इतिस्वस्तिप्रार्थनामन्त्राध्यायः।।

उत्तर-षडङ्गन्यायाः

मनो जूतिर्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ गुं समिमं दधातु।
वे देवा सऽइह मादयन्तामों३ प्रतिष्ठ।। **ॐ हृदयाय नमः।।**

अवोद्धयग्निः समिधा जनानाम्प्रति धेनुमिवायतीमुषासम्।
वाऽइवप्प्रवयामुज्जिहानाः प्रभानवः सिस्रते नाकमच्छ।। **ॐ शिरसे स्वाहा।।**

मूर्द्धानन्दिवोऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृतऽआजातमग्निम्।
वे गुं सम्म्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः।। **ॐ शिखायै वषट्।।**

मर्म्माणिते वर्म्मणाच्छा दयामि सोमस्त्वा राजा मृतेना नुवस्ताम्।
र्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानुदेवामदन्तु।। **ॐ कवचाय हुम्।।**

विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्।
बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावा भूमीजन यन्देव एकः।। **ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्।।**

मानस्तो केतनयेमानऽआयुषि मानो गोषुमानोऽ अश्वेषुरीरिषः।
नोवीरान्नुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे।। **ॐ अस्त्राय फट्।।**

ध्यान - ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

यदक्षर पदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।।

।। अनेन कृतेन श्रीरुद्राभिषेक कर्मणा श्रीभवानीशंकरमहारुद्रः प्रीयताम्।।

***

।। शिवमहिम्नः स्तोत्रम् ।।

।। श्रीपुष्पदन्त उवाच ।।

महिम्नः पारन्ते परम विदुषो यद्य सदृशी,
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।
अथावाच्यः सर्वः स्वमति परिणामावधि गृणन्,
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः।। 1।।

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो-
रतद्व्या वृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्तोतव्यः कति विधगुणः कस्य विषयः,
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः।। 2।।

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन् किं वागपि सुर गुरोर्विस्मय पदम्।
मम त्वेतां वाणीं गुण कथन पुण्येन भवतः,
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता।। 3।।

तवैश्वर्यं यत् तज्जगदुदय रक्षा प्रलयकृत्,
त्रयी वस्तु व्यस्तं तिसृषु गुण भिन्नासु तनुषु।
अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं,
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः।। 4।।

किमीहः किं कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं,
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसर दुःस्थो हतधियः,
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः।। 5।।

अजन्मानो लोकाः किमवयव वन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं किं भव विधिरनादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्याद् भुवन जनने कः परिकरो,
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे।। 6।।

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति,
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिल नाना पथजुषां,
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ।। 7।।
महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः,
कपालं चेतीयत् तव वरद तन्त्रोपकरणम्।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति च भवद् भ्रू प्रणिहितां,
न हि स्वात्मा रामं विषय मृगतृष्णा भ्रमयति।। 8।।
ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकल मपरस्त्व ध्रुवमिदं,
परो ध्रौव्या ध्रौव्ये जगति गदति व्यस्त विषये।
समस्तेऽप्ये तस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव,
स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता।। 9।।
तवैश्वर्यं यत्नाद् यदुपरि विरिञ्चो हरिरधः,
परिच्छेत्तुं याता वनल मनल स्कन्ध वपुषः।
ततो भक्तिश्रद्धा भरगुरु गृणद्भ्यां गिरिश यत्,
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनु वृत्तिर्न फलति।। 10।।
अयत्नादापाद्य त्रिभुवन मवैरव्यति करं,
दशास्यो यद् बाहू नभृत रण कण्डू पर वशान्।
शिरः पद्म श्रेणी रचित चरणाम्भोरुहबलेः,
स्थिरायास्त्वद् भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम्।। 11।।
अमुष्य त्वत्सेवा समधिगत सारं भुजवलं,
बलात् कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः।
अलभ्या पातालेऽप्यलस चलिताङ्गुष्ठ शिरसि,
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः।। 12।।
यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सती-
मधश्चक्रे बाणः परिजन विधेयस्त्रिभुवनः।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसि तरि त्वच्चरणयो-
र्न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः।। 13।।

अकाण्ड ब्रह्माण्ड क्षय चकित देवा सुर कृपा,
विधेयस्यासीद्यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो,
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभय भङ्गव्यसनिनः।। 14।।

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे,
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुर साधारणमभूत्,
स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः।। 15।।

मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशय पदं,
पदं विष्णोर्भ्राम्यद् भुज परिघरुग्ण ग्रहगणम्।
मुहुर्द्यौर्दौः स्थ्यं यात्यनिभृत जटा ताडित तटा,
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता।। 16।।

वियद् व्यापी तारा गण गुणित फेनोद् गमरुचिः,
प्रवाहो वारां यः पृषत लघुदृष्टः शिरसि ते।
जगद् द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः।। 17।।

रथः क्षोणी यन्ता शत धृति रगेन्द्रो धनुरथो,
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथ चरण पाणिः शर इति।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुर तृण माडम्बर विधि-
र्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः।। 18।।

हरिस्ते साहस्रं कमल बलि माधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन् निज मुदहरन्नेत्र कमलम्।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणति मसौ चक्र वपुषा,
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुर हर जागर्ति जगताम्।। 19।।

क्रतौ सुप्ते जाग्रत् त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां,
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषा राधनमृते।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदान प्रतिभुवं,
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः।। 20।।

क्रिया दक्षो दक्षः क्रतु पतिरधीशस्तनु भृता-
मृषीणामार्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः।
क्रतु भ्रेषस्त्वत्तः क्रतु फल विधानव्यसनिनो,
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धा विदुरमभिचाराय हि मखाः।। 21।।

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं,
गतं रोहिद् भूतां रिरमयिषु मृष्यस्य वपुषा।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्रा कृतममुन्,
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्या धरभसः।। 22।।

स्वलावण्या शंसा धृत धनुष मह्नाय तृणवत्,
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पा युधमपि।
यदि स्त्रैणं देवी यम निरत देहार्ध घटना-
दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः।। 23।।

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्चिता भस्मा लेपः स्रगपि नृक रोटी परिकरः।
अमंगल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं,
तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मंगलमसि।। 24।।

मनः प्रत्यक् चित्ते सविधमवधायात्त मरुतः,
प्रहृष्य द्रोमाणः प्रमद सलिलोत् संगितदृशः।
यदा लोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्ज्या मृतमये,
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत् किल भवान्।। 25।।

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-
स्त्वमापत्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं,
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि।। 26।।

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिर भिदधत् तीर्ण विकृति।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः,
समस्तं व्यस्तं त्वं शरणद गृणात्योमिति पदम्।। 27।।

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां-
स्तथा भीमेशाना वितियदभिधानाष्टकमिदम्।
अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि,
प्रियायास्मै धाम्ने प्रविहित नमस्योऽस्मि भवते।। 28।।

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो,
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमः,
नमः सर्वेस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः।। 29।।

बहुल रजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः,
प्रबल तमसे तत् संहारे हराय नमो नमः।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः,
प्रमहसिपदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः।। 30।।

कृश परिणति चेतः क्लेश वश्यं क्व चेदं,
क्व च तव गुण सीमोल्लंघिनी शश्वदृद्धिः।
इति चकित ममन्दी कृत्य मां भक्तिराधाद्,
वरद चरणयोस्ते वाक्य पुष्पोपहारम्।। 31।।

असित गिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धु पात्रे,
सुर तरु वर शाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं,
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति।। 32।।

असुर सुर मुनीन्द्रै रर्चितस्येन्दु मौले-
र्ग्रथित गुण महिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य।
सकल गण वरिष्ठः पुष्पदन्ताभि धानो,
रुचिरम लघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार।। 33।।

अहर हर नवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्,
पठति परम भक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः।
स भवति शिव लोके रुद्र तुल्यस्तथात्र,
प्रचुर तर धनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्च।। 34।।

महेशान्नपरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम्।। 35।।

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः।
महिम्नः स्तव पाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्।। 36।।

कुसुम दशन नामा सर्व गन्धर्व राजः,
शिशु शशिधर मौलेर्देव देवस्य दासः।
स खलु निज महिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्,
स्तवन मिदमकार्षीद् दिव्य दिव्यं महिम्नः।। 37।।

सुरवर मुनि पूज्यं स्वर्ग मोक्षैक हेतुं,
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्य चेताः।
व्रजति शिव समीपं किन्नरैः स्तूयमानः,
स्तवन मिदममोघं पुष्पदन्त प्रणीतम्।। 38।।

श्री पुष्पदन्त मुख पंकज निर्गतेन,
स्तोत्रेण किल्बिष हरेण हरप्रियेण।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन,
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः।। 39।।

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्कर पादयोः।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः।। 40।।

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः।। 41।।

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः।
सर्वपाप विनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते।। 42।।

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्व भाषितम्।
अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वर वर्णनम्।। 43।।

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात् कारुण्य भावेन क्षमस्व परमेश्वर।। 44।।

यदक्षर पदभ्रष्टं मात्राहीनञ्च यद् भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।। 45।।

।। इति शिवमहिम्नः स्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

महामृत्युञ्जय जपविधिः

संकल्पः – मम यजमानस्य वा शरीरे स्थितस्य ......रोगस्य समूलनाशनेन अपमृत्यु निवारणार्थं क्षिप्रमारोग्य प्राप्तर्थं विषम स्थान स्थित सकलारिष्ट निवृत्तये श्री मृत्युञ्जय देवता प्रीत्यर्थं षट्प्रणवयुक्त महामृत्युञ्जय जपं स्वयं/ब्राह्मणद्वारा वा .....संख्ययाऽहं करिष्ये।।

ब्राह्मण वरण करके हाथ में जल लेकर विनियोग करें।

अस्य श्री महामृत्युञ्जय मन्त्रस्य वसिष्ठ ऋषिः श्रीमृत्युञ्जय रुद्रो देवता अनुष्टुप्छन्दः हौं बीजं जूं शक्तिः सः कीलकं मृत्युञ्जय प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।।

न्यासान् कुर्यात् – ॐ वसिष्ठ ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। श्री महामृत्युञ्जय रुद्रदेवतायै नमः हृदये। हौं बीजाय नमः गुह्ये। जूं शक्तये नमः पादयोः। सः कीलकाय नमः सर्वांगेषु ।

ॐ त्र्यम्बकम् अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ यजामहे तर्जनीभ्यां नमः। ॐ सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ उर्वारुकमिव बन्धनात् अनामिकाभ्यां नमः। ॐ मृत्योर्मुक्षीय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ मामृतात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।।

ॐ त्र्यम्बकं हृदयाय नमः। ॐ यजामहे शिरसे स्वाहा। ॐ सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं शिखायै वषट्। ॐ उर्वारुकमिव बन्धनात् कवचाय हुम्। ॐ मृत्योर्मुक्षीय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ मामृतात् अस्त्राय फट्।।

ध्यान – चन्द्रोद् भासित मूर्धजं सुरपतिं पीयूष पात्रं महद्
धस्ताब्जेन दधन्सु दिव्यममलं हास्यास्य पंकेरुहम्।
सूर्येन्द्वग्नि विलोचनं करतलैः पाशाक्ष सूत्रांकुशां
भोजं बिभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं तं स्मरे।।

अथ मृत्युञ्जयमन्त्रः -

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं
पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।
ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ।।

जपसमाप्त्यनन्तरं पूर्वोक्तान् उत्तरन्यासान् कृत्वा देवाय जप निवेदनं कुर्यात्।

यथा - ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर।।

प्रार्थयेत् - ॐ मृत्युञ्जय महादेव त्राहि मां शरणागतम्।
जन्म मृत्यु जरा व्याधि पीडितं कर्म बन्धनैः।।

हस्ते जलमादाय अनेन यथासंख्याकेन महामृत्युञ्जय
जपाख्येन कर्मणा श्रीमहामृत्युञ्जयः प्रीयतां न मम।।

।। इति महामृत्युञ्जय जपविधिः।।

***

रुद्रो मुण्डधरो भुजंग सहितो गौरी तु सद्भूषणा,
स्कन्दः शम्भु सुतः षडानन युतस्तुण्डी च लम्बोदरः।
सिंह क्रेलिम मूषकं च वृषभस्तेषां निजं वाहनम्,
इत्थं शम्भु गृहे विभिन्न मतिषु चैक्यं सदा वर्तते।।

ॐ शं नित्य सुखमानन्दमिकारः पुरुषः स्मृतः।
वकारश्शक्तिरमृतं मेलनं शिव उच्यते।।

शिवो गुरुः शिवो वेदः शिवो देवः शिवः प्रभुः।
शिवोऽस्मृहं शिवः सर्वः शिवादन्यन्न किंचन।।

ॐ गुरुरग्नि द्विजातिनां, वर्णानां ब्राह्मणो गुरुः।
पतिरको गुरुः स्त्रीणां, सर्वेषाम् अतिथिर्गुरुः।।

卐 सर्वदेव गायत्री मन्त्र 卐

ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।
ॐ कात्यायन्यै च विद्महे कन्याकुमार्यै धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।
ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।
ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि। तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।
ॐ दाशरथाय विद्महे जानकीनाथाय धीमहि। तन्नो रामः प्रचोदयात्।
ॐ जनकनन्दिन्यै विद्महे भूमिजायै धीमहि। तन्नः सीता प्रचोदयात्।
ॐ दाशरथाय विद्महे उर्मिलानाथाय धीमहि। तन्नो लक्ष्मणः प्रचोदयात्।
ॐ अंजनीसुताय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि। तन्नो हनुमत् प्रचोदयात्।
ॐ देवकीनन्दनाय विद्महे राधावल्लभाय धीमहि। तन्नः कृष्णः प्रचोदयात्।
ॐ वृषभानुजाय विद्महे कृष्णप्रियायै धीमहि। तन्नो राधा प्रचोदयात्।
ॐ परब्रह्मणे विद्महे गुरुदेवाय धीमहि। तन्नो गुरुः प्रचोदयात्।
ॐ भास्कराय विद्महे दिवाकराय धीमहि। तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।
ॐ पृथ्वीदेव्यै च विद्महे धराभूर्तये धीमहि। तन्नः पृथ्वी प्रचोदयात्।
ॐ जामदग्न्याय विद्महे महावीराय धीमहि। तन्नो विप्रः प्रचोदयात्।
ॐ सरस्वत्यै च विद्महे ब्रह्मपुत्र्यै च धीमहि। तन्नः सरस्वतीः प्रचोदयात्।
ॐ चतुर्मुखाय विद्महे हंसारूढ़ाय धीमहि। तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात्।
ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।
ॐ रुद्रदेहायै विद्महे मेकलकन्यकायै धीमहि। तन्नो रेवा प्रचोदयात्।

***

नमो नमस्तेऽस्तु सदा विभावसो, सर्वात्मने सप्तहयाय भानवे।
अनन्तशक्तिर्मणि भूषणेन, वदस्व भक्तिं मम मुक्तिमव्ययाम्।।

कामनासिद्धिमन्त्राः

(1) **कन्या हेतु- शीघ्र विवाह के लिए-** ॐ ह्रीं गौर्यै नमः।

1. ॐ हे ! गौरिशंकरार्धांगि यथा त्वं शंकर प्रिया।
तथा मां कुरू कल्याणि कान्तकान्ता सुदुर्लभाम्।।

2. ॐ कात्याायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि।
नन्द गोपसुते देवि पतिं मे कुरु ते नमः।।

3. ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः।।

पुरुष हेतु- 1. ॐ पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्ग संसार सागरस्य कुलोद्भवाम्।।

2. ॐ विश्वावसुगन्धर्व कन्यानामधिपति।
सुवर्णा सालंकारां कन्या देहि मे देव।।

(2) **पति पत्नी के विवाद को दूर करने का** मारुति मन्त्र(श्लोक) का जप -

ॐ दारिद्र दुःख दहनं विजयं विवादे,कल्याण साधनममंगल वारणं च।
दाम्पत्य दीर्घ सुख सर्व मनोरथाप्ति,श्रीमारूतेःस्तवमहो नितरां तनोति।।

(3) **सन्तान प्राप्ति के लिए-** ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

(4) **रोगनाशक मन्त्र का** जप करने से रोग से मुक्ति मिलती है।

ॐ अच्युतानन्त गोविन्द नामोच्चारण भेषजात्।
नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।

(5) **गतवस्तु को प्राप्त करने के लिए मन्त्र-**

ॐ कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजावाहु सहस्रवान्।
तस्य स्मरेण मात्रेण गतं नष्टं च लभ्यते।।

कपिला कोटि दानद्धि यत्फलं परिकीर्तितम्। तत्फलं कोटि गूणितमेकातुर चिकित्सया।।
सत्यश्रमाभ्यां सकलार्थः सिद्धिः। क्षितितले किं जन्म कीर्तिं विना।

(6) **लक्ष्मी प्राप्ति के लिए मन्त्रः -**
ओं श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै सकलसौभाग्यं मे देहि स्वाहा।।

(7) **धन-सम्पदा वर्द्धक कुबेर मन्त्र -**
ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्यादिपतये।
धनधान्य समृद्धिं मे देहि दापय स्वाहा।।

(8) **भय-निवारण के लिए मन्त्र-**
"ॐ अंजनीगर्भ सम्भूताय कपीन्द्र सचिवोत्तम
रामप्रिय नमस्तुभ्यं हनुमन् रक्ष रक्ष सर्वदा।"

(9) **गर्भ स्तम्भन मन्त्र -**
ॐ नमो नील नील महानील दृष्टि देख कोख, फले फूले, बेल बढे चतुराई चले इन (स्त्री का नाम) पेड़ रे फल फूल की जो हानि होवे, हनुमन्त की दुहाई गुरु शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।।

प्रयोग विधि- कुँआरी कन्या के हाथ से कते हुए सूत को इस मंत्र से अभिमन्त्रित करके और उसी सूत से सात गांठ बनाकर स्त्री को पहना देने से गर्भ स्तम्भन होगा। अर्थात् जिन स्त्रियों का गर्भ गिर जाता है, उन्हें पहनाने से गर्भ नहीं गिरेगा और गिरता हुआ रक्त भी बन्द हो जायेगा।

(10) **बारह नक्षत्र व्यापार के लिए अच्छे हैं।**
श्रुति गुन कर गुन पु जुग मृग हय रेवती सखाउ।
देहि लेहि धन धरनि धरु गएहुँ न जाइहि काउ।।

भावार्थ - श्रवण नक्षत्र के तीन (श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा) हस्त नक्षत्र से तीन नक्षत्र (हस्त, चित्रा, स्वाती) 'पु' से आरम्भ होने वाले दो नक्षत्र (पुष्य, पुनर्वसु) और मृगशिरा, अश्विनी, रेवती तथा अनुराधा, इन बारह नक्षत्रों में धन, जमीन और धरोहर का लेन-देन करो, ऐसा करने से धन जाता हुआ प्रतीत होने पर भी नहीं जायेगा।।

***

सामूहिक प्रार्थना

सुखी बसे संसार सब, दुखिया रहे न कोय।
यह अभिलाषा हम सबकी, भगवन पूरी होय।।

विद्या बुद्धि तेज बल, सबके भीतर होय।
दूध पूत धन धान्य से, वञ्चित रहे न कोय।।

आपकी भक्ति प्रेम से, मन होय भरपूर।
रागद्वेष से चित्त मेरा, कोसों भागे दूर।।

मिले भरोसा आपका, हमें सदा जगदीश।
आशा तेरे धाम की, बनी रहे मम ईश।।

पाप से हमें बचाइये, करके दया दयाल।
अपना भक्त बनाय के, सबको करो निहाल।।

दिल में दया उदारता, मन में प्रेम अपार।
हृदय में धैर्य वीरता, सबको दो करतार।।

नारायण तुम आप हो, पाप विमोचन हार।
क्षमा करो अपराध सब, कर दो भव से पार।।

हाथ जोड़ विनती करूं, सुनिये कृपानिधान।
साधु संगत सुख दीजिए, दया नम्रता ज्ञान।।

प्रभु कृष्ण चन्द्र आनन्द कन्द, मंगल मोद प्रसाद।
श्री हरि शरणं पाय के, मिटते सकल अवसाद।।

***

प्रार्थना

हे रामाः ! पुरुषोत्तमा ! नरहरे ! नारायणाः ! केशवा !
गोविन्दा ! गरुडध्वजा ! गुणनिधे ! दामोदरा ! माधवाः।
हे कृष्णाः कमलापते ! यदुपते ! सीतापते ! श्रीपते !
बैकुण्ठाधिपते ! चराचरपते ! लक्ष्मीपते ! पाहि माम्।।

हे गोपालक ! हे कृपाजलनिधे ! हे सिन्धुकन्यापते !
हे कंसान्तक ! हे गजेन्द्र करुण ! पाहिनो हे माधव।
हे रामानुज ! हे जगत्त्रयगुरो ! हे पुण्डरी काक्षमाम् !
हे गोपीजन ! नाथ पालय परं जानामि न त्वां विना।।

कस्तूरीतिलकं ललाट पटले वक्षः स्थले कौस्तुभं,
नासाग्रे वर मौक्तिकं करतले वेणुः करे कंकणम्।
सर्वांगे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली,
गोपस्त्रीपरिवेष्ठितो विजयते गोपालचूड़ामणिः।।

आदौ राम तपोवनादि गमनं हत्वा मृगं काञ्चनं,
वैदेही हरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम्।
बालीनिग्रहणं समुद्र तरणं लंकापुरी दाहनं,
पश्चाद् रावण कुम्भकर्ण हननमेतद्धि रामायणम्।।

आदौ देवकिदेव गर्भजननं गोपीगृहे वर्धनं,
माया पूतन जीव ताप हरणं गोवर्धनोद्धारणम्।
कंसच्छेदन कौरवादि हननं कुन्तीसुतान् पालनम्,
श्रीमद् भागवतं पुराण कथितं श्रीकृष्णलीलामृतम्।।

श्रीरंगं कुलमज्जितगिरौ शेषाचलद्रि सिंहासनम्,
श्रीकुर्म्मं पुरुषोत्तमञ्च बदरी नारायणं नरहरीम्।
श्रीमद्वारावती प्रयागो मथुरा अयोध्या गया पुष्करम्,
शालिग्राम निवासने विजयते रामानुजोऽयं मुनिः।।

विष्णोः पाद अवन्तिका गुणवती मध्ये च काञ्ची पुरी,
नाभौ द्वारवती तथा च हृदये मायापुरी पुण्यदा।
ग्रीवामूल मुदा हरन्ति मथुरा नासाश्च वाराणसी,
एतद् ब्रह्मविदो वदन्ति मुनयोऽयोध्यापुरी मस्तके।।

तूनेनैकशरं करेण दशधा सन्धानकाले शतम्,
चापे भूप सहस्र लक्ष गमनं कोटिःकोटिरविधिः।
अन्ते अर्बुदखर्व बाण विविधैः सीतापतिःशोभितः,
एतद् बाण पराक्रमश्च महिमा सत्पात्रे दानं यथा।।

पार्थाय प्रति बोधितां भगवता नारायणे न स्वयं,
व्यासेन ग्रथितां पुराण मुनिनां मध्ये महाभारते।
अद्वैतामृत वर्षिणीं भगवतीम् अष्टादशाध्यायिणी
मम्वत्वा मनु सन्दधामि भगवद् गीते भवद्वेषिणीम्।।

नमोऽस्तुते व्यास विशालबुद्धे फुल्लारविन्दाय तपत्रनेत्र।
येन त्वया भारत तैलपूर्णः प्रज्ज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः।।

....

श्रीरामचन्द्र कृपालु भज मन हरन भव भय दारुणम्।
नव कञ्ज लोचन कञ्ज मुख करकञ्ज पद कञ्जारुणम्।।

कन्दर्प अगणित अमित छबि नव नील नीरद सुन्दरम्।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि सुचि नौमि जनक सुतावरम्।।

भजु दीन बन्धु दिनेश दानव दैत्यवंश निकन्दनम्।
रघुनन्द आनन्द कन्द कोशल चन्द दशरथ नन्दनम्।।

सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणम्।
आजानु भुज शर चाप धर संग्राम जित खरदूषणम्।।

इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रञ्जनम्।
मम हृदय कञ्ज निवास कुरु कामादि खल दल गञ्जनम्।।

मन जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुन्दर साँवरो।
करुना निधान सुजान सील सनेहु जानत रावरो।।

एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली।।

सो.- जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मञ्जुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे।।

मो सम दीन न दीनहित तुम्ह समान रघुबीर।
अस विचारि रघुबंस मनि हरहु विषम भवभीर।।

कामी नारि पियारि जिमि लोभी के प्रिय दाम।
तिमि रघुनाथ निरन्तर प्रिय लागहुँ मोहे राम।।

प्रणतपाल रघुवंश मणि करुणा सिन्धु खरार।
गये शरण प्रभु राखिहो सब अपराध विसार।।

श्रवण सुयश सुनि आयि हो प्रभु भञ्जन भवभीर।
त्राहि त्राहि आरति हरण शरण सुखद रघुवीर।।

अर्थ न धर्म न काम रुचि गति न चाहुँ निर्वाण।
जन्म जन्म सियाराम पद इह वर दान न आन।।

बार बार वर मागउँ हरषि देव श्रीरंग।
पद सरोज अनपायनी भक्ति सदा सतसंग।।

बरनि उमापति रामगुण हरषि गए कैलास।
तब प्रभु कपिन्ह दिवाए सब बिधि सुख प्रदबास।।

एक मन्द मैं मोहवश कुटिल हृदय अज्ञान।
पुनि प्रभु मोहे न विसारिउ दीनबन्धु भगवान्।।

बिनती करि मुनि नाइ सिरु कह कर जोरि बहोरि।
चरण सरोरुह नाथ जनि कबहु तजै मतिमोरि।।

नहि विद्या नहि बाहु बल नहि दरसन को दाम।
मो सम पतित पतंग की तुम पति राखहु राम।।

चलो सखि तहाँ जाइये जहाँ बसे ब्रजराज।
गोरस बेचत हरि मिले एकपन्थ दोउ काज।।

ब्रज चौरासी कोश में चारिग्राम निजधाम।
वृन्दावन अरु मधुपुरी वर्षाणे नन्दग्राम।।

वृन्दावन से वन नहि नन्दग्राम से ग्राम।
वंशीवट से वट नहि श्रीकृष्ण नाम से नाम।।

एक घड़ी आधी घड़ी आधी में पुनि आध।
तुलसी संगति साधु की हरे कोटि अपराध।।

सियावर रामचन्द्र जी की जय, अयोध्या रामजीलला की जय,
हनुमान गरुड़देव जी की जय, उमापति महादेव जी की जय,
रमापति रामचन्द्र जी की जय, वृन्दावन कृष्णचन्द्र जी की जय,
ब्रजेश्वरी राधारानी जी की जय, बोलो भाई सब सन्तन की जय,
अपने अपने गुरुगोविन्द की जय, संध्या आरती की जय,
जय जय श्री राधेश्याम।

***

धर्म की जय हो। अधर्म का नाश हो।
प्राणियों में सद्भावना हो। विश्व का कल्याण हो।
सत्य सनातन वैदिक धर्म की जय हो। गौ माता की जय हो।
अपने मात–पिता की जय हो। अपने गुरू गोविन्द की जय हो।
भक्त और भगवान की जय हो। नगर बस्ती की जय हो।
आज के आनन्द की जय हो।। नमः पार्वतीपते हर–हर महादेव हर
काल हर, कष्ट हर, दुःख हर, दारिद्र हर, रोग हर,
आनन्द की लहर कर, हर–हर महादेव, नर्मदे हर

मुखं पवित्रं यदि राम नामम्। हृदयपवित्रं यदि ब्रह्मज्ञानम्।
चरणौ पवित्रं यदि तीर्थ गमनम्। हस्तौ पवित्रं यदि पुण्यदानम्।।

माँ भद्रकाली ज्योतिष ज्ञान

ॐ सरस्वत्यै नमो नित्यं भद्रकाल्यै नमो नमः।
वेद वेदान्त वेदांग विद्यास्थानेभ्य एव च।।

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ।।

जन्म समय मूल के नक्षत्र – अश्विनी, अश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल, रेवती इन छः नक्षत्रों में किसी का जन्म हो तो उसे जन्मकाल मूल पड़ते है। मूल दो प्रकार के होते है एक छोटे मूल (12 दिन के) दूसरे बड़े मूल (27 दिन के) मूल के नक्षत्र होने पर मूलशान्ति करना चाहिए।

पंचक के नक्षत्र में वर्जित कार्य - आधा धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद व रेवती इन साढ़े चार नक्षत्रों को पंचक कहते है। पंचक में शव दाह खाट, पलंग, शय्या, चटाई, कुर्सी आदि का बुनना, मकान, दुकान का छत डालना, स्तम्भरोपित करना,दक्षिण दिशा की यात्रा करना तृण, काष्ठ का संग्रह करना आदि वर्जित हैं।

नोट - रक्षाबन्धन, भाईदूज, लक्ष्मीपूजन, नवरात्रि, जप, व्रतानुष्ठान, भूमिपूजन, मकान, वाहन, विवाह, मुण्डन, गृहप्रवेश, उपनयन, व्यापार, वधूप्रवेश आदि कार्य पंचक नक्षत्र में शुभ माना जाता है।

शुभ विवाह मुहूर्त विचार - सर्व प्रथम लड़का लड़की की राशि जानकर,जिस माह में विवाह निकालना हो उस माह में सूर्य और गुरु ग्रह किस राशि में स्थित है,यह ज्ञात करके लड़के की राशि से वर्तमान सूर्य राशि तक गणना करे। 3,6,10,11 हो तो शुभ। और 1,2,5,7,9 हो तो सूर्य की लाल पूजा व सात हजार जप करना चाहिए। एवं 4,8,12 हो तो अपूज्य (निषेध) हैं। तथा लड़की की राशि से वर्तमान गुरु राशि तक गणना करे। 2,5,7,9,11 हो तो शुभ। 1,3,6,10 हो तो गुरु की पीली पूजा व उन्नीस हजार जप करने से शुभ होता है। 4,8,12 हो तो अपूज्य (निषेध) हैं। लड़का लड़की दोनों की राशि से वर्तमान चन्द्रमा राशि जानकर गणना करे। यदि 1,2,3,5,6,7,9,10,11, हो तो शुभ होगा। एवं 4,8,12 हो तो अपूज्य (निषेध) हैं।

पंचांगफल - ॐ तिथेश्च श्रियमाप्नोति वारादायुष्य वर्धनम्।
नक्षत्रात् हरते पापं योगात् रोग निवारणम्। करणात् कार्य सिद्धिस्यात् एवं पंचागमुत्तमम्।।

।। विवाहे सूर्य चन्द्र गुरु शुद्धि चक्रम् ।।

लड़का का सूर्य	लड़की का गुरु	दोनों का चन्द्र	ग्रह फल
3,6,10,11	2,5,7,9,11	1,2,3,5,6,7,9,10,11	शुभ
1,2,5,7,9	1,3,6,10	0	पूज्य
4,8,12	4,8,12	4,8,12	अपूज्य

म नवम-पंचम	शुभ द्वि-द्वादश	शुभ षडष्टक	अशुभ षडष्टक	अशुभ द्विद्वादश	मध्यम नव-पंचम
9 - 5	2 - 12	6 - 8	6 - 8	2 - 12	9 - 5
ष - सिंह	मेष - मीन	मेष - वृश्चिक	वृषभ - धनु	वृश्चिक - तुला	कुम्भ - मिथुन
षभ - कन्या	मिथुन - वृषभ	मिथुन - मकर	कर्क - कुम्भ	मकर - धनु	मीन - कर्क
थुन - तुला	सिंह - कर्क	सिंह - मीन	कन्या - मेष	मीन - कुम्भ	कर्क - वृश्चिक
ंह - धनु	तुला - कन्या	तुला - वृषभ	वृश्चिक - मिथुन	वृषभ - मेष	कन्या - मकर
ुला - कुम्भ	धनु - वृश्चिक	धनु - कर्क	मकर - सिंह	कर्क - मिथुन	
श्चिक - मीन	कुम्भ - मकर	कुम्भ - कन्या	मीन - तुला		
नु - मेष	कन्या - सिंह				
कर - वृषभ					

।। अग्निवासचक्रम् ।।

शुक्लपक्ष				कृष्णपक्ष				रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१	५	९	१३	२	६	१०	१४	भुवि	भुवि	दिवि	भूतले	भुवि	भुवि	दिवि
२	६	१०	१४	३	७	११	३०	भुवि	दिवि	भूतले	भुवि	भुवि	दिवि	भूतले
३	७	११	१५	-	४	८	१२	दिवि	भूतले	भुवि	भुवि	दिवि	भूतले	भुवि
-	४	८	१२	१	५	९	१३	भूतले	भुवि	भुवि	दिवि	भूतले	भुवि	भुवि

यदा मुस्तरी कर्कटे वा कमाने, यदा चश्मखोरा जमी वासमाने।
तदा ज्योतिषी क्या लिखे क्या पढ़ेगा, हुआ बालका बादश

अग्निवास का फल – भुवि (पृथ्वी) सौख्यम्, दिवि(स्वर्ग) प्राणनाश और भूतले (पाताल) धननाश इस प्रकार जानना चाहिए। विधि – शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से अभीष्ट तिथि तक और रविवार से अभीष्ट दिन तक की गणना करें। जो संख्या प्राप्त हो उसमें एक जोड़े और चार का भाग देवें, शेष संख्या तीन या शून्य प्राप्त हो तो पृथ्वी पर अग्नि का निवास है। जो यज्ञादि कर्मो में सुख प्रदान करने वाली होती है। यदि शेष एक या दो संख्या प्राप्त हो तो शुभप्रद नहीं हैं।

अग्निवास की विशेषता – नित्य नैमित्तिक कार्य, जन्मसमय, दुर्गापूजा, यात्रा, विवाह, ग्रहरोग **पीड़ा एवं दुर्भिक्ष शान्ति**-यज्ञ, विवाह-यज्ञोपवीत आदि में अग्निवास का विचार नहीं करें।

शिववास रचना एवं फल – तिथिं च द्विगुणीं कृत्य पञ्चैः संयोजयेत् ततः।
सप्तिश्चैव हरेद् भागं शिववासं समुद्दिशेत्।।

अर्थ – शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से अभीष्ट तिथि तक गणना कर जो संख्या प्राप्त हो उसे दोगुना करके पाँच जोड़े फिर सात का भाग देवें। जो संख्या शेष हो उसका फल इस प्रकार है :- एक शेष हो तो कैलाश पर निवास सुखकारी, दो शेष हो तो गौरी समीप में वास सुख सम्पत्ति देने वाला, तीन शेष हो तो बैल पर सवार इच्छित सफलता देनेवाला, चार शेष हो तो सभा में वास सन्तापकारी, पाँच शेष हो तो भोजन में वास पीड़ाकारक, छः शेष हो तो क्रीड़ाक्षेत्र में वास कष्टकारी और शून्य शेष हो तो श्मशान में वास मरणकारक होता है। शिवपूजन, जप, अभिषेकादि में शिववास का विचार करके ही कर्म करना चाहिए। एक,दो या तीन शेष तो कर्म में सफलता प्राप्त होती है शेष संख्या में नहीं।

शिववास की तिथियाँ – शुक्लपक्ष में 2-5-6-9-12-13 तिथियाँ शुभकारी हैं। कृष्णपक्ष में 1-4-5-8-11-12-30 शिवकर्म यह तिथियाँ शुभकारी हैं।

।। शिववास चक्र।।

शुक्ल पक्ष की तिथियाँ	कृष्ण पक्ष की तिथियाँ	शिववास	फल
1/ 8/ 15	7/ 14	श्मशान में	मृत्युप्रद
2/ 9	1/ 8/ 30	गौरी के पास	सुख-समृद्धि
3/ 10	2/ 9	सभा में	तापकारक
4/ 11	3/ 10	क्रीड़ा में	कष्टप्रद
5/ 12	4/ 11	कैलाश पर	सुखद
6/ 13	5/ 12	बैल(नन्दी)पर	अभिष्टसिद्धि
7/ 14	6/ 13	भोजन में	कष्टप्रद

प्रथम मत - जन्म नक्षत्र से पाया(चरण) ज्ञान -

आर्द्रादि दशकं रुपं विशाखादि युग लोहकम्।
पूषादि सप्त ताम्रश्च रेवती षष्ठ स्वर्णकम्।।

आद्रादि दस नक्षत्र में चांदी का पाया। विशाखा से चार नक्षत्र में लोहे का पाया। पूर्वाषाढ़ा से सात नक्षत्र में तांबे का पाया और रेवती से छः नक्षत्रों में हो तो सोने का पाया जानना चाहिए। चांदी,तांबा श्रेष्ठ, लोहा एवं सोना का पायाफल नेष्ठ होता हैं।

सोने का पाया	चांदी का पाया	ताम्बे का पाया	लोहे का पाया
रेवती, अश्विनी,	आर्द्रा पुनर्वसु, पुष्य	पू.षा., उ.षा.श्रवण,	विशाखा, अनुराधा
भरणी, कृतिका,	अश्लेषा, मघा, पू.फा.	धनिष्ठा, शतभिषा,	ज्येष्ठा, मूल
रोहिणी, मृगशिरा	उ.फा.हस्त,चित्रा,स्वाती	पू.भाद्रपद, उ.भाद्रपद	

द्वितीय मत - आर्द्रा दशरुपाणां विशाखा नव ताम्रकम्।
रेवती षट् स्वर्णश्च शेषा लोहाः प्रकीर्तिताः।।

आद्रादि दस नक्षत्रों में चांदी का पाया। विशाखा से नौ नक्षत्रों में तांबे का पाया। रेवती से छः नक्षत्रों में हो तो सोने का पाया जानना चाहिए। शेष दो नक्षत्र में जन्म होने पर लोहे का पाया (चरण) जानना चाहिए। दोनों मत परस्पर भिन्न होने के कारण सर्वमान्य नहीं।

सोने का पाया	चांदी का पाया	ताम्बे का पाया	लोहे का पाया
रेवती, अश्विनी,	आर्द्रा पुनर्वसु,पुष्य,	विशाखा,अनुराधा,	पूर्वा.भाद्रपद.
भरणी,कृतिका,	अश्लेषा, मघा, पू.फा.	ज्येष्ठा,मूल पू.षा.,उ.षा.	उत्तरा.भाद्रपद
रोहिणी, मृगशिरा	उ.फा.हस्त,चित्रा,स्वाती	श्रवण, धनिष्ठा,शतभिषा	

***

सूर्यादीनां च सन्तुष्ट्यै माणिक्य मौक्तिकं तथा।
सुविद्रुमं मरकतं पुष्परागं च वज्रकम्। नील गोमेद वैदूर्यं धार्यं स्वस्वदृढ क्रमात्।।

श्री गणेशजी की आरती

ॐ कर्पूर पूरेण मनोहरेण, सुवर्ण पात्रान्तर संस्थितेन।
प्रदीप्त भासा सह संगतेन, नीराजनं ते जगदीश कुर्वे।।

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।।

पान चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा।
लड्डू अन को भोग लगे सन्त करे सेवा।।
एकदन्त दया वन्त चार भुजा धारी।
माथे सिन्दूर सोहे मूसे की सवारी।।

अंधन को आंख देत कोढ़िन को काया।
बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया।।
सूरश्याम शरण आयो सफल कीजे सेवा।
सर्व कार्य सिद्ध करो श्रीगणेश देवा।

दीनन की लाज रखो शम्भु सुतवारी।
कामना को पूरा जय हो बलहारी।।
ऋद्धि देना सिद्धि देना भक्ति देना देवा।
भक्त तेरे द्वार खड़े कृपा करो देवा।।

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।।

***

श्री लक्ष्मी माता की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता ।
तुमको निशदिन सेवत, हर विष्णु विधाता ॥ टेक ॥

उमा, रमा, ब्रह्माणी तुम ही जगमाता,
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता ॥ 1 ॥

दुर्गा रूप निरंजनि सुख सम्पत्ति दाता ।
जो कोई तुमको ध्यावत ऋद्धि-सिद्धि धन पाता ॥ 2 ॥

तुम पाताल निवासिनि तुम ही सुख दाता ।
कर्म प्रभाव प्रकाशिनी भव निधि की त्राता ॥ 3 ॥

जिस घर में तुम रहती सब सद्गुण आता ।
सब संभव हो जाता, मन नहीं घबराता ॥ 4 ॥

तुम बिन यज्ञ न होवे, वस्त्र न कोई पाता।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता ॥ 5 ॥

शुभ गुण मंदिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता ।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता ॥ 6 ॥

महालक्ष्मीजी की आरती, जो कोई नर गाता ।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ॥ 7॥

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता ।
तुमको निशिदिन सेवत, हर विष्णु विधाता ॥

मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सौंप दूँ, क्या लागत है मोर।।
मैं अपराधी जनम का नख सिख भरा बिकार।
तुम दाता दुख भंजना मेरी करो सम्हार।।

श्री जगदीश जी की आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे,
भक्त जनों के संकट, दास जनों के संकट, क्षण में दूर करें॥ ॐ जय...

जो ध्यावे फल पावे, दुःख बिनसे मन का॥ प्रभु...
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का॥ ॐ...

माता-पिता तुम मेरे शरण गहूँ किसकी। प्रभु...
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी॥ ॐ...

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी॥ प्रभु...
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी॥ ॐ...

तुम करूणा के सागर, तुम पालन कर्ता॥ प्रभु...
मैं मुरख खल कामी, मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता॥ ॐ...

तुम तो एक अगोचर, सबके प्राणपति॥ प्रभु...
किस विधि मिलूँ दयामय। किस विधि मिलूं कृपामय, तुमको मैं कुमति॥

दीन बंधु दुःखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे॥ प्रभु...
अपने हाथ उठाओ, करूणा हस्त बढ़ाओ, द्वार पड़ा तेरे॥ ॐ...

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा॥ प्रभु...
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओं, संतन की सेवा॥ ॐ...

पूरण ब्रह्म की आरती, जो कोई नर गावे॥ प्रभु...
कहत शिवानंद स्वामी, मनवांछित फल पावे।

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे॥ - 4

स्नाने धूपे तथा दीपे नैवेद्ये भूषणे तथा। घण्टानादं प्रकुर्वीत तथा नीराजनेऽपि च॥
धूपे नीराजने स्नाने पूजाकाले विलेपने। ममाऽग्रे वादयन् घण्टामुत्तमं लभते फलम्॥

ॐ

श्री शिवजी की आरती

ॐ जय शिव ओंकारा, ॐ भज शिव ओंकारा,
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्द्धंगी धारा ॥ हरि ॐ हर हर महादेव...

एकानन चतुरानन, पंचानन राजै,
हंसासन गरुड़ासन, वृष वाहन साजै ॥ हरि ॐ हर हर महादेव...

दो भुज चारू चतुर्भुज, दश भुज अति सोहे।
तीनों रूप निरखते, त्रिभुवन जन मोहे ॥ हरि ॐ हर हर महादेव...

अक्ष माला वन माला, मुण्डमाला धारी,
चंदन मृग मद सोहे, भाले शुभकारी ॥ हरि ॐ हर हर महादेव...

श्वेताम्बर-पीताम्बर, बाधम्बर अंगे,
सनकादिक ब्रह्मदिक, भूतादिक संगे ॥ हरि ॐ हर हर महादेव...

करके मध्ये कमण्डल, चक्र त्रिशुल धारी,
सुखकारी दुःखहारी, जगपालन कारी ॥ हरि ॐ हर हर महादेव...

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, जानत अविवेका,
प्रणवाक्षर में शोभित, ये तीनों एका ॥ हरि ॐ हर हर महादेव...

त्रिगुण स्वामी की आरती, जो कोई नर गावे,
कहत शिवानन्द स्वामी, मनवांछित फल पावें। हरि ॐ हर हर महादेव...

ॐ करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा, श्रवन-नयनजं वा मानसं वापराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व, जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव-शम्भो ।।

बाबा तुलसीदासजी की स्तुति

भारत की मिट्टी का प्यारा, और दुलारा था तुलसी।
रामकथा की फुलबगिया में, भँवरा प्यारा था तुलसी।।
तुलसी का जब जन्म हुआ, तब'राम'पुकारा था तुलसी।
बचपन में दर-दर भटका, किस्मत का मारा था तुलसी।।
रत्नावलि के मन की पीड़ा, जिसने छन्दों में गाई ।
जन-जन के मन का गायक, बजता इकतारा था तुलसी।।
वाल्मीक ने स्वयं धरा पर, जन्म लिया था तुलसी का।
हुलसी का सुत, नरहरि की आखों का तारा था तुलसी।।
मंदाकिनि के पावन जल का, एक किनारा था तुलसी।
चौपाई, दोहे, छन्दों की कल-कल धारा था तुलसी।।
हिन्दी के साहित्य गगन का, एक सितारा था तुलसी।
धरती के कवियों ऋषियों में, सबसे न्यारा था तुलसी।।
''पन्द्रह सौ चौवन विसे,कालिन्दी के तीर।
सावन शुक्ला सप्तमी,तुलसी धरयो सरीर।।''
"राजापुर जमुना के तीरा, जहाँ तुलसी का भया सरीरा।
विधि बुन्देल खण्ड वोहि देशा, चित्रकोट बीच दस कोसा।।"

प्रारब्ध पहले रचा, पीछे रचा सरीर।
तुलसी चिंता क्यों करे, भज ले श्रीरघुबीर।।

तन पवित्र सेवा किये धन पवित्र किये दान।
मन पवित्र हरि भजन से होत त्रिविध कल्याण।।

चार वेद षट शास्त्र में, बात मिली है दोय।
दुख दीने दुख होत है, सुख दीने सुख होय।।
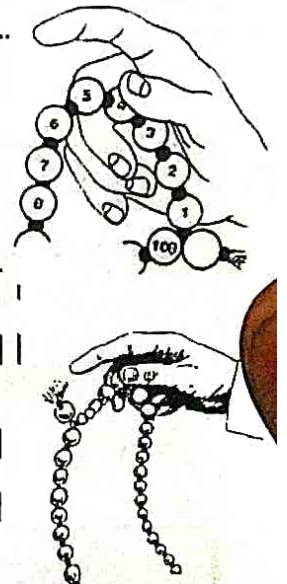
माँ भद्रकाली ज्योतिष संस्थान

1/1, आलापुरा, बागड़ी कॉम्प्लेक्स, जूनी इन्दौर, इन्दौर
email : shivkumar.panditji@gmail.com
M. 98263-61811, 9644108108

पं. शिवकुमार भारद्वाज
एम. ए. संस्कृत (क्लासिक)
卐 ज्योतिष, कर्मकाण्ड एवं वास्तु 卐

पूजन-हवन सामग्री

कुंकुम्	मखाना	कपूर कांचरी	ब्लाऊज पीस	शंख
अबीर	मिश्री	जटा मासी		अभिषेक पात्र
गुलाल	शहद	छाल छबिला	रूमाल	✻ सराफा ✻
हल्दी	शक्कर	जायफल	दरी	चाँदी की मूर्ति
मेहंदी	गुड़	सूखा बिल्व	आसन	सोने की मूर्ति
सिन्दूर	खोपरा गोला	भोजपत्र	नेपकीन	वास्तु मूर्ति
अष्टगंध	शुद्ध घी	जावित्री	चादर	ध्रुव मूर्ति
भस्म	ऑवला	चन्दनबुरा	गोमुखी	कच्छप
केशर	सौंठ	चन्दन लकड़ी	✻ श्रृंगार ✻	नाग-नागिन जोड़ा
इत्र शीशी	सिंगाड़ा	धूप पुड़ा	काँच	सुवर्ण सलाका
नाड़ा आटी	खड़ा धनिया	कालीमिर्च	कंघी	चाँदी का तार
जनेऊ जोड़ा	नमक	चन्दन माला	तेल शीशी	बिछिया
अगरबत्ती	चमेली तेल	✻ वस्त्र ✻	कुंकु डिबिया	पायल
धूपबत्ती	मीठा तेल	लाल कपड़ा	चूड़ी	मंगलसूत्र
रूईबत्ती	सेंव	सफेद कपड़ा	बिन्दी	चाँदी का सिक्का
देशी कपूर	पापड़	पीला कपड़ा	काजल	चाँदी का छत्र
माचिस	खड़ी हल्दी	काला कपड़ा	फीता	**समिधा (लकड़ी)**
पीली सरसों	गेहूँ	नीला कपड़ा	✻ बर्तन ✻	आँकड़ा
श्रीफल	चांवल	पचरंगा झंडा	ताँबे के लौटे	पलाश
कच्चा सूत	खड़े मूँग	ध्वजा	ताँबे का घड़ा	खैर
नागफनी कील	खड़े उड़द	पताका	तरवाना	आंदिझाड़ा
लौंग	चना दाल	तोरण	तामन	पीपल
इलायची	मसूर दाल	चुनरी	आचमनी	गूलर
बड़ी सुपारी	मोंगर दाल	धोती	पंचपात्र	शमी
छोटी सुपारी	जौ (जव)	कुर्ता	काँसे की थाली	दूर्वा
खारक	काला तिल	बनियान	थाली	कुशा
बादाम बीजी	सफेद तिल	शाल	कटोरी	आम की लकडी
काजू	कमल गट्टे	कम्बल	पीतल तपेली	अमर बेल
किशमिश	गुगल (भैंसा)	शोला	दीपक	उपले (कण्डे)
चारौली	अगर तगर	दुपट्टा	घण्टी	झण्डी की लकडी
पिस्ता	नागर मोथा	गमछा	आरती	
अंजीर		साड़ी	बाल्टी	

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं, विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं, वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।

※ पत्ते ※

पान के पत्ते
तुलसी के पत्ते
आम के पत्ते
बिल्व के पत्ते
पीपल के पत्ते
बड़ के पत्ते
जामुन के पत्ते
अशोक के पत्ते
पालक के पत्ते
भांग
धतूरा
आँकड़ा फूल

※ फल ※

आम
अंगूर
सेवफल
अनार
केला
संतरा
सीताफल
बेर
चीकू
नींबू देशी
नींबू बिजौरा
भूरा कद्दू

अन्य सामग्री

मिठाई
दूध
दही
गंगाजल
गौमूत्र
गोबर
फूल
फूल माला
गन्ना
अदरक
खीर
हलवा
दोना गड्डी
पत्तल गड्डी
ईंट
बालूरेत
मिट्टी
मिट्टी का करवा
मिट्टी के दीपक
लाल गेरू
काला रंग
पुताई का चूना

※ घर का सामान ※

चौकी (पाटा)
थाली
लोटा
कटोरी
चम्मच
शुद्ध जल
कैंची
भगवान
फोटो
परात
गठजोड़ा का कपड़ा
आटे के दीपक
खड़ग (चाकू)
हवन पात्र
गैस टंकी
चूल्हा

दिन का चौघड़िया

प्रातः समय	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
६ से	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
७।। से	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
९ से	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
१०।। से	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
१२ से	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
१।। से	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
३ से	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
४।। से	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

विशेष नोट : लाभ, अमृत, शुभ, चर उत्तम चौघड़ियाँ होती हैं।

रात का चौघड़िया

सायं समय	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
६ से	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
७।। से	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
९ से	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
१०।। से	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
१२ से	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
१।। से	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
३ से	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
४।। से	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

ॐ सम्पूर्ण कुम्भो न करोति शब्दमर्द्धो घटो घोषमुपैति नूनम्।
विद्वान् कुलीनो न करोति गर्वं गुणैर्विहीना बहु जल्पयन्ति।।

राम नाम कीर्तन

रसना पै राम राम श्रवणों में राम राम, अर्चा में राम राम, चर्चा में राम राम।
सोते में राम राम, जगते में राम राम, सपने में राम राम, अपने में राम राम।।
चलते में राम राम, बैठे तो राम राम, निर्जन में राम राम, बहुजन में राम राम।
सुख में भी राम राम, दुःख में भी राम राम, 'हरीदास' अष्टयाम राम राम राम राम।।

हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे।।
जिह्वाग्रे वसते यस्य हरिरित्यक्षर द्वयम्। स विष्णुलोकमाप्नोति पुनरावृत्ति दुर्लभम्।।
नाम संकीर्तनं यस्य सर्वपाप प्रणाशनम्। प्रणामो दुःख शमनस्तं नमामि हरिं परम्।।

क्षणभंगुर जीवन की कलिका, कल प्रात को जाने खिली न खिली,
मलयाचल की शुचि शीतल मन्द, सुगन्ध समीर चली न चली।
कलि काल कुठार लिए फिरता, तन नम्र सी चोट झिली न झिली,
रट ले हरि नाम अरी रसना फिर अन्त समय में हिली न हिली।।

प्रार्थना - कर्म मया कृतं तत् कालहीनं भक्तिहीनं शक्तिहीनं
श्रद्धाहीनं च भवतां ब्राह्मणानां प्रसादात् सर्वं परिपूर्णं अस्तु, अस्तु परिपूर्णम्।।

ज्योतिष, कर्मकाण्ड एवं वास्तु
हेड ऑ.: 1/1, आलापुरा, बागड़ी कॉम्प्लेक्स, जूनी इन्दौर, इन्दौर
email : shivkumar.panditji@gmail.com

शान्ति तुल्यं तपो नास्ति न संतोषात्परं सुखम्। न तृष्णायाः परो व्याधिः न च धर्मो दयासमः।।
छोटे छोटे तर गये,राम भजन लवलीन। जाति के अभिमान से, डूबे सभी कुलीन।।
दीर्घ जीवन का नहीं, पवित्र जीवन का महत्व है।

।। हवन वेदी ।।
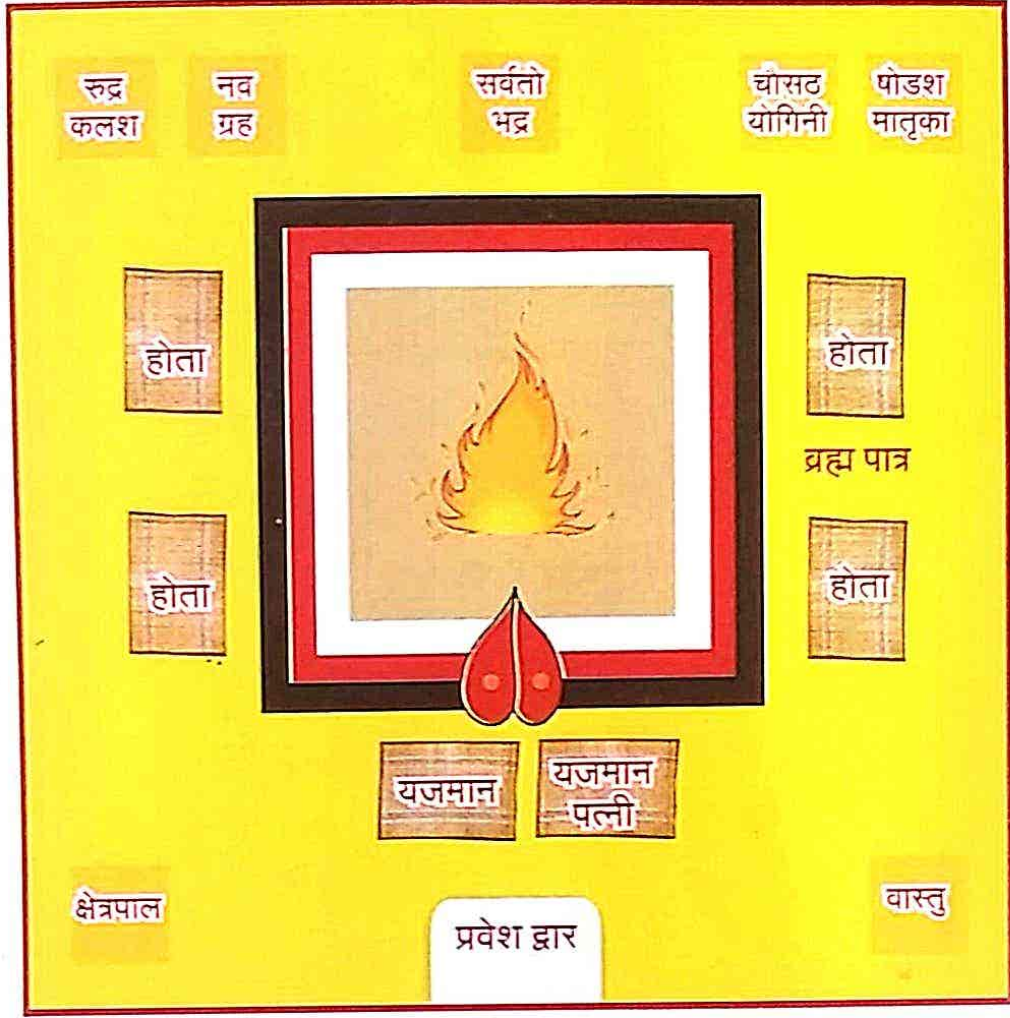
भगवान

भ–भूमि

ग–गगन

व–वायु

अ–अग्नि

न–नीर

पंचतत्व
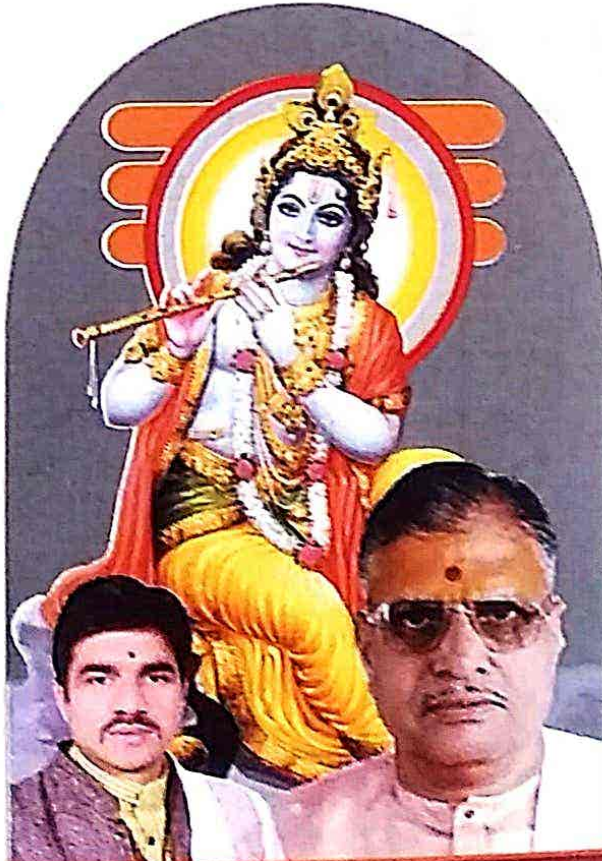
GOD

Generate

Operate

Destroy

बनाने वाला

पालने वाला

नष्ट करने वाला

नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तुते विप्र पदांबुजेभ्यः ॥

धर्मो रक्षति रक्षितः

''धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा''- इस श्रुतिवचन के अनुसार धर्म ही सम्पूर्ण जगत् का आधार है। धर्म के आधार पर ही समस्त मानव समाज प्रतिष्ठित है । धर्म का लोप कोई भी नहीं कर सकता है। धर्म ने ही मानव समाज को एकसूत्र में बाँध रखा है । धर्म के वाह्यरूप भले ही भिन्न-भिन्न प्रकार के हो सकते है, परन्तु सभी धर्मों का केन्द्रभूत मूलतत्व एकमात्र परमात्व तत्व ही है, जिसको केन्द्र मानकर समस्त धर्म प्रवृत्त हैं। सभी धर्मों में अपनी-अपनी विशेषता होती है और कुछ आदर्श भी होते हैं। ठीक इसी प्रकार से हमारे हिन्दू-धर्म में भी कुछ विशेषताएँ एवं आदर्श हैं । इनमें सभ्यता-संस्कृति, रीति-रिवाज, नीति-नियम, वेश-भूषा, रहन-सहन, भोजन-भजन, पूजा-पाठ, व्रत तथा त्यौहार आदि विशेष उल्लेख हैं।

इस सन्दर्भ में यहाँ लघु ग्रन्थ संग्रह **'पूजा कर्म प्रवेशिका'** सभी के कल्याण हेतु भूदेवों को समर्पित करता हूँ।

[illegible] कुलोत्पन्नः शिवकुमार पण्डितः ।
[illegible] देवी भक्ति परायणः ॥

"

नाहं वैदिक सर्वज्ञो न शास्त्रज्ञो न कर्मठः । तथापि स्वीयशाखायाः कर्म ज्ञाने समुत्सुकः ॥
पुत्रान् देहि धनं देहि सौभाग्यं देहि सुव्रते । अन्यांश्च सर्वकामांश्च देहि देवि नमोऽस्तुते ॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरी । **'पूजा कर्म प्रवेशिका'** परिपूर्णं तदस्तु मे ॥

"